



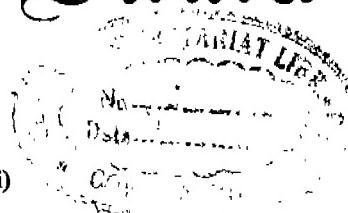
भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY



सं 712]
No. 712]

नई दिल्ली, सोमवार, दिसम्बर 9, 1996/अग्रहायण 18, 1918
NEW DELHI, MONDAY, DECEMBER 9, 1996/AGRAHAYANA 18, 1918

भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड

अधिसूचना

मुख्य, 9 दिसम्बर, 1996

भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (पारस्परिक निधि) विनियम, 1996

का.आ. 856 (अ).—भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड, भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड अधिनियम, 1992 (1992 का 15) की धारा 11 की उपधारा (2) के खंड (ग) के साथ पठित उसकी धारा 30 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए एतद्वारा निम्नलिखित विनियम बनाता है,
अर्थात् :—

प्रथा I

ग्राहिक

संक्षेप नम्, लगू होता
और प्रारंभ,

1. (1) इस विवरणों का संक्षेप नम् भास्तुते प्रांगणी और विवरण बोहं (पारस्पारिक शोध)
विनेमा, 1996 है।

(2) वे राज्यम् में उनके ग्रहण की तात्पुर का खूल हैं।

परिमापार

2. इन विवरणों में क्या तक कि सर्वम् में ज्ञात्या प्रारंभ न हो :-

(i) "आधिकार्य" में क्षत्रिय प्रांगणी और दिनदह दोहं प्रांगणम्, 1992 (1992 मा 15) संभित है;

(ii) 'विजाप्त' के अन्तर्गत विवरण इस फ़ाइल एवं सीमित है, वह इसी ग्रहण में ही, उन्नामो, मानो, तेबों या पौराणों, सूर्योगों या ग्रह दस्तावेजों के ग्रहण, जिन्होंने फ़ोटो फ़िल्मों की छातीनां डाया, घोने ग्रहण या देवीकिंच या ग्रन्थ फ़िल्मों जैसे संदर्भ में है।

(iii) 'सद्यता' में ऐसा वांछा संभित है -

(i) को प्रत्यक्ष या पांड स. में ज्यु डाया, या नामारों के साथ लेतह, आर्योग्य, प्राचीन ग्रन्थी या व्यासी एवं निकाश का ग्रन्थ रखता है, जबकि

(ii) जिसकी लक्षण प्राचीन ग्रन्थ जैसी या व्यासी, प्रत्यक्ष या पांड स. में, ज्यु डाया, या ग्रन्थ व्यासी के साथ लेतह, व्याक्याय विकाश का ग्रन्थ रखते हैं, जबकि

(iii) जिसका निवेशक, जो पैकड़ते थे संसदीय, ग्रामीण प्रबन्ध करने का निवेशक, जो एकात्मीय संसदीय है;

- (घ) 'ग्रामीण प्रबन्ध समझी' में संसदीय प्रविनियम, 1956 (1956 का 1) के अधीन कहाँ गई और लोकसभीकृत तथा बोर्ड द्वारा विनियम 21 के उप-विनियम (2) के अधीन इस हेस्तेजन में अनुमोदित करनी है;
- (इ.) "दसल" से भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (स्टॉक दलाल) विनियम, 1992 में क्या पारिमाणिक स्टॉक दलाल ग्रामिष्ठ है;
- (क) 'स्कूल समझी' से पारस्पारक नियम में कहाँ स्कौल ग्रामिष्ठ है जिसमें स्कौल की पारिमता ग्रामीण विनियमित है;
- (छ) "नियंत्रण" से ग्रामिष्ठ है -
- संसदीय की दणा में कोई व्यक्ति या व्यक्तियों का समूच्य जो सेसी कर्मी के 10% से अधिक प्रतिशत संख्याएँ का प्रबन्ध या परोक्ष रूप से स्वामी है, नियंत्रण करता है या उन्हें पारण करता है; या
 - दो शेषांशों के बीच में यदि वही व्यक्ति या व्यक्तियों का समूच्य देशों में से प्रत्येक कर्मी की 10% से अधिक प्रतिशत वहले शेषांशों का प्रबन्ध या परोक्ष रूप से स्वामी है, नियंत्रण करता है या उन्हें पारण करता है; या
 - जिसी संसदीय के निवेशकों की बहुसंख्या जो ग्रामीण प्रबन्ध समझी पर नियंत्रण करते की स्थिति में है।
- (क) "ग्रामिककर्म" से कह व्यक्ति ग्रामिष्ठ है, जिसे भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (प्रतिभूति ग्रामिककर्म) विनियम, 1996 के अधीन प्रतिभूतियों के ग्रामिककर्म का

कारबाह फरने के लिए एकलसीकरण प्रमाणपत्र प्रदान किया गया है;

- (५) "निषेपगार" से निषेपगार जारीनिया, 1996 (1996 मा 22) मेर प्राप्तारियांशु नियमित नियाय आधिकार हैं;
- (६) "गार्फ़ अपराध" मेर अपराध आधिकार है, जिसके लिए तत्सम्म गार्फ़ अपराध (आधिकारिक की परिसीमा) जारीनिया, 1974 (1974 मा 12) लागू होता है;
- (७) "बाँस आधिकारी" से ग्राह्य IX के अधीन बोई द्वारा ऐसी हैमेक में नियमित कोई व्यक्ति आधिकार है;
- (८) "ग्राह" से छहली अनुसूची में इस स्पष्ट में विविदिष्ट प्रकारों में से कोई आधिकार है;
- (९) इन विविधों के ग्राहकों के लिए "ग्राह" मा वही ग्राह है जो भारतीय संविधा जारीनिया, 1872 (1872 मा 9) में इसके लिए नियम है;
- (१०) "निरीक्षण आधिकारी" से ग्राह्य VIII के अधीन बोई द्वारा इस हैमेक से नियमित कोई व्यक्ति आधिकार है;
- (११) 'झा बाजार लिक्तों' के अन्तर्गत वाणिज्यिक घर, व्यापारिक हैडिंग, लकड़ा हैडिंग, एक वर्ष तक की जलमाल पारिमत्वा वाली सरकारी प्रतिकूलियां, गांग या नोटिस राशि, ज्ञान प्राप्ति, जावधीक बिल और भारतीय रेजर्व बैंक द्वारा सम्पर्क सम्बन्ध पर कोई अन्य व्यावाहीविविध लिक्त, ग्राह हैं;
- (१२) "झा बाजार पारस्तीक नियम" से किसी पारस्तीक नियम की एक संज्ञा आधिकार है, जो अनन्दः झा बाजार लिक्तों में विनियम फरने के उद्देश्य से गठित की गयी है;

- (७) "पारस्पारिक नीथि" से यहां बाजार द्वितीयों समेत प्रत्येकों में विनिधन करने के लिए, जबकि या बक्सा के एक प्रवास को एक या आधिक स्कोरों के समीन घटनाओं के विकल्प के माध्यम से भव बृद्धने के लिए चाहे के रूप में स्थानीय नीथि आमंत्रित है;
- (८) "प्रस्ताव प्रत्येक" से ऐसा कोई प्रत्येक आमंत्रित है, जिसके द्वारा एक पारस्पारिक नीथि स्कीम के घटनाओं के सम्बन्ध के लिए बक्सा को आमंत्रित करती है;
- (९) "स्थिरता स्कीम" से ऐसी पारस्पारिक नीथि की ऐसी स्कीम आमंत्रित है, जो प्रोजेक्ट के लिए कोई उचित विनिर्दिष्ट किये बिना विकल्प के लिए घटनाओं का प्रस्ताव फरती है;
- (१०) "नालोगार" से ऊपरी आधिकारिक, 1956 (1956 का 1) की खाता 6 में क्षमताएँ व्यक्त आमंत्रित हैं;
- (११) "स्कीम" से ऊपरी पारस्पारिक नीथि द्वारा स्थायी गयी कोई स्कीम आमंत्रित है;
- (१२) "मुद्रणी" से इन विनियोगों से उपकरण कोई मुद्रणी आमंत्रित है;
- (१३) "प्रतिशृद्धि विधि" मारकांश प्रतिशृद्धि और विनियोग गोई आधिकारिक, 1992 (1992 का 15), प्रतिशृद्धि संकिळा (विनियोग) आधिकारिक, 1956 (1956 का 42) और निष्क्रियागत आधिकारिक, 1996 (1996 का 22) उनके साथों सम्बद्ध तथा ऐसी ऊन्न विधियां जो सम्बन्ध सम्बन्ध पर आधिकारिक ही जा सकती हैं, आमंत्रित हैं;

- (म) "प्रायोक्ता" में कोई शर्त नहीं, ग्रंथने कर्त्ता करने वाला या किसी सत्र विधीक नियम के माध्यमिकार सामर्थीक नियम की स्थापना करता है, प्रीमियम है;
- (ग) "वासी" में ज्ञान वांचने प्राप्ति के बाहर भरके के लिए उनके लिए प्रायोक्ता के नियम की सफल चाल में लगा है प्राय वासी वस्तों पर वासी वस्ती के नियमक सम्मानित है;
- (घ) "युक्त" से एक स्कोर में इनधारकों का छिन जाप्राप्त है, जिसमें प्रायक युक्त एक स्कोर को प्राप्तियों में एक लोकालंज संग्रह का विनियोग करता है;
- (घ)(i) "युक्तपारक" से एक प्रायोक्ता नियम की एक मुद्रा में युनिट घरण करने वाले कोई व्यक्ति प्रीमियम है।

मूल्य II

पारस्परिक निधि का रोजस्टीकरण

**रोजस्टीकरण के लिए
ग्रावेन**

3. (1) पारस्परिक निधि के रोजस्टीकरण के लिए ग्रावेन प्रयोगक द्वारा प्रयोग के में भिन्न जाए।

**ग्रावेन के साथ ग्रावेन
फीस लोणी**

4. विनियम 3 के पार्यान रोजस्टीकरण के लिए प्रत्येक ग्रावेन के साथ दूसरी जनसुर्यों में या विनियोग उपलब्ध ग्रावेन फीस लोणी।

**ग्रावेन ज्ञेक्षणों के
अनुसार होणा**

5. कोई ग्रावेन जो मामी प्रकार से पृष्ठ रही है, नमूने के जाने का भागी होणा;

यह कि किसी ऐसे ग्रावेन को नमूने करने से पूर्व ग्रावेन को, बोर्ड द्वारा व्याविनियोग ऐसे स्थान के भीतर ऐसी औचारिकताएँ पूरी करने के लिए एक अवसर दिया जाए।

जानकारी देना

6. बोर्ड प्रयोगक से ऐसी और जानकारी वा स्थानकरण देने के लिए ज्ञेक्षण कर सकेगा जो उसे ज्ञानेत हो।

प्रक्रिया ग्रन्ति

7. रोजस्टीकरण घास्ता देने के प्रयोग के लिए, प्रयोगक को निम्नलिखित पूरा करना होगा,
अर्थात्:-

(क) प्रयोगक के पास स्वयं रिहला रिकहं और उसने सभी ऊबाल सद्विधारों में शामिल
और इंग्रजारी को साधारण ल्याति होनी चाही;

स्पष्टीकरण : इस अंड के प्रायोजन के लिए “स्वस्य फिल्टर रिकार्ड” का जर्म होमा के प्रायोजन

(i) वित्तीय सेवाओं में पांच वर्षों से अनुमति प्राप्ति के लिए व्यापार फरता रहा हो; और

(ii) ठीक पूर्वान्ती सभी पांच वर्षों में शुद्ध प्रिलियट भाग्यक है; और

(iii) ठीक पूर्वान्ती वर्ष में एक प्रिलियट ग्राहित प्रबंध रूपनी में प्रायोजन द्वारा उत्तीर्ण ग्राहक से आई है; और

(iv) पांचवें वर्ष सहित ठीक पूर्वान्ती पांच वर्षों में से तीन में फूल्हास, ब्याल और कर के लिए उत्पादन के बाद प्रायोजन को लाभ हुआ है।

(v) विद्युत पारस्परिक निधि के प्राप्ति में, ऐसी निधि एक नास के स्थान में है और नास विलेल बोर्ड द्वारा ग्राहीकरण किया गया है;

(vi) प्रायोजन ने ग्राहित प्रबंध रूपनी की शुद्ध प्रिलियट में स्थान से स्थान 40% का ग्राहक धारण करता है, एक प्रायोजन सम्मान जायेगा और इन विनियोगों में विनिर्दिष्ट प्रक्रिया मन्त्रालय द्वारा किया जाना आवश्यक होगा;

एवं इस के कोई व्यक्त या एक ग्राहित प्रबंध रूपनी की शुद्ध प्रिलियट का 40% का ग्राहक धारण करता है, एक प्रायोजन सम्मान जायेगा और इन विनियोगों में विनिर्दिष्ट प्रक्रिया मन्त्रालय द्वारा किया जाना आवश्यक होगा;

(vii) प्रायोजन या इसके नियोजनों में से कोई या पारस्परिक निधि द्वारा नियोजित किया जाने वाला प्रथम ग्राहक या दोषी स्थीर हो देता है या ऐसे प्रथम के लिए सिद्धांत स्थीर ठहराया गया है जिसमें नैतिक ग्राहक ग्रन्तीकारी है या किसी आधिक अधारपर का दोषी स्थीर पाया गया है।

(३.) पारस्परिक निधि के लिए न्यासियों के स्व में कार्य करने के लिए न्यासियों की विनियमों के अनुसार नियुक्ति ;

(४) पारस्परिक निधि के प्रबंधन और इन विनियमों के उपलब्धों के अनुसार ऐसी नियमों की स्थापना के प्रशालन के लिए मार्गित प्रबंध रूपीय की नियुक्ति;

(५) प्रतिभूतियों की आमदानी और आमदान के क्रियाकलाप करने के लिए, जैसा न्यासियों द्वारा गोष्ठीय किया जाए, आमदान की नियुक्ति ।

मानवन पर विचार .

8. बुड़े, मरीज जानकारी प्राप्त करने के पश्चात मानवन पर विनियम लगाया ।

रजिस्ट्रीकरण प्राप्त करना

9. बुड़े पारस्परिक निधि से रजिस्ट्रीकरण का मंत्रणा ग्रा दस्ती अनुमूलीय में व्यावरिणीविषय रजिस्ट्रीकरण प्राप्त करने पर मानवन को प्रत्यक्ष से में प्राप्तकरण प्रदान कर मंत्रणा ।

रजिस्ट्रीकरण के नियम
और रूपों

10. विनियम ९ के अधीन पारस्परिक निधि को विद्या या रजिस्ट्रीकरण नियमित नियमों और रूपों के प्रधारण होगा :-

(१) नाती, प्रायोगक, प्राप्ति प्रबंध रूपीय ग्रा आमदान के अनुसार इन विनियमों के उपलब्धों का गतन करेंगे;

(२) यदि बुड़े को इसे दी गई कोई जानकारी या विशेषियां प्राप्त या किसी तात्काल विनियम में विद्या या तो पारस्परिक निधि बुड़े को तुज जानकारी देंगे ;

(३) पारस्परिक निधि बुड़े को इसे प्रदान को यदि जानकारी या विशेषियां या, जो इसके द्वारा या रजिस्ट्रीकरण से महाधित है, किसी प्रबन्धणे फैलावन की जानकारी तुरन्त

देंगी ;

(घ) विनायकों और दूसरी झन्सी में अधिविनिर्दिष्ट फीस का संबंध ।

आवेदन नप्रभाव रखना ।

11. जहाँ प्रायोजक विनियम 7 में निर्दिष्ट पात्रता प्राप्तिहारों को पूरा नहीं करता है वहाँ बोर्ड आवेदन को नप्रभाव रख सकेगा और प्रायोजक को इसकी मूलना देगा ।

सेवा फीस का संबंध

12. एक पारस्पारिक निधि रचिस्त्रोकरण के वर्ष के बाद वहाँ वर्ष से प्रत्येक विलीय वर्ष के लिए दूसरी झन्सी में अधिविनिर्दिष्ट सेवा फीस का संबंध हर एक वर्ष को 15 प्रॉफे के फूले फ़रोगी ।

पात्र यह कि बोर्ड, विश्व के लिए कारणों से संबंध होने पर पारस्पारिक निधि को उस विलीय वर्ष के, जिससे सेवा फीस मंजूरी प्राप्त है, प्रारंभ से दो प्राप्त स्थान होने के फूले किसी मात्र सेवा फीस का संबंध रखने की झन्सा दे सकेगा ।

सेवा फीस का संबंध रखने
में असफलता

13. बोर्ड, ऐसी पारस्पारिक निधि को, जिसे सेवा फीस का संबंध नहीं किया है, कोई स्कॉर्प प्रारंभ करने की झन्सा नहीं दे सकेगा ।

अध्ययन III

पारस्परिक निधि का गठन तथा संबंध और नासियों आदि का प्रवक्तव्य

**नास किलेल रजिस्टरीकरण
आधिकार्य के ग्राहीन रजिस्टरीकरण
दिया जाता**

14. (1) पारस्परिक निधि एक नास के स्थ में गैले की जायेगी और नास की स्थिति भारतीय रजिस्टरीकरण आधिकार्य, 1988 (1988 सा 16) के उपर्योग के ग्राहीन सम्बन्ध से रजिस्टरीकरण किलेल के स्थ में होगी जो ऐसी लिङ्ग में नासिया नासियों के पक्ष में प्रश्नोचन द्वारा निष्पादित की जाएगी।

नास किलेल की अवधारणा

15. (1) नास किलेल में तीसरी अमुस्ची में व्यावरीय लंड अन्विष्ट होगे और ऐसे लंड होंगे जो शृंखलागतों के हिस्सों की सुधार करने के लिए ग्रावरक हैं।

(2) इसी भी नास किलेल में ऐसा लंड रही होगा जिसमा प्रभाव -

(i) इसी पारस्परिक निधि या शृंखलागतों के संबंध में नास की वाघताओं और दायितों को सीमित या निवारण करता है; या

(ii) नासियों या ग्राहीन प्रबंध करनी की शृंखला घारकों को उनकी उपेक्षा या करण शुद्धियों या लोगों द्वारा दृष्टि दानी या नुस्खान के लिए व्यक्तिगत रूप से दिया जाता है;

नासियों के स्थ में नियुक्त होने से निरहुआ

16. (1) पारस्परिक निधि इन विनियोगों के अनुसार नासियों को नियुक्त करेगी।

(2) व्यक्ति नासी के स्थ में नियुक्त के लिए केवल उभी पक्ष होगा यहि;

(क) वह योद्धा, सर्वानंदा और प्रतिष्ठा वाला व्यक्ति है; और

- (अ) भौतिक ग्राहका का दोषी नहीं पाया गया है; और
- (ब) किसी ग्राहिक ग्राहकाप वा किसी प्रतिश्रूति विधियों के ग्राहकगण का सिद्धांश नहीं पाया गया है; और
- (च) ग्राह ग्राम में ल्याविनीरेष विशेषियों दे दी हैं।
- (३) कोई ग्राहित प्रधान रूपनी या उसका कोई ग्राहिकारी या ग्राहिकारी किसी पारस्पारिक निधि के न्यासी के रूप में कार्य करने के लिए पत्र नहीं होगा।
- (४) कोई व्यक्ति जो किसी पारस्पारिक निधि के न्यासी के रूप में नियुक्त किया गया है, किसी ग्राह पारस्पारिक निधि के न्यासी के रूप में तब तक नियुक्त नहीं किया जा सकता, जब तक कि—
- (क) ऐसा व्यक्ति उप विनियम (५) में निर्दिष्ट स्वतंत्र न्यासी न हो; और
- (ख) ऐसी नियुक्ति के लिए उस पारस्पारिक निधि का विस्तर वह न्यासी है पूर्णप्राप्त ग्राह कर लिया गया है।
- (५) न्यासियों में से कम से कम ५०% स्वतंत्र व्यक्ति होंगे और कोई ऐसा न्यासी किसी भी रीति में प्रवेशक से सहज़ वा समझनी या सहज़त नहीं होगा।
- (६) यदि एक रूपनी ने न्यासी के रूप में नियुक्त किया जाता है, तो इसके निवेशक अथवा किसी न्यास के न्यासी के रूप में कार्य कर सकते हैं परन्तु वह तब जबकि न्यास का उद्देश्य पारस्पारिक निधि के उद्देश्य के विरोध में न हों।

न्यासी की नियुक्ति के लिए बोई का प्रमाणन

17. (१) किसी न्यासी की नियुक्ति ग्राहित ग्राम में या तत्परतात् किसी भी स्थाय बोई के पूर्णप्राप्त के बिना नहीं की जाएगी।

एवं वह और वह भोई नासी तामग्र देता है या सेवानिकृ देता है तो, बोई के पूर्णमाहेन से तीन महीनों की अवधि के प्रतीक एवं नये नासी की नियुक्ति की जायेगी।

- (2) किसी पारस्परिक निधि के विद्यमान नासी एवं नासी के रूप में कर्त्तव्य करने के लिए नासी कंपनी का गठन बोई के पूर्णमाहेन से कर सकते।

नासियों के अधिकार और वापरकार

18. (1) नासी और ग्राहित कंपनी बोई के पूर्णमाहेन से विनियम प्रबंध करार करेंगे।
- (2) विनियम प्रबंध करार में ऐसे छंड जैसे रोपी ग्रन्तीशी में वर्णित हैं और ऐसे ग्रन्त छंड जो विनियम करने के प्रयोजन के लिए ग्रावरक हैं; अंतिष्ठि देंगे।
- (3) नासियों को ग्राहित कंपनी से ऐसी बमतारी ग्राहित करने सा अधिकार होता जो नासियों द्वारा ग्रावरक समझी जाती है।
- (4) नासी फोई भी स्कॉपी ग्रावर करने से पहले वह सुनीरित करेंगे कि ग्राहित प्रबंध कंपनी -
- (क) के पास इसके समर्थक कार्यालय, संघवाहार कम्ब और लेता के लिए उपचाल प्रणाली तैयार है;
 - (ख) ने स्कॉपी(ओं) के लिए निधि प्रबंधक(ओं) को समिक्षित करते हुए सभी ग्रन्त कार्यक्रमों की नियुक्ति की है और उनकी नियुक्ति से 15 दिनों के प्रतीक, उनके बायोडाया प्रस्तुत किए हैं जिनमें रौक्षण्य अद्वता, नासियों के साथ प्रतिभूति बाजार में पिछला ग्रन्त प्रबंधित होते;
 - (ग) ने इसके लेतों के लेता-परीक्षण के लिए लेता परीक्षक नियुक्त किए हैं;
 - (घ) ने विनियमक ग्राहिताओं के पास और विनियमकरताओं की शिक्षणों के सामाप्ति के लिए ग्रन्तप्राप्त ग्राहितारी की नियुक्ति की है;
 - (ङ.) ने रोक्स्ट्रार नियुक्त किए हैं और उनके एवं लेता-परीक्षण के लिए मानदंड ग्राहितारी किए हैं;
 - (क) ने ग्रन्तप्राप्त नियम-पुस्तका लेता भी है और ग्रावरिक लेता-परीक्षण प्रणाली सहित

ग्रामीण निकाय कंत्र परिकल्पना किए हैं ;

(७) दलालों और विषय संघों से मैलित करने के लिए ग्रामीण विनियोग किए हैं ।

(८) नासी सुनीरित करेंगे कि ग्रामीण कंपनी दलालों से मैलित करने, दलालों के साथ प्रतिभूति संबंधित का अनुशवास करने और किसी दलाल के साथ जाखार के अनुशवास संकेतण को दूर करने में तक्षण है ।

(९) नासी सुनीरित करेंगे कि ग्रामीण कंपनी ने किसी भी सदस्यसंघ को अनुभित या गङ्गजु तथा नहीं किया है या ग्रामीण कंपनी के किसी भी सदस्यसंघ के साथ किसी भी रीति में ऐसा बौद्धार नहीं किया है, जो धूमधारकों के डित के लिए डायिकर है ।

(१०) नासी यह सुनीरित करेंगे कि ग्रामीण कंपनी द्वारा किए गए संबंधित इन विनियोगों और स्कॉल के अनुसार हैं ।

(११) नासी सुनीरित करेंगे कि ग्रामीण कंपनी अन्य क्रियाकलापों से स्वतंत्र हो कर पारस्पारिक निपि स्कॉलों का प्रबंध करती रही है और यह सुनीरित करने के लिए पर्याप्त कदम उठाये हैं कि एक स्कॉल के विनियोगकर्ताओं के द्वितीय का अन्य किसी स्कॉल या ग्रामीण कंपनी के अन्य क्रियाकलापों के साथ सम्पृष्ठि नहीं किया जा रहा है ।

(१२) नासी यह सुनीरित करेंगे कि ग्रामीण कंपनी के सभी क्रियाकलाप इन विनियोगों के अनुबंधों के अनुसार हैं ।

(१३) जहाँ नासी के पास यह विवास करने का कारण है कि पारस्पारिक निपि के जाखार का संचालन इन विनियोगों और स्कॉल के अनुसार नहीं है वहाँ वे तुरंत ऐसे उपचारी उपाय करेंगे जो उनके द्वारा मानवक हैं और ग्रामीण कंपनी और उनके द्वारा की गई कार्रवाई की सूचना बोर्ड को तत्काल देंगे ।

(11) प्रत्येक न्यासी प्रतिमूर्तियों में उसमें भारिताओं के और ग्रन्थार्थक आधार पर न्यास के पास इकलौतुनी फ़रंगी ।

(12) न्यासी सबोधन स्कॉलों की संस्कृत के लिए उत्तरदायी और उसके अधिकारी होंगे और इसे इन विनियाओं और न्यास विलेज के उच्चारणों के मनसार यूनिट भारकों के फ़ावड़े के लिए न्यास में धारण करेंगे ।

(13) न्यासी यह सुनिश्चित करने के लिए ऊदय उठाकों कि पारस्परिक निधि के संबंधार न्यास विलेज के उच्चारणों के मनसार हैं ।

(14) न्यासी पारस्परिक निधि को संकल्प की जगते के लिए शोध किसी ग्राम की और इन विनियाओं और न्यास विलेज के मनसार किसी स्कॉल के यूनिट भारकों के लिए पारस्परिक निधि में प्राप्त किसी ग्राम की भी संभाषा के लिए उत्तरदायी होंगे ।

(15) न्यासी यूनिट भारकों की सहायता प्राप्त करेंगे -

- (क) जब कमी यूनिट भारकों के हित में बोर्ड द्वारा ऐसा करना अनिवार्य हो ; या
- (ख) जब कमी किसी स्कॉल के तीन चौथाई यूनिट भारकों द्वारा की गयी अधिकैश पर ऐसा करना अनिवार्य हो जाए ; या
- (ग) जब न्यासीयों की बहुसंख्या पारस्परिक या यूनिटों का सम्बन्ध गोल्ड करने का विनियरण करती है ; या
- (घ) जब किसी स्कॉल के प्रत्यक्ष गुणों में या न्यास या संसेच शुल्क और व्यय में या मन्त्र कोई परिवर्तन जो स्कॉल को उपर्योगित कर देगा या यूनिट भारकों के हित से प्रभावित करेगा, करने का प्रस्ताव किया गया है जब तक कि यूनिट भारकों के तीन चौथाई से अन्य की सहायता प्राप्त नहीं कर ली गई हो ।

परंतु यह कि ऐसा कोई परिवर्तन तक नहीं किया जाणा जब तक कि तीन चौथाई यूनिट भारकों ने सहायता न दे दी हो और यूनिट भारक जो ग्रामी सहायता नहीं देते हैं उन्हें स्कॉल में उनकी भारिताओं के गोल्ड की अनुसारी ही गयी है ।

स्थान: इस लाइ के प्रत्येकों के लिए "मूलभूत गुणों" से संबंधित विविधता उद्देश्य और शर्तें अधिसूचित हैं।

(16) नासी आस्ति प्रांथ रूपी के मुख्य सामग्रियों से प्रतिभूतियों में उसके जन्म नम्र में या आस्ति प्रांथ रूपी की ओर से संबंधितों के बारे मालिकों और जब वही ऐसा ग्राहित हो, तो बोई को लिखें करें।

(17) नासी पारस्परिक निधि, आस्ति प्रांथ रूपी और इसके सदस्यों के बीच निषादित सभी संबंधितों का आयासिक मुक्तिलोकन करें।

(18) नासी आस्ति प्रांथ रूपी की एहत ग्राहितवाद का निरंतर मुक्तिलोकन करें और कोई कमी होने की दशा में, सुनीरक रूपी को आस्ति प्रांथ रूपी विविध 21 के उप विविध (1) के लिए (v) के अनुसार वही को पूरा करें।

(19) नासी सातिलदः: सभी सेवा संस्कारों जैसे कि आमिरका व्यवस्या, प्रतिभूतियों की आंतरिक प्रांथिकरण का मुक्तिलोकन करें और उसना समाधान करें कि ऐसी संस्कारें वृनिधारकों के हित में निषादित की जाती हैं।

(20) नासी सुनीरक रूपी को आस्ति प्रांथ रूपी द्वारा इसके एहत ग्राहितवाद के आमिनियोक्ता की रीति और वृनिधारकों के हित के बीच हित में कोई विरोध नहीं है।

(21) नासी विविधस्तरियों की प्राप्त शिक्षाओं और आस्ति प्रांथ रूपी द्वारा उनके समाधान का कालिकरः मुक्तिलोकन करें।

(22) आपै एक्सी अनुसूची में खाविनिदित ग्राहार संदिता द्वा पालन करें।

(23) नासी बोई को गुर्ध-वार्षिक ग्राहार पर प्रस्तुत करें -

- (क) पारस्परिक निधि के क्रियाकलापों पर एक रिपोर्ट ;
- (ब) एक ग्राम्यकालीन रूप करते हुए कि नायिकों ने अपना स्थान कर दिया कि किसी नायिकी, निवेशक और आमित ग्रांप उपर्युक्ती के मध्य कार्रवाई द्वारा स्व-बोह़ेमिया का प्रतिस्पर्धा करने के कोई दृष्टिकोण नहीं हैं ;
- (च) इस ग्राम्य का ग्राम्यकालीन ग्रांप उपर्युक्ती में किन्हीं क्रियाकलापों से स्वतंत्र रहकर स्फीटों का ग्रांप रह रही है और यदि विनियम 24 के उप-विनियम (2) में निर्दिष्ट स्वयं का कोई क्रियाकलाप आमित ग्रांप उपर्युक्ती द्वारा किये गये हैं और वह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त कदम उठाये हैं कि बैनर भारत के लिए संरक्षित हैं ।

मुख्य चौथा

ग्रांस्त प्रबंध कमी और ग्रांप्रदेश का पत्र और फ़िल्म

**ग्रांस्त प्रबंध कमी द्वारा
प्रावेदन —**

19. (1) ग्रांस्त प्रबंध कमी के मुद्राप्रदेश के लिए ग्रांकरन पत्र पर में किया जाया।
- (2) विनियम 5, 6 और 8 के उपर्युक्त उप-विनियम (1) के अधीन फ़िर पत्र प्रावेदन पर जहाँ तक हो, उसी प्रकार ताण द्वारा जिस प्रकार वे पारस्परिक नियंत्रण के अंतर्दीकरण के लिए प्रावेदन पर ताण होते हैं।
20. (1) ग्रांस्त प्रबंध कमी, यदि यास बिलेल द्वारा इस प्रकार ग्रांप्रदेश किया जाए तो, यासी, एक ग्रांस्त प्रबंध कमी की नियमित रूप से, जिस बोहे द्वारा विनियम 21 के उप-विनियम (2) के अधीन मुद्राप्रदेश किया गया है।
- (2) ग्रांस्त प्रबंध कमी की नियमित न्यायिकों को बहुसंख्या द्वारा या स्कॉप के शुद्ध भास्को के प्रबलतर प्रावेदन द्वारा समाप्त की जा सकती है।
- (3) ग्रांस्त प्रबंध कमी की नियमित में कोई परिवर्तन बोहे और शुद्ध भास्को के शुद्ध मुद्राप्रदेश के अधीन होता है।
21. (1) ग्रांस्त प्रबंध कमी का मुद्राप्रदेश दिए जाने के लिए ग्रांप्रदेश को नियन्त्रित पूरा करना होता :-
- (क) यदि ग्रांस्त प्रबंध कमी एक विद्यास ग्रांस्त प्रबंध कमी है तो इसका स्वयं फिल्टर रिकॉर्ड, संघवहारों में साधारण ल्याति और ग्रैंडिट रहा है;

स्पष्टीकरण : इस लंड के प्रोजेक्ट के तिर स्वस्य पिलो रिफर्ड से ग्राहित प्रबंध कंपनी की शुद्ध प्रिलूक्षण और नाम्यता ग्राहित होगी।

- (a) ग्राहित प्रबंध कंपनी के नियोजक एसे व्यक्ति हैं जिन्हें वित्त और वित्तीय सेवाओं से संबंधित क्षेत्र में प्राचीन वृत्तिक ज्ञान है और नीतिक अध्ययन का दोषी या किसी आर्थिक अवाधि का या किसी प्रतिभूति विधियों के प्रतिक्रिया का सिद्धांत नहीं पाया गया है।
 - (b) ग्राहित प्रबंध कंपनी के मूल कार्यक्रम किसी ग्राहित प्रबंध कंपनी या पारस्परिक निधि या किसी अध्यक्षी के तिर कार्य न कर रहे हों जिसके रक्षणात्मक रूप से किसी साध्य बोर्ड द्वारा नियंत्रण या खद्दरण किया गया हो।
 - (c) ऐसी ग्राहित प्रबंध कंपनी के नियोजक बोर्ड में ज्ञान प्रतिरक्षण नियोजक एसे हैं जो प्रशोङ्क या उसके सम्बन्धीयों या न्यासियों में से किसी के सहयोग या उनसे किसी भी रीति में सहयोग नहीं है;
 - (d.) ग्राहित प्रबंध कंपनी का अध्यक्ष किसी पारस्परिक निधि का नामी नहीं है;
 - (e) ग्राहित प्रबंध कंपनी की शुद्ध प्रिलूक्षण दस करोड़ स्प्ये से अन्यत नहीं है ;
एतत् इह कि भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (पारस्परिक निधि) विनियम, 1993 के उपलब्धों के अधीन इह ही अन्योनित ग्राहित प्रबंध कंपनी ज्ञ विनियमों की अधिकृता जी तारीख से बाहु छहमीट की अवधि के भीतर इसकी शुद्ध प्रिलूक्षण दस करोड़ स्प्ये तक बढ़ा लेगी।
- स्पष्टीकरण : इस लंड के प्रोजेक्टों के तिर “शुद्ध प्रिलूक्षण” से कंपनी की समाजत पूँजी और उनी आर्थिकियां ग्राहित होंगी।

(2) बोर्ड, उप-विनियम (1) में विनियमित प्राप्तियों के सर्वथ में ग्राहन पर विचार करने के बाद, ग्राहित प्रबंध कंपनी को अनुमोदन प्राप्ति कर सकता ।

नियम और इसे जिसका अनुपालन किया जाता है

22. विनियम 21 के उप-विनियम (2) के अधीन अनुदल अनुमोदन नियमोंका इसके प्रयोगीन होता, ग्राहित :-

- (क) ग्राहित प्रबंध कंपनी का कोई भी नियंत्रक किसी दूसरी ग्राहित प्रबंध कंपनी में नियंत्रक का पद धारण नहीं करेगा जब तक कि ऐसा व्यक्ति विनियम 21 के उप-विनियम (1) के बाणी (घ) में नियंत्र स्वतंत्र नियंत्रक न हो और ग्राहित प्रबंध कंपनी के बोर्ड का अनुमोदन, जिसका ऐसा व्यक्ति नियंत्रक है, प्राप्त न किया हो;
- (ख) ग्राहित प्रबंध कंपनी पहले दी गई जनकारी वा विशेषियों में, जो उसके द्वारा दिए गए अनुमोदन से संबंधित है, किसी ग्रहन्तव्य परिकल्पना की बोर्ड को तुरंत जनकारी देंगी;
- (ग) चासियों के एवं अनुमोदन के बिना ग्राहित प्रबंध कंपनी के किसी नियंत्रक की नियंत्रित नहीं की जायेगी;
- (घ) ग्राहित प्रबंध कंपनी इन विनियमों के अनुपालन का वर्ण देती है;
- (ङ.) ग्राहित प्रबंध कंपनी के नियंत्र द्वितीय में कोई परिवर्तन चासियों, बोर्ड और शृंखलाओं के एवं अनुमोदन से ही किया जायेगा ।
- (च) ग्राहित प्रबंध कंपनी चासियों को ऐसी जनकारी और दस्तावेज प्रेषणी लैसे और जब चासियों द्वारा अपेक्षित हो ;

प्रीलिया वहाँ अनुमोदन नहीं किया जाता है

23. जहाँ अनुमोदन दिए जाने के लिए विनियम 19 के अधीन आवेदन विनियम 21 में ग्राफिकल अपेक्षाओं को पूरा नहीं करता है वहाँ बोर्ड आवेदन को नामंत्रूर कर सकता ।

ग्राहित प्रबंध रूपी के
कारबाहर क्रियाकलाप पर
विवेदन

24. कोई भी ग्राहित प्रबंध रूपी -

(1) किसी पारस्परिक निधि के नामी के रूप में कार्य नहीं करेगी;

(2) प्रबंध सेवाओं, अप्रतीय निधियों, ऐशन निधियों, भविष्य निधियों, जोखिया और निधियों, बीमा निधियों के प्रबंध, वित्तीय परामर्शी कार्य तथा वाणिज्यिक ग्राहार पर असंबंधित के जाहाज-प्रवास जैसे स्वयं के क्रियाकलापों के सिवाए किसी भूत कारबाहर-क्रियाकलाप का जिम्मा नहीं लेती थी ऐसे क्रियाकलापों में से कोई क्रियाकलाप पारस्परिक निधि के क्रियाकलापों के विरोध में नहीं है,

एतु इह कि ग्राहित प्रबंध रूपी स्वयं वा इसके समनुचयीयों के माध्यम से ऐसे क्रियाकलापों का जिम्मा ले सकती, यदि इह कोई का सम्मान करती है कि ग्राहित प्रबंध रूपी के प्रश्न फ़ार्मिक, प्रणाली तथा समर्पक कार्यालय, लैंक तथा प्रतिभूति-लेवे क्रियाकलापवार अलग रखे गये हैं तथा विभिन्न क्रियाकलापों की अवश्य जानकारी तक छूट को रोकने के लिए प्रणालीकृत विद्युत हैं ।

एतु इह मौर कि ग्राहित प्रबंध रूपी ऐसे प्रत्येक क्रियाकलाप से अलग-अलग एवं पर्याप्तता अपेक्षाएँ, यदि कोई हो, पूरी करेगी मौर मूलगत विनियमों के मध्यम पृष्ठ अद्वितीय हो आवश्यक हो शास्त्र करेगी ।

(3) ग्राहित प्रबंध रूपी ग्राही किसी भी स्कॉर्पी में विनियम सही करेगी जब तक कि प्रस्ताव दस्तावेजों में इसके विनियम करने के ग्राहक का एवं प्रकठोकरण न कर दिया गया हो ।

एतु इह कि ग्राहित प्रबंध रूपी उस स्कॉर्पी में इसके विनियम पर कोई फ़ौम प्रभावित करने की छवाहर नहीं होती ।

- ग्रांड ब्रेक्सिट कमी और उसकी
वापसीरें**
25. (1) ग्रांड ब्रेक्सिट कमी के लिए सभी वैज्ञानिक उत्तरों और
सभी सशक्त विद्युत का ज्ञान कहाँ कि किसी स्क्रीन में सबैक्षण निर्धारों का
विवरण उन विनियोगों और व्यापक विनेश के उपर्योग के प्रतिकृत नहीं हैं।
- (2) ग्रांड ब्रेक्सिट कमी निवेश नियंत्रण में सशक्त विद्युत के साथसही
वापसीरें कि ऐसे जारीकरण में तो उन्हें योग्य योक्ताओं द्वारा बहुत जारी
- (3) ग्रांड ब्रेक्सिट कमी इसके स्पष्टात्मक या ऐसे व्यक्तियों द्वारा, जिनको सेवाएं ग्रांड
ब्रेक्सिट कमी द्वारा प्रभाव की गई हैं, उर्जा-श्रीदूषों और तोयों के लिए उल्लंघनों
द्वारा।
- (4) ग्रांड ब्रेक्सिट कमी व्यापियों को जल्दी वर्ष इसके लियावनारों पर प्रेरणा
विनियोगों के भविष्यत की तिमाही रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगी।
- (5) व्यापियों ग्रांड ब्रेक्सिट कमी के भविष्यत पर ग्रांड ब्रेक्सिट कमी का लक्षण्यात् किसी
भी सशक्त समाज कर सकें :
- परं यह कि ऐसी समांस तभी घटावी होंगी जब व्यापियों ने लक्षण्यात् का
समाज करना स्वीकार कर लिया हो और उनका विनियोग नियंत्रण में ग्रांड
ब्रेक्सिट कमी को समाप्त कर दिया हो।
- (6) किसी संवेदा या करार या पर्यवर्तन में किसी बात के दौरे हूर मी, ग्रांड ब्रेक्सिट
कमी या इसके निवेश या उन्हें आधिकारी ऐसी स्थिति या उन घाटे हूर
उनीं उर्जा-श्रीदूषों या तोयों के लिए पारम्परिक नियंत्रण के प्रति दृष्टिकोण से प्रकृत
नहीं होंगे।

- (7) कोई ग्राहित प्रबंध कंपनी ऐसे प्रशोलक वा ऐसी पर्याज जो पारस्परिक निधि के दैनिक संकलन साथार के 5% से ग्राहित के प्रशोलक का सदृश है, से सहमति किसी इताल के माध्यम से प्रतिशुलियों में बौद्धार नहीं करेगी ।
- (8) कोई ग्राहित प्रबंध कंपनी, किसी प्रतिशुलियों में संबद्धार और प्रतिशुलियों के विवरण और विवरण के प्रशोलक के लिए, प्रशोलक वा इसके किन्हीं सहयोगी, स्वामीराजों वा इनके संबंधियों की सेवाओं का उपयोग नहीं करेगी:

परन्तु यह कि एक ग्राहित प्रबंध कंपनी ऐसी सेवाओं का उपयोग कर सकती यदि यूनिट धारकों से उस आशय का प्रस्तुत किया गया है और इताली वा संकलन स्वामीराज का भी पारस्परिक निधि के ग्राह-वार्षिक वार्षिक लेनों में प्रकटीकरण किया गया है ।

- (9) ग्राहित प्रबंध कंपनी, ग्राहित प्रबंध कंपनी के मूल ऋणियों द्वारा उनके ऊपरे नाम में या ग्राहित प्रबंध कंपनी की ओर से, प्रतिशुलियों के संबद्धारों के विवरण चारिस्यों के पास फाइल करेगी और जब कमी बोई द्वारा ऊपरोक्त हो, बोई को भी सूचा देगी ।
- (10) यदि ग्राहित प्रबंध कंपनी इसके किन्हीं सहयोगी के साथ किसी प्रतिशुलियि में संबद्धारों को करती है तो चारिस्यों को इस आशय की एक रिपोर्ट तत्काल प्रेसी जारी ।
- (11) यदि किसी कंपनी ने एक स्टॉप के एक ग्राहित मूल्य के 5 प्रतिशत के ग्राहित्य में विनिधान किया है, तो उस कंपनी वा इसकी समनुवाचियों में उसी पारस्परिक निधि और उस स्टॉप द्वारा वा किसी भूत स्टॉप द्वारा किया गया विनिधान ग्राहित प्रबंध कंपनी द्वारा चारिस्यों की सूचा में लागा जाएगा और ऐसे विनिधान के लिए चारोंस्तर के साथ ऐसी स्टॉपों के ऊपरे-ऊपरे ग्राह-वार्षिक और वार्षिक लेनों में प्रकट किया जाएगा ।
- (12) ग्राहित प्रबंध कंपनी चारिस्यों और बोई को दाखिल करेगी :-

- (क) इसके सभी निशेहों के ऊपरे नियुक्ति के पंद्रह दिनों के प्रत्येक मूल झंडायियों में उनके छिल संक्षिप्त विस्तृत बायो-डाया; और

- (9) निवेशकों के हितों में कोई परिवर्तन प्रत्येक छह मास में ।
- (13) आंसू प्रबल समनी के निवेशकों की प्रतिमूलिकों में पारितात्पाता का एक विवरण प्रत्येक विलोद बंद की समाप्ति पर ऐसी प्रतिमूलिकों के प्रजनन की तरीखों सहित चाहियों के पास दर्जित किया जाए ।
- (14) आंसू प्रबल समनी कोई व्यापक ग्रूप कार्यक के स्थ में नियुक्त नहीं करेगी जो किसी गार्फिक अपराध का दोषी पाया गया हो या प्रतिमूलिक विधियों के प्रतिक्रिया में झँकड़ीत हो ।
- (15) आंसू प्रबल समनी रोजस्ट्रारों और शेयर अंतरण आंमलांगों को नियुक्त करेगी जो बोर्ड में रोजस्ट्रीकृत हैं ।
- परन्तु यदि यूनिटों के अंतरण से स्वीकृत कार्य को ग्राहकों स्थ से प्रसंस्कृत किया जाता है, प्रतियोगी बाजार दरों पर उभारों को स्कॉप को नष्ट डाला जाए और प्रतिस्पर्धात्मक बाजार से उच्चतर दरों के लिए, चाहियों का पूर्व झुग्गोदान आमिग्रात किया जाएगा और उच्चतर दरों प्रभावित करने के लिए कारण वार्षिक लेनों पर ग्रहण किए जाएं ।
- (16) आंसू प्रबल समनी पांचवीं झन्सूची में यथा विनियोग प्राप्त भांडता का पालन करेगी ।

आमिरक की नियमित

26. (1) पारस्परिक निधि, निधि सी स्कीमों के लिए आमिरकण सेवाएं करने के लिए एक आमिरक नियुक्त करेगी और बोर्ड को इसकी सच्चा आमिरक की नियमित के फँह दिनों के प्रतीक मेंगेगी ।
- (2) कोई आमिरक जिसमें प्रायोजक या इसके सहयूक्त, आमिरक की शेयर पूँजी के 50% या ग्रांफ़ क प्राप्तिकार रखते हैं या उन्हों आमिरक के 50% या ग्रांफ़ निवेशक प्रायोजक या इसके सहयूक्तों के हित का प्रतिनिधित्व करते हैं, उसी प्रायोजक या इसके किसी सहयूक्त या सम्बन्धी कमनी द्वारा गौठन पारस्परिक निधि के लिए आमिरक के स्थ में कार्य नहीं

करेगा ।

ग्रामीणक के समर्थन

27. पारस्पारिक निधि ग्रामीणक के समर्थन के लिए एक ग्रामीणक फूरार करें, जिसमें ऐसे ग्रह ग्रहवैद्य दृष्टि जो ग्रामीणक के कामकाज के दब्बे और व्यवीश्वसन संघरण के लिए ग्रामीणक हैं :

एंटु छ कि फूरार, सेवा संज्ञा, निष्पादन और ग्रामीणक की नियुक्ति व्यापारीयों के व्यवस्थापन से की जाएगी ।

अध्ययन V

पारस्परिक निधि की स्थिति

स्थिति को आंतरिक रूप से के लिए प्रतीक्षा 28. (1) आंतरिक व्यापक रूप से द्वारा कोई भी स्थिति तथा तक आंतरिक नहीं को जाणी जब तक कि ऐसी स्थिति न्यायिक द्वारा मनुष्योंका नहीं की जाती है और प्रस्ताव दस्तावेज की एक प्रति बोर्ड के पास दर्ताइल नहीं जो जाती है।

दाखिल करने की फॉर्म

(2) एंट्रेक पारस्परिक निधि फ़्लैट के प्रस्ताव दस्तावेज के साथ दूसरी मनुष्यों में या विनियोग दर्ताइल करने की फॉर्म का संबंध रखती है।

प्रस्ताव दस्तावेज में प्रस्तीकरण

29. (1) प्रस्ताव दस्तावेज में से से प्रस्तीकरण प्रतिविधि होती जो विनियोगकर्ताओं को सम्बोधित विनियोग करने के लिए, स्थान करने के लिए प्रयोग होती है।

(2) बोर्ड विनियोगकर्ताओं के छिपाने से प्रस्ताव दस्तावेज में से प्रस्तीकरण करने के लिए प्रयोग का सम्बोधन जो यह ठीक समाप्त हो।

(3) यदि बोर्ड द्वारा प्रस्ताव दस्तावेज में इसके दर्ताइल करने की तारीख से 21 दिनों के प्रीवी बोर्ड विनियोगकर्ताओं को समाप्त नहीं होते हैं, तो आंतरिक व्यापक रूप से प्रस्ताव दस्तावेज नियोगित कर सकती है।

विज्ञापन सम्बन्धी

30. (1) प्रस्तीक स्थिति को विज्ञापन बोर्डी मनुष्यों में या विनियोग विज्ञापन संघर्षों के अनुभव होने प्रति बोर्ड को विभिन्न की तारीख ने 7 दिनों के प्रते प्रकृति किए जाएं।

(2) प्रस्तीक स्थिति के लिए विज्ञापन विनियोग उद्देश्य, विनियोगों के मूल्यांकन जो ऐसे मात्र ग्राह्यपूर्ण, विभिन्न प्रांत विभिन्नों को दीर्घि प्रांत ग्राह्यपूर्ण प्रदर्श करें।

प्राप्ति रूप

31. प्रस्ताव दस्तावेज़ और विज्ञान सामग्री प्राप्ति नहीं होती या उसमें कोई ऐसा रूप या राय नहीं होती जो ग्रन्थ या गिया है ।

संकृत स्कौलों का सूचीकरण-

32. प्रत्येक संकृत स्कौल प्राप्तिमान के बदले से छह मास के भीतर एक ग्रन्थालय स्टॉक एस्टेज़ में सूचीबद्ध की जाएगी ।

परन्तु यह कि संकृत स्कौल का सूचीकरण ग्रन्थालय नहीं होता -

- (क) यदि जापानी सभी शून्यपाठकों को साध्य-साध्य पर पुःङ्ख सूचिया ऐसे पुःङ्ख प्राप्तिमान पर विशेषज्ञ के साथ, यदि कोई हो, उपलब्ध करती है; या
- (ख) यदि जापानी स्कौल प्राप्ति प्राप्ति के लिए उपलब्ध करती है या विशेष द्वारा कोई वरिष्ठ नामांकन, स्लिपों, बच्चों, विद्यार्थी या शारीरिक स्वर से निःशक्त या फ़िसी मी विशेष द्वारा कोई व्यक्तियों की शून्यों के नियमित उत्तरालों पर, पुःङ्ख का उपलब्ध करते हुए ग्रन्थालय पूरी करती है; या
- (ग) यदि ऐसी पुःङ्ख सूचिया के द्वारा प्रस्ताव दस्तावेज़ में प्रदृष्ट या से प्रदृष्ट किया गया है;
- (घ) यदि जापानी स्कौल प्राप्तिमान के बदले से छह मास की प्रवार्षिक के भीतर पुःङ्ख के लिए उत्तरालों हैं ।

संकृत स्कौलों का पुःङ्ख

33. (1) ग्राहित प्रबल द्वारा उपलब्ध कर सकते होने वाले स्कौल स्कौल द्वारा पुःङ्ख द्वारा गुरुर्भाषण कर सकते हैं ।

(2) संकृत स्कौलों की विनियम 32 के परामर्श में विरिट यूनिवेर्सिटी के बिना ही नियम वृन्दिपार्टीट अंतरालों पर वित्त या ग्रोव के लिए आवेदन ही जा सकती यदि यूनिवेर्सिटी के वित्त या ग्रोव की ग्राहितया और न्यूनत्व राशि और ऐसे वित्त या ग्रोव की ग्राहितया प्रस्ताव दस्तावेज़ में प्रस्तुत कर दिए गए हैं।

(3) संकृत स्कौल की यूनिवेर्सिटी को आकृत स्कौल में संचारित्व किया जा सकता -

(क) यदि ऐसी स्कौल का प्रस्ताव दस्तावेज़ वित्त या और ऐसे संचारित्व की ग्राहित करता है; या

(क) यूनिवेर्सिटी का बहुत उस ग्राहित की एक सहायता देता है।

(4) एक संकृत स्कौल परिषद्वारा ग्राहित की स्थापित पर तक तक पूर्ण मा से ग्रोव की जाणी यदि यूनिवेर्सिटी का बहुत संकृत पाठ्य रूपते हर इसके विस्तार के लिए अन्य विनियम न कर सके :

परन्तु यह कि विस्तार के लिए वित्त या न स्वीकारने वाले यूनिवेर्सिटी को स्कौल में उनकी भागिताओं का ग्रोव करने की अनुमति दी जाएगी।

प्रस्ताव करने की ग्राहित

34. इसी प्री इमेडी संख्या वाले स्कौलों की प्रस्ताव ग्राहित के विवाद पारस्परिक नीति की इसी स्कौल की प्रस्ताव करने की ग्राहित ग्राहित के लिए 45 दिनों से ग्राहित के लिए नहीं छुड़ायी।

यूनिवेर्सिटी का ग्राहित और भारतीयों के प्रतिवाप

35. (1) ग्राहित प्रबंध कमनी प्रस्ताव दस्तावेज़ में विनिर्दिष्ट करेगी, -

(क) न्यूनत्व ग्राहित राशि जो यह स्कौल के ग्राहित जूनां चाहती है; और

(३) ग्रन्थांकन के मामले में ग्रान्तिकर्ता संग्रह कहाँ तक उड़ गयी होते का संकेत :

यहाँ उड़ कि जहाँ ग्रान्ति प्राप्त करनी लड़ (ज) में निर्दिष्ट ग्रन्थांकन प्रतिवार्ता रहती है, जहाँ पांच हजार यूनिटों तक के ग्रान्तेन करने वाले सभी ग्रान्तेकों से उड़ (ज) में वर्णित ग्रन्थांकन के ग्रान्थधन पूर्ण ग्राहित किया जाएगा।

(२) पारस्पारिक निधि और ग्रान्ति प्राप्त करनी ग्रान्तेकों को ग्रान्तेन भना प्रतिवार्ता रहते के लिए दर्शी होगी, -

(i) यदि पारस्पारिक निधि, या विनियम (१) के लड़ (क) में निर्दिष्ट चूम्बक ग्रान्तिकर्ता राशि प्राप्त करने में ज़मीनत रहती है;

(ii) यदि यूनिटों के लिए ग्रान्तेकों से प्राप्त भवराइशर्व उप विनियम (१) के लड़ (क) में व्यानिर्दिष्ट ग्रान्तिकर्ता से ज़मीनक हैं।

(३) उप-विनियम (२) के ग्रान्थीन प्रतिवार्ता किसी राशि का ग्रान्तेकों से प्रतिवार्ता ग्रान्तिकर्ता सूची के बदल होने की तारीख से छह सप्ताह की ग्रान्तिकर्ता के भीतर, यसीं राजस्वीकृत डाक द्वारा और "ग्रान्तिकर्ता" से घिनांसित चैक ग्रांट द्वारा किया जाएगा।

(४) उप-विनियम (३) में विनिर्दिष्ट ग्रान्तिकर्ता के भीतर राशियों का प्रतिवार्ता करने में ज़मीनत रहने की दशा में, ग्रान्ति प्राप्त करनी ग्रान्तिकर्ता सूची के बदल होने की तारीख से छह सप्ताह की स्थानिय पर ग्रान्तेकों से प्रति वर्ष छह प्रतिवार्ता की दर से बाल का संबंध करने के लिए दर्शी होगी।

यूनिट प्राप्ति वा लेवा विवरण

36. ग्रान्ति प्राप्त करनी ग्रान्तेकों को जिसका ग्रान्तेन स्वीकार कर लिया गया है, खासगत शीघ्र मिस्र ग्रान्तिकर्ता सूची के बदल होने की तारीख से छह सप्ताह के अपर्याप्त ग्रान्तेकों को ग्रान्तिकर्ता की यही यूनिटों की संख्या को विनिर्दिष्ट रहते हुए यूनिट प्राप्ति वा लेवा विवरण जारी रखेगी।

परन्तु यह कि यदि कोई मार्केट सेवा इच्छा करता है, तो प्रांतीक ग्राम्य समिति प्रशासन के लिए मार्केट सी शोज के छठ मनाह के भीतर मार्केट को यूंट प्राप्त करनी चाही करेगी ।

यूनिटों का अंतरण

37. (1) जब तक स्कोप के मध्यमे प्रत्याया निर्धारित गा. यूंटोंमध्ये न किया जाए, एवं यूंट प्राप्ति ग्राम्य समिति के फल्गु द्वारा गा. विधि के प्रत्यंत द्वारा ग्राम्य स्थ में प्रतिष्ठित होगा ।

(2) प्रांतीक ग्राम्य समिति सुसंगत यूंट प्राप्ति ग्राम्यों सहित अंतरण सी लिख को प्रस्तुत करने पर, अंतरण को रोजहार करेंगे और यूंट प्राप्ति ग्राम्य को ऐसी उन्नति तरीका से तोम बिनों के भीतर अतिरिक्त को लौटा देंगे ।

परन्तु यह कि यदि यूंट निषेधार के पास हैं ऐसी यूनिटें भारतीय प्रतिभूति और विनियम बड़े (निषेधारा भी भूम्पाणी) विनियम, 1996 के अध्ययों के अनुसार प्रतिष्ठित होंगी ।

प्रत्यापूर्त प्रत्याप

38. स्कोप में प्रत्यापूर्त प्रत्याप उपर्योग नहीं किया जायेगा -

- जब तक कि स्कोप प्रत्येक या प्रांतीक ग्राम्य समिति द्वारा ग्राम्य स्थ में प्रत्यापूर्त न हो;
- जब तक कि प्रसाद दस्तावेज़ है, उस व्यंजन का नाम दर्शाने द्वारा जो प्रत्याप को प्रत्यापूर्त करेगा, विशेष न दिया गया हो;
- वीति जिस प्रकार प्रत्यापूर्त पूरी को जाश्नी, प्रसाद प्रत्येक में उल्लंघन की गई हो;

परिस्थान

39. (1) यूनिटों के प्रोजेक्ट पर स्कोप में निष्क्रिय कालावधि के स्थापन होने पर मनुष्ट स्कीम का परिस्थान का दिया जाणा यदि इसका विनियम 33 के ग्रन्ति-विनियम (4) के मध्यमे किसी ग्रांतीरक्त प्रवधि के लिए विस्तार न किया गया हो ।

(2) किसी पासपोर्ट निधि की कोई स्कॉम यूनिटपारकों को देख राशि का प्रतिसदाय करने के पश्चात् परिस्मान की जा सकती है। -

(3) किसी घटना के घटित होने पर जो, न्यासियों की राशि में, स्कॉम से परिस्मान किए जाने की झ़रेक्षा करती हो; या

(4) यदि किसी स्कॉम के पश्चात् प्रतिशत यूनिटपारक इह संकल्प पारित करते हैं कि स्कॉम परिस्मान कर दी जाए; या

(5) यदि बोर्ड यूनिटपारकों के छित्र में ऐसा निरेश देता है।

(3) जहाँ उप-विनियम (1) या उप-विनियम (2) के मुधोन किसी स्कॉम का परिस्मान किया जाता है, वहाँ न्यासों स्कॉम के परिस्मान में परिणाम होने वाली विरीस्यालियों को प्रदर्श करते हीर सूचा दें :-

(क) बोर्ड को; और

(ब) दो दैनिक समाचारज्ञों में जिनका संपूर्ण भारत में परिषोलन है, देरी भारा का एक ऐसा समाचारज्ञ जो उस स्थान परे परिचालित है जहाँ पारस्परिक निधि स्थापित है।

परिस्मान का व्याप

40. विनियम 39 के उप-विनियम (3) के अंत (क) के मुधोन प्रकाश की तारीख से ही, न्यासियों न्यासी या ग्राहित ग्रंथय रूपनी -

(क) इस प्रकार परिस्मान स्कॉम की बालक कोई काला क्रियाकलाप करना ले रहे हैं;

(ब) स्कॉम में यूनिटों की मृष्ट या उद्द करना ले कर रहे;

(ग) स्कॉम में यूनिटों का निर्गमन या मांसपक्ष करना ले कर रहे।

परिस्थापन की प्रक्रिया और रीति

41. (1) नासी, स्कॉप के परिस्थापन के लिए समय उठाने के लिए नासीयों या मिसी अथवा वीफिले से प्राप्ति करने के लिए आधिकारिक में उपर्युक्त और प्रत्यक्ष फरेक्सले वृनिधारकों के साधारण बृहत् द्वारा सम्भव को अनुमोदित करने के लिए वृनिधारकों का आधिकारिक दस्तावेज़ :

परंतु यह कि यदि स्कॉप, स्कॉप की परिस्थापना अवधि की समाप्ति पर परिस्थापन हो गई हो तो वृनिधारकों का आधिकारिक आवश्यक नहीं होगा ।

(2) (क) नासी या अधिकारिया (1) के ग्राहीन प्राप्ति क्षमता संबंधित स्कॉप की मासित्यों का व्यवहार, उस स्कॉप के वृनिधारकों के सभीकृत द्वितीय में फरणा ।

(क) अंड (क) के ग्राहीन विकल्प से बहुत किंतु गर ग्राहीयों का उपयोग इसके ऐसे वाक्यिकों के निर्विकल्प के लिए किया जाणा जो स्कॉप के ग्राहीन शोध और संदेश हैं और ऐसे परिस्थापन से संबंधित व्यवहार की पूर्ति करने के लिए उपर्युक्त उपचार फरने के परवान, ग्राहीयों का वृनिधारकों को स्कॉप की मासित्यों में उस तारीख से जब परिस्थापन के लिए विनियम किया गया था, उनके ऊपरे-ऊपरे द्वितीय के मन्त्रियात में संबंधित किया जाणा ।

(3) परिस्थापन के पूरा हो जाने पर, नासी बोर्ड और वृनिधारकों को परिस्थापन पर रिपोर्ट में जिसमें परिस्थापन में परिणाम होने वाली परीक्षायां, परिस्थापन के पूर्व निधि की मासित्यों के व्यवहार के लिए उठाए गए घटनाएं, परिस्थापन के लिए निधि के व्यवहार, वृनिधारकों को वितरण के लिए उपलब्ध शुद्ध मासित्यों और निधि के लेजा-परीक्षकों से प्राप्ति लेसी विवरियाँ होंगी ।

(4) इस विनियम में मिसी बत्त के हाते हूर मी, अर्ध-वार्षिक रिपोर्टों और वार्षिक रिपोर्टों के घटनाओं की बाबत इन विनियमों के उपर्युक्त व्यवहार का लाभ होना चाही रहेगा ।

स्कौल का परिस्थान

42. विनियम 41 के उप-विनियम (3) के अधीन शिष्टों को प्राप्ति के पश्चात्, यदि वहें का एह माध्यम हो जाता है कि स्कौल के परिस्थान के निए सभी उपयोग का अनुशासन कर दिया गया है, तो स्कौल आकृत्वहीन हो जाएगी।

संग्रह VI

विनियम उद्देश और पूर्वानु नीतियाँ

विनियम उद्देश

43. (1) किसी पारस्परिक निधि की किसी स्तरीय के अधीन संचालित भराईयों को बेल मुका बजार में या पूँजी बजार में ज्ञातरणीय प्रतिमूलियों में या निची मप से रखे गए डिब्बों या प्रतिमूल छाणों में विनियम किया जाए।

परं यह कि किसी पारस्परिक निधि की किसी मुका बजार स्तरीय के अधीन संचालित भराईयों को भारतीय रिक्वेट बैंक द्वारा जारी किए गए नियमों के अनुसार बेल मुका बजार लिङ्गों में विनियम किया जाए।

परं यह और कि प्रतिमूल छाणों के मापते में ऐसी निधि बंधक स्थापित प्रतिमूलियों को छोड़कर जास्त स्थापित प्रतिमूलियों में विनियम कर सकें।

विनियम, उधार, निर्बंध, ग्राहि

44. (1) विनियम 43 के अधीन किए जाने वाले कोई विनियम साक्षी अनुसूची में विनियमित विनियम निर्बंध के अनुधान विनियम किये जायें।

(2) पारस्परिक निधि, यूनिटों के फूँःस्य, ग्रेन या यूनिट धारकों को बाल या लभान के सदृश के प्रयोजन के लिए ग्रास्यादी चलनीधि ग्रावरयक्तताओं की पृष्ठ जलने के अलावा उधार नहीं लेंगी।

परं यह कि पारस्परिक निधि स्तरीय की रुद्ध ग्राहक के 20% से ग्राहिक उधार नहीं लेंगी और ऐसे एक उधार की अवधि छह मास की कालावधि से ग्राहिक नहीं होगी।

- (3) पारस्परिक निधि किसी भी ग्राहक के लिए कोई छण ग्राहित नहीं होगी।

विकल्प व्यापार, प्रादि

45. किसी स्कॉपी की नियमों का उल्लंघन किसी प्रकार में विकल्प व्यापार में एक अद्वितीय विकल्प का बदला स्थापित होने में नहीं किया जाएगा।

प्रतिशृद्धियों की हामीदारी

46. पारस्परिक नियमों, इसे हामीदारों के साथ में लिया जाता रखने के लिए पर्याप्त करने वाले भारतीय प्रतिशृद्धि प्रौद्योगिकी बोर्ड (हामीदा) नियम और भारतीय प्रतिशृद्धि प्रौद्योगिकी बोर्ड (हामीदा) विनियम, 1993 के नियमों के मुद्रासार रजिस्ट्रीकरण प्राप्ति वाले प्रतिशृद्धि करने के पश्चात हामीदारी करार कर सकेंगी।

सहायकरण : (1) इन विनियमों के प्रयोग के लिए, हामीदारी वाधिता से ऐसा समझा जाएगा जिसे कि ऐसों प्रतिशृद्धियों में विनियम किये गए हैं।

(2) हामीदारी के प्रयोग के लिए पूँजी पर्याप्तता ग्राहक स्कॉप की रुद्र ग्रान्ति द्वारा;

ऐसु यह कि किसी पारस्परिक नियम की हामीदारी वाय्या किसी भी समय स्कॉप के रुद्र रुद्र ग्रान्ति मूल्य से अधिक नहीं होती।

विनियमों के मूल्यांकन की रीति,

47. प्रत्येक पारस्परिक नियम जगते सांविधान में जगते विनियमों की संगता और मूल्यांकन करेगी और जारी समूच्छी में विनियोग मूल्यांकन सिन्द्हियों के मुद्रासार इसे प्रकाशित करेगी।

रुद्र ग्रान्ति मूल्य की संगता

48. (1) प्रत्येक पारस्परिक नियम हर एक स्कॉप के रुद्र ग्रान्ति मूल्य की संगता स्कॉप की रुद्र ग्रान्तियों को मूल्यांकन तरीके को बताया दीन्दों की संवय से विप्राचित करते हुए करेगी।

(2) स्कॉप के रुद्र ग्रान्ति मूल्य की संगता की जाणी और इसे एक संसाह से अनाधिक के अंतर्लालों पर मूल्य से अधिक दीन्दों स्थानांतरणों में प्रकाशित किया जाएगा।

एवं यह कि विशेष लक्षणों के लिए जिसी स्फीट ग्रा. डिसी.पी. द्वारा
विनियम 32 के मुधीने किसी स्टॉक प्रसंचय में सूचीबद्ध किया जाता ग्राहक स्थ. में प्रतीक्षित नहीं
है के शुल्क प्राप्ति मूल्य, ग्रामिक ग्रा. डिसी.पी. प्रतरातो पा. प्रकाशित किये जा सकेंगे जो बड़े
द्वारा अनुब्रात किए जाएं।

यूनिटों का मूल्य निर्धारण ।

49. (1) इस कांस्ट्रक्शन को जिस पर यूनिटों का ग्रामिक ग्रा. डिसी.पी. द्वारा इस कांस्ट्रक्शन
को जिस पर ऐसी यूनिटों का पारस्परिक निधि द्वारा जिसी परी सम्बन्धित किया जा
सकेगा, विनियोजित करने को उपकथ कराया जाएगा ।
- (2) पारस्परिक निधि, विकृत स्फीटों के मापदंड में, ग्रामित भारतीय परिचालन वाले जिसी
दीमक समावारण में ऊपर से क्या सकाह में एक छार, यूनिटों की विकृत ग्रा. डिसी.पी. मूल्य
स्फीट का प्रकाशन होंगी ।
- (3) यूनिटों की कांस्ट्रक्शन का अवधारण करने सम्बन्ध, पारस्परिक निधि सुनिश्चित करेंगी कि
जूःरूय स्फीट शुल्क प्राप्ति मूल्य के 93% से ऊपर नहीं है और विकृत स्फीट शुल्क प्राप्ति मूल्य के 107% से ऊपर नहीं है ।

एवं यह कि जिसी सकृत स्फीट की यूनिटों की जूःरूय स्फीट शुल्क प्राप्ति मूल्य के 95%
में निम्नतर नहीं होंगी :

एवं यह भी कि यूनिट की जूःरूय स्फीट भी विकृत कीमत के बीच प्रतर विकृत कीमत
पर सांख्यिक 7% से ऊपर नहीं होगा ।

- (4) यूनिटों की कीमत उप-विनियम (3) में द्या गई प्राप्ति अवधारण शुल्क प्राप्ति मूल्य के
संदर्भ में तब तक अवधारण नहीं की जाएगी जब तक कि,

(६) कोई भीक लघार पर यह प्राप्ति पूर्व दोषित हो फले हैं, मार-

(७) विक्रम काम, भासि एवं सामने पूर्ण में किसी नियम विवरण, जो उसे ही में
दोषित है, जो गङ्गाने द्वारा प्रधारण हो जाते हैं ।

प्रथा VII

सापारण वायवारं

**स्थानिक लेता बोहियां और आमतेज
आदि बनार रस्ता**

50. (1) इन संबद्धताओं को सदृश करने के लिए और किसी भी साध्य प्रयोक स्कीम की वित्तीय स्थिति को प्रदृश करने के लिए और विशेष म्य से निधि के उपलब्धता की स्थिति का सही और छलु लिये प्रस्तुत करने के लिए प्रयोक आस्ति प्रबंध कंपनी प्रयोक स्कीम के लिए स्थानिक लेता बोहियां, आमतेज और दस्तावेज रखेगी और उन्हें बनार रखेगी और बोर्ड को उस स्थान की सृजना होगी जहाँ ऐसी लेता बोहियां, आमतेज और दस्तावेज बनाए रखे जाते हैं।
- (2) प्रयोक आस्ति प्रबंध कंपनी दस वर्षों की अवधि के लिए इसकी लेता-बोहियो, आमतेजों और प्रत्येकों को बनार रखेगी और अनुरक्षण करेगी।
- (3) आस्ति प्रबंध कंपनी सुसम्मत लेता तारीख को निधि की आमतेजों के स्वीकार यथा और शूटिंगार को प्रोद्धमूर होने वाली ग्राम के वितरण या सचयन के बारे में जानकारी सटीक उस अवधि के दौरान कार्ब-नियावन के स्थानिक और छलु और सही रीति से प्रबंध करने के लिए नंबी प्रसूती में यथा विनियोग लेता नीतियों और मानकों का अनुसारण करेगी।

वित्तीय वर्ष ।

51. सभी स्कीमों के लिए वित्तीय वर्ष प्रयोक वर्ष के 31 मार्च से सामाजिक होगा :

यद्यु इह कि वित्तीय वर्ष के दौरान प्रायं हड्ड तई स्कीम के लिए, प्रकल्प और वित्तीय करने की अनुभाव सके ग्राम की तारीख से आगे होने वाली और मानामी वर्ष की 31 मार्च को समाप्त होने वाली ग्रामीय के लिए तात्प होगी।

**स्कीमों के नियम पर फीस और
व्यवस्था की संग्रही**

52. (1) सभी व्यवस्था, पृष्ठ-पृष्ठ स्कीमों में सदृश म्य से परिवर्तित और विनियोजित होने चाहिए।

(2) गोपनीय प्रबंध कमी पारम्परिक निधि पर निम्नलिखित के मुद्दोंविनियम गोपनीय प्रबंधकार कीस जो प्रस्ताव संस्करण में पृष्ठग्रन्थ की गयी है, प्रमारेत कर सकता, क्या :-

(i) संबंधित स्कॉप के लिए प्रत्येक लेना वर्ष में बकाया पासवाइक औसत शुल्क मानकियों से 1.25% ज्यादा कि शुल्क आमतयां रु. 100 करोड़ से ग्राहिक नहीं होती है, तो

(ii) रु. 100 करोड़ से ग्राहिक राशि का एक गोपनीय लहों ज्यादा प्रकार क्षमापन शुल्क मानकियां रु. 100 करोड़ से ग्राहिक होती हैं।

(3) ग्रामरीय ग्राधार पर ग्रामीण की स्कॉपों के लिए, गोपनीय प्रबंध कमी प्रत्येक वित्तीय वर्ष में बकाया साप्ताहिक औसत शुल्क मानकियों के 1% से ग्राहिक की गोतीरेत प्रबंध कीस एवं करने की छक्कार होती।

(4) अप-विनियम (2) में वर्णित कीस के ग्रामीकरण, गोपनीय प्रबंध कमी पारम्परिक निधि को निम्नलिखित व्यय से प्रमारेत कर सकती अवधि :-

(क) स्कॉपों को ग्रामीण करने के ग्रामीकरण व्यय।

(क्ल) ग्रामीणी व्यय जिसमें सम्मिलित है :-

(i) ग्रामीकर्ता की ग्रामीण, यदि कोई हो, साइल विषयन और विक्रय व्यय;

(ii) दत्तती और सचिवहार लाभ;

(iii) किसी वा गोपनीय ग्रन्थियों के ग्रांतण के तिर रीजस्ट्रर सेवाएं;

(iv) चार्चाओं की फीस और व्यय;

(v) लेजा-परीक्षा फीस;

(vi) प्रारंभक फीस; और

(vii) ऐसी जग्य तथांते जो बोर्ड द्वारा अनुमति हों।

(5) ३४-विनियम (2) प्रौर (4) में जो विनियोग से भिन्न कोई व्या प्राप्ति प्रबल रखनी द्वारा घासित होता :-

एक छ कि स्कॉल को चालू करने के प्रारंभिक व्या अस स्कॉल के अधिन ज़ाहर एवं प्रारंभिक संसाधनों के छह प्रतिशत से अधिक नहीं होते प्रौर ऐसे व्या जो इसाव स्कॉल को लेजा बोर्डों में रजा जायेगा जैसा कि उन्होंने अनुमति में विनियोग है।

(6) स्कॉल के कुल व्या, नियम द्वारा नियम द्वारा, वह प्राप्ति में पारस्पारिक नियम द्वारा घासित हो या आसित प्रबल संसाधनी द्वारा, किन् विनियोग प्रबल प्रौर सतहकार फोम को मैट्टरिन करने द्वारा नियन्त्रित संग्रहों के प्रयोगित होती :-

(i) आसित साकारात्मक शुद्ध सार्वतथों के इन्हे 100 करोड रुपये पर 2.5%

(ii) आसित साकारात्मक शुद्ध सार्वतथों के इन्हे 300 करोड रुपये पर 2.25%

(iii) आसित साकारात्मक शुद्ध सार्वतथों के इन्हे 300 करोड रुपये पर 2.0%

(iv) सार्वतथों के जातिरोप पर 1.75%

एक छ के ऐसे सार्वतथों व्या बोर्डों में विनियोग करने वाली किसी स्कॉल के बोर्ड में प्रत्येक किनारी वर्ष में बकाया साकारात्मक आसित शुद्ध सार्वतथों के कम से कम 0.25% में नियन्त्रा होती।

(7) ये विनियम (6) में विनिर्दिष्ट संघर्षों के प्राप्तिक्षय में कोई व्या प्राप्ति लक्ष्य स्पष्ट नहीं द्वारा घोरत किया जाएगा ।

(8) शास्त्रीयरूप नियमों की उन स्फूर्तियों के लिए जो उन विनियमों की प्राप्तिक्षय से बहुत प्राप्ति की जा चुकी हैं, ये विनियम (3), (4), (5) और (6) के शुल्क इन विनियमों की प्राप्तिक्षय की तारीख से तीन मास के बाद ग्रामीण होंगे ।

वार्षिक रिपोर्ट और ग्रामीणों का प्रेषण-

53. प्रत्येक पारस्परिक निधि और आस्ति शुल्क सम्पर्कीय ।

(क) यूनिटधारकों को लाभांश की प्रोष्ठा के 42 दिनों के प्रतीक्षा तारीख प्राप्तिक्षय को प्रोत्तेज रखेंगी ।

(ख) मोबाइल या फ़ूःफ़ू की तारीख में 10 कार्यविकासों के प्रतीक्षा मोबाइल या फ़ूःफ़ू ग्रामीणों को प्रोत्तेज करेंगी ।

वार्षिक रिपोर्ट ।

54. प्रत्येक पारस्परिक निधि या आस्ति शुल्क कंपनी प्रत्येक वित्तीय वर्ष के बारे में स्फूर्ति और निचे की वार्षिक रिपोर्ट और वार्षिक लेजा विवरण व्याहरणों मन्त्रसूची में विनिर्दिष्ट अनुसार तैयार करेंगी ।

लेजा-परीक्षक की रिपोर्ट

55. (1) प्रत्येक पारस्परिक निधि जगत् वार्षिक लेजा विवरण को ऐसे लेजा-परीक्षक जो आस्ति शुल्क सम्पर्कों के लेजा-परीक्षक से किसी भी प्रकार से संबद्ध नहीं हैं, द्वारा लेजा-परीक्षित करायेंगी ।

स्पष्टीकरण: इस ये-विनियम और विनियम 66 के प्रयोगों के लिए "लेजा-परीक्षक" से ऐसा व्यक्ति ग्रामीण है जो कमज़ोरी ग्रामीण, 1956 (1956 का 1) की धारा 224 के ग्रामीण सम्पर्कों के लेजाओं की लेजा-परीक्षा करने के लिए प्रार्थित है ।

(2) लेपारीक चास्तियों द्वारा नियम किया जाए ।

(3) लेपारीक अपनी रिपोर्ट चास्तियों को प्रेषण और ऐसी रिपोर्ट पारस्परिक निधि की वार्षिक रिपोर्ट का भाग होगी ।

(4) लेपारीक की रिपोर्ट में निम्नलिखित सामान्य होंगे, :-

(क) इस प्रयोग का प्रारूप कि :-

(i) उसने सभी जनकारी और स्पष्टीकरण आधिकार फर लिए हैं जो उसके महोत्तम जन और विवास के अनुसार, लेपा-परीक्षा के प्रयोजन के लिए प्रावधारण के;

(ii) तुलना और आवश्यकी लेता स्थीर, कानून की स्थिति और उस लेता अवधि के लिए जिससे, क्षारिता, तुलना या आवश्यकी लेता संबंधित है निधि में आधिकारण या घटे का सही और छल कि प्रकृत फरते हैं ;

(iii) लेता विवरण नवी अनुसूची में या विनिर्दिष्ट लेता नीतियों और प्रानकों के अनुसार तैयार किया गया है ।

वार्षिक रिपोर्ट और उसके सार का प्रकाशन

56. (1) पारस्परिक निधि की स्थिरवार रिपोर्ट या उसका संक्षिप्त मार क्षारण शोध किन सुन्दर लेता वर्ष के ब्ल हनी की तरीक से छह मास के प्रश्नात् विज्ञान के माध्यम से प्रकाशित किया जाए ।

(2) वार्षिक रिपोर्ट और उसके संक्षिप्त मार में ऐसे ब्लों जो याहाजों अनुसूची में विनिर्दिष्ट हैं और ऐसे अन्य ब्लों समाविष्ट होंगे जो पारस्परिक निधि की सांकेतिकों का सही और छल कि उपलब्ध करने के प्रयोजन के लिए प्रावधारण हैं ।

(3) रिपोर्ट यदि सार में प्रकाशित की गई है तो ऐसी रिपोर्ट में एक टिप्पण देना कि पूरी वार्षिक रिपोर्ट पारस्परिक निधि के ग्रधन कार्यालय में निरोक्षण के लिए उपलब्ध होगी और उसकी एक प्रति यूनिटभारक को ऐसी नियम फैस के संबंध पर उपलब्ध कराइ जाएगी जो पारस्परिक निधि द्वारा विनियोग की जाए ।

बोर्ड को भेजी जाने वाली वार्षिक रिपोर्ट 57. एक पारस्परिक निधि और प्रारंभ ग्रधन फैस के बारे होने वाली तारीख से छह मास के भीतर बोर्ड को यथावक रिपोर्ट की एक प्रति ज्ञान जानकारी जिसके प्रयोग विनियोगों के बारे और पारस्परिक निधि, द्वारा धारण ज्ञातागत भेजेगी ताकि पारस्परिक निधियों का संपूर्ण क्रमवार संबंध बोर्ड को प्रदर्श हो जाए ।

सार्वत्रिक और सकृदार प्रकल्प 58. (1) पारस्परिक निधि, प्रारंभ ग्रधन के लिए, यासी, प्राप्तिक, पारस्परिक निधि का प्रयोगक में प्रकल्प करने वाले सभी सकृदारों द्वारा उनसे जुँग भी जाए ।

(2) उप-विनियोग (1) की शाफ्ट्स और प्रोटोकॉल, ग्राम इलाके द्वारा, पारस्परिक निधि और जारी करने वाले बोर्ड को नियन्त्रित करने वाले, रिपोर्ट दें, ज्ञात :-

(क) नए में तेजारोड़ीज तेजामो के वार्षिक विवरणों की प्रत्येक जिसके प्रयोग निधि के लिए और प्रत्येक लोगों की वज़ा, कर्मचार और लाभ-हानि तेजामो कीमति है, जिस में एक शार;

(ख) आही सांसारिक तेजामो की एक ग्राह;

(ग) किंवदं जो प्रत्येक स्थान के लिए एक ग्राह ग्राहन्तरे में स्थानों का निष्ठा विवरण;

(घ) प्रत्येक स्थान के लिए, आही सांसारिक विवरण, जिसके जलवाया द्वारा स्थानों में प्रारक्षण सीमित है ।

(3) गरमारिक निधि की किसी भी शब्दों की वापसी वा प्रतिलिपि मर्मी जा विनीत तक नहीं की जाएगी जब तक कि इसके पाये वे स्थानों न हों वे विनियोगकर्ताओं के लिए एक समृद्धि विनियम निर्णय जाने के लिए उपलब्ध हों ।

गर्व-वार्षिक प्रकल्प

59. गरमारिक निधि प्रोग्राम अंतिम फ्रेंच स्ट्रेच वर्ष की सालीक ज्याति 31 दिसंबर 30 तितबा को, दो वर्षों की समयीन के पूर्व जारी भवित्वारीकृत विनीत परिषद्वारा, मध्ये वर्ष व वार्षिक दृष्टि वाले, एक शीर्षक प्रोजेक्ट समावाहन में प्रोग्राम को की जाने वाले के लिए वार्षिक निधि व व्यवस्था विधि वाले हैं, जिसमें व्यावधारणा में व्यावधारणा की वार्षिक

एवं यह कि इस यु-विनियम में विविध गर्व-वार्षिक भवित्वारीकृत विधिएं वे सभी व्यावधारणा में व्यावधारणा में विनीत दृष्टि हैं और सभी यारे समाविष्ट होने वाले वार्षिक निधि वी मानियाँ हैं। का यही फोटो स्लू विधि व्यवस्था वराने के प्रयोग के लिए उपलब्ध है ।

विनियोगकर्ताओं को प्रकल्प

60. यासी विनियोगकर्ताओं को ऐसे प्रकल्प देने के लिए उपलब्ध होने वाले उन्हें तोकी वार्षिक वितरण उनके विनेपानों पर प्रतिकूल प्रभाव हो सकता है, की वार्षिक सूचित दरने के लिए उपलब्ध हो ।

ग्रन्थ VIII

निरीक्षण और लेजा-परीक्षा

**वहें का निरीक्षण और अन्वेषण
करने का आधिकार**

61. (1) बोर्ड, पारस्पारिक निधि, न्यासियों और ग्रामीण प्रबंध संस्थाएँ द्वारा लेजा बोहियों, आमदाताओं, दस्तकेलों और भवसंरक्षा, प्रणालियों और प्रक्रियाओं का निरीक्षण करने के लिए या उनके सम्बन्ध में अन्वेषण करने के लिए निरीक्षण आधिकारी के स्थान में एक या आधिक वर्गों को नियमित रूप से विनियोजित किया जाएगा। अर्थात् :-
- क) छ सुनीरित रूपना कि पारस्पारिक निधि, न्यासियों और ग्रामीण प्रबंध संस्थाएँ द्वारा लेजा-बोहियों द्वारा विनियोजित रीति में बनाई रखी जा रही है;
 - (ख) छ ग्रामीनीरक्षा करना कि स्था पारस्पारिक निधि, न्यासियों और ग्रामीण प्रबंध संस्थाएँ द्वारा आधिकारियों द्वारा विनियोजित रीति में उपर्योग का पालन किया जा रहा है;
 - (ग) छ ग्रामीनीरक्षा करना कि स्था पारस्पारिक निधि द्वारा ग्रामीणी गई प्रणालियाँ, प्रक्रियाएँ और रक्षणात्मक पर्याप्ति हैं;
 - (घ) छ ग्रामीनीरक्षा करना कि स्था ग्रामीनीया या इसके अधीन बाहर गए किसी विनियोजित रीति के उपर्योग का ग्रामीण प्रबंध किया गया है;
 - (ङ.) विनियोजित रीति या किसी ग्रामीण विनियोजित रीति से पारस्पारिक निधियों, न्यासियों और ग्रामीण प्रबंध संस्थाएँ के क्रियान्वयनों से संबंध रखने वाले किसी विषय पर प्राप्त शिकायतों का अन्वेषण करना;
 - (ज) स्कोरण से छ सुनीरित रूपना कि पारस्पारिक निधि, न्यासियों या ग्रामीण प्रबंध संस्थाएँ के सम्बन्ध में संशोधन ऐसी रीति से किया जा रहा है जो विनियोजित रीति वालार के छिस में है।

निरीक्षण और अन्वेषण के पूर्व सूचा 62. (1) विनियम 61 के अधीन निरीक्षण या अन्वेषण का ग्राहण रहने के पूर्व बोर्ड न्यासियां, पारस्पारिक निधि, आसीत प्रबंध संस्थी या न्यासियों से मात्र से इन दस दिनों में सूचा देता है।

(2) उप-विनियम (1) में किसी बात के होते हुए भी, जहाँ बोर्ड का यह समाप्ति हो जाता है कि विनियमसंलग्नियों के हित में ऐसी कोई सूचा नहीं रही जानी चाहिए, वहाँ यह, लिखित ग्राहण द्वारा यह निशा दे सकेगा कि ऐसा निरीक्षण या अन्वेषण ऐसी सूचा के बिना किया जाए।

(3) निरीक्षण या अन्वेषण के दौरान, पारस्पारिक निधि, न्यासी या आसीत प्रबंध संस्थी जिसके विषद् निरीक्षण या अन्वेषण किया जा रहा है, विनियम 63 में क्या उपलब्धियां उभयं बाध्यतायों का निर्वहन करने के लिए आवश्यक होते।

निरीक्षण और अन्वेषण पर वाच्यताएँ 63. (1) उस पारस्पारिक निधि, न्यासियों या आसीत प्रबंध संस्थी का, जिसके कामकाल का निरीक्षण या अन्वेषण किया जा रहा है, और उसके प्रत्येक निशाक, आधिकारी और सम्बारी का यह स्वतंत्र होगा कि इसकी जागिरकां या नियंत्रण में ऐसी बाईं, लेवा, आमिलेव, और अन्य दस्तावेज निरीक्षण आधिकारी को पेश करे और उसे पारास्पर निधियों, न्यासियों या आसीत प्रबंध संस्थी के क्रियाकलापों से संबंधित ऐसे क्षिरण और जसकारी, जिसकी निरीक्षण आधिकारी जारी करे, ऐसे शुक्रियकृत समय के प्रीतर दे जो निरीक्षण आधिकारी विनियोगित करे।

(2) पारस्पारिक निधि, न्यासी या आसीत प्रबंध संस्थी निरीक्षण आधिकारी को ऐसे परिवर्तन, जो इसके या इसकी ओर से किसी भूत्य व्यक्ति के आधिकारों में हो, युक्तिशुद्ध एवं उसे दी जानुवारी दें और पारस्पारिक निधि, न्यासियों और आसीत प्रबंध संस्थी का ऐसे भूत्य व्यक्ति के स्वामी में किन्हीं बाईयों, आमिलेवों, दस्तावेजों और सम्पूर्ण आंदोलों की परीक्षा करने के लिए युक्तिशुद्ध सुविधा भी प्रदान करें और दस्तावेजों या भूत्य सामग्री की प्रतियां

मीं दों जो निरीक्षण आधिकारी की राश में निरीक्षण के प्रयोग के लिए सुनित हैं।

- (3) निरीक्षण आधिकारी, निरीक्षण या अन्वेषण के दौरान, पारस्परिक निधि, न्यासियों और ग्राहित प्रबंध कंपनी के लिए निवेशक, आधिकारी, या राज्यवाची की परीक्षा करने या उनके सभी ग्रामीणीकरण करने का दस्ताव देगा।
- (4) पारस्परिक निधि, ग्राहित प्रबंध कंपनी या न्यासी के प्रत्येक निवेशक, आधिकारी, या राज्यवाची का इह सर्वान्वय होगा कि निरीक्षण आधिकारी से निरीक्षण या अन्वेषण के संबंध में कमी सहायता दे, जिसकी निरीक्षण आधिकारी युक्तियुक्त रूप से अपेक्षा करे।

बोई को रिपोर्ट प्रस्तुत करना-

64. निरीक्षण आधिकारी, क्षायांत्र शीघ्र, निरीक्षण या अन्वेषण पूर्ण होने पर, बोई को निरीक्षण रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा :

एतद् इह कि यदि बोई द्वारा ऐसा करने का निरेश दिया जाए, तो इह जनतीय रिपोर्ट प्रस्तुत कर सकेगा।

निष्ठाओं आदि की सूचा

65. (1) बोई, विकल्प 64 में निर्दिष्ट निरीक्षण रिपोर्ट या अन्वेषण रिपोर्ट पर विचार करने के पश्चात्, क्षायांत्रित पारस्परिक निधि, न्यासियों या ग्राहित प्रबंध कंपनी से निरीक्षण आधिकारी के निकर्ष संसूचित करेगा, और उसे सुने जाने का एक ग्रन्तीर देगा :

एतद् इह कि यदि अध्याय VIII के अधीन कोई कार्यवाही आरंभ की जाती है तो अध्याय VIII के अधीन प्रतिक्रिया का प्राप्त दिया जाएगा।

- (2) पारस्परिक निधि, न्यासियों या ग्राहित प्रबंध कंपनी से उत्तर की प्राप्ति पर, यदि कोई हो, क्षायांत्रित, बोई न्यासियों या ग्राहित प्रबंध कंपनी से ऐसे उपयोग करने की अपेक्षा कर सकेगा जो बोई विनियोगकर्ताओं, प्रतिभृति बाजार के हिस्से में और इन विनियोगों के उपरोक्त सीमाएँ अनुग्रहित के लिए ठीक समझे।

लेलाएरीक की नियुक्ति

66. विनियम 55 के उपर्योग पर प्रतिकूल प्रभाव डाले जिए, बोर्ड को पारस्परिक निधि, नासी या ज्ञानी प्रबंध समीक्षा की लेला-बढ़ियों वा रूपरक्ति का, अधिसिद्धि, निरीक्षण वा अन्वेषण करने के लिए लेलाएरीक नियुक्त करने की शक्ति होगी :

परंतु यह कि इस प्रकार नियुक्त लेला-एरीक को निरीक्षण अधिकारी की वही शक्तियां होंगी जो विनियम 61 में समिति हैं और विनियम 63 में पारस्परिक निधि, ज्ञानी प्रबंध समीक्षा, नासी, और उनके ग्राम-ग्राम रूपरक्तियों की वापसी इस विनियम के अधीन अन्वेषण पर लाभ होगी ।

बोर्ड को निरीक्षण कीस का संवाद,

67. बोर्ड, लेला परीक्षकों को संकल फीस को सीमानित करते हुए ऐसे व्यांकों की वसूली करने का व्यवहार होगा, जो पारस्परिक निधि, नासीयों और ज्ञानी प्रबंध समीक्षा की लेला-बढ़ियों, अधिकारीयों और प्रत्येकों के निरीक्षण के प्रयोजनों के लिए इसके द्वारा उपलब्ध की जाए ।

मथव IX

वारीय सी दशा में नारंगाई के लिए प्रेसिया

प्राप्ति का नियन्त्रण-

68. बोर्ड एक पारस्परिक नियधि को दिए गए प्राप्ति को नियंत्रित कर सकता यही ऐसी पारस्परिक नियधि:-

- (क) ग्राहिनिया और इन विनियों के किन्तु उपलब्धों का उल्लंघन करती है;
- (ल) पारस्परिक नियधि के रूप में इसके विवाहलाभ से संबंधित इन विनियों के ग्राहिन व्यापारोंको फोर्ड जनकारी देने में ग्रस्तात्तु रहती है या ग्रिया जनकारी देती है;
- (ग) इन विनियों के ग्राहिन व्या झोक्कित सालिक विवरणों से प्रस्तुत करने में ग्रस्तात्तु रहती है;
- (घ) फोर्ड द्वारा संचालित किसी जांच या निरीक्षण में सहयोग नहीं करती है;
- (इ.) ग्राहिनिया या विनियों के उपलब्धों के ग्राहिन जारी बोर्ड के किन्तु किसी नियों का उल्लंघन करने में ग्रस्तात्तु रहती है;
- (क) विनियानक्तियों की शिकायतों को दूर करने में ग्रस्तात्तु रहती है या बोर्ड को इस नियमित समाप्तात्तर उत्तर देने में ग्रस्तात्तु रहती है;
- (ज) प्रतिमूलिकों में ग्रस्तात्तु व्यापार व्यवहारों में लगती है;

संष्टीकरण : इस खड़ के प्रयोग के लिए "ग्रस्तात्तु व्यापार व्यवहार" का यही ग्रंथ है जो भारतीय प्रतिमूलिक और विनियोग बोर्ड (प्रतिमूलिक बाजार में ग्राम्पूर्ण और ग्रस्तात्तु व्यापार व्यवहार) विनिया, 1995 में है;

- (ज) अक्षर या अनुचित या मुकाबारी या अवृत्तिक ग्राहक जो पांचवीं अमूल्यी में विनिर्दिष्ट ग्राहक संघीय के अनुसार रही है, की दोषी है;
- (क) ग्राहक प्रबंध सभी विनियम 21 के उपर्योग के अनुसार एड मालिक को बार रस्ते में असत्त रही है;
- (ल) लोई भी फ्री सरल रस्ते में असत्त रही है;
- (म) रजिस्ट्रीकरण की रक्ति का आदेश दिया करती है;
- (न) पारस्परिक निधि, ग्राहक प्रबंध सभी या उस पारस्परिक निधि के चासी इन विनियमों में द्वा विनिर्दिष्ट इसकी वापताओं का पत्तन रही करते हैं।

ग्राहक का रद्द करण

- 69 बोर्ड पारस्परिक निधि को दिए गए रजिस्ट्रीकरण ग्राहक को रद्द कर सकता, यदि ऐसी पारस्परिक निधि :-
- (क) रुपर सी दोषी है, या किसी आंकिक अवाधि की विवरणों द्वारा घटायी गयी है;
- (ल) विनियम 68 में विनिर्दिष्ट स्वरूप के व्यापकों सी पुराणी दोषी रही है;
- (म) पारस्परिक निधि, ग्राहक प्रबंध सभी, उस पारस्परिक निधि का चासी प्रतिशूल बलार और विनियमसंरक्षणों के द्वितीय को प्राप्ति करते वाले कीमत छलसाम, या कीमत हेतु या स्पेन क्रियाकलापों में लो है;
- (ग) पारस्परिक निधि की वित्तीय स्थिति का इस वित्तार तक क्षय हो जाता है कि बोर्ड की यह राय है कि इसका जारी रहना गूणधारकों और प्रबंध पारस्परिक निधियों के द्वित में रही है।

रद्दकरण वा निलंबन का ग्रहण
करने की रीति

70. किसी पारस्परिक निधि, न्यासियों, ग्राहित प्रबंध कंपनी के विश्व बोर्ड द्वारा, व्यापारिति, प्रगति वा अनुप्रवेश के निलंबन वा रद्दकरण का कोई ग्रहण विनियम 71 में विनिर्दिष्ट प्रक्रिया के अनुसार
जांच स्थिर बिना नहीं किया जाएगा ।

निलंबन वा रद्दकरण के पूर्ण जांच
करने की रीति

71. (1) विनियम 70 के अधीन जांच करने के प्रयोजन के लिए बोर्ड एवं या आधिक जांच आधिकारी
नियुक्त कर सकता है ।

(2) जांच आधिकारी, व्यापारिति, पारस्परिक निधि, ग्राहित प्रबंध कंपनी वा न्यासी से इसके
तीजस्त्रीयत फार्मला में या इसके कारबाह के मूल स्थान पर उन आधारों को जिन पर
इसके विश्व फार्मला द्वारा इसके कारबाह करते हुए सूचना जारी करेगा और
इससे सूचना की प्राप्ति की तरीका से चौदह दिनों की अवधि के पीछे ऐसी फार्मला के
विश्व फार्मला का नियुक्त आधिकारी की ज्ञाना करेगा ।

(3) पारस्परिक निधि, ग्राहित प्रबंध कंपनी वा न्यासी ऐसी सूचना की प्राप्ति की तरीका से
चौदह दिनों के पीछे, जांच आधिकारी को सूचनाएँ वा अन्य साक्ष वीक्षणों सहित,
जिसका सूचने आवश्य लिया है वा जो बोर्ड द्वारा पारस्परिक निधि, न्यासियों वा ग्राहित
प्रबंध कंपनी से प्राप्ति गयी है, लिखित उत्तर देंगे ।

(4) जांच आधिकारी पारस्परिक निधि, न्यासियों, वा ग्राहित प्रबंध कंपनी से, उप-विनियम
(3) के अधीन दिए गए इसके उत्तर के सार्वत्र में निवेदन करने के लिए इसे सार्व बनाने
द्वेष से जने का युक्तियुक्त अवसर देगा ।

(5) पारस्परिक निधि, न्यासी वा ग्राहित प्रबंध कंपनी जांच आधिकारी के सम्बन्ध वा तो व्यक्तिगत
स्थिति में या पारस्परिक निधि, न्यासियों वा ग्राहित प्रबंध कंपनी द्वारा साक्ष स्थिति से प्राप्ति
किसी व्यक्ति की प्राप्ति द्वारा दी जानी जाएगी ।

परं वह कि फिसी भी कैल या आधिकाता को जांच में पारस्परिक निधि, न्यासियों या आस्ति प्रबंध कंपनी का प्रतिनिधित्व करने की मुद्दा सही दी जाएगी;

परं वह और कि जहां बोर्ड द्वारा फिसी कैल या आधिकाता से उप-विनियम (6) के मध्यमे उपीसति आधिकारी के मध्य में नियुक्त किया गया है, वहां फिसी कैल या आधिकाता की मालत अमना मालता उपीसति करना पारस्परिक निधि, आस्ति प्रबंध कंपनी या न्यासी के लिए विधिवृत्त होगा ।

(6) जांच आधिकारी, यदि वह इसे जावदक सम्मता है, बोर्ड से उसका मालता उपीसति करने के लिए उपीसति आधिकारी नियुक्त करने के लिए यह सकेगा ।

(7) जांच आधिकारी, सभी सुसंगत तथों और पारस्परिक निधि, न्यासियों या आस्ति प्रबंध कंपनी द्वारा किए गए निवेदनों पर विचार करने के पश्चात् बोर्ड को रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा और पारस्परिक निधि, न्यासियों या आस्ति प्रबंध कंपनी के विषद् की जाने वाली कार्रवाई की, यदि कोई हो, और उन आधारों की जिन पर शास्त्रीक कार्रवाई नायमुक्त है सिफारिश करेगा ।

- कारण क्लाओ सूचा और ग्राहण,
72. (1) जांच आधिकारी से रिपोर्ट की प्राप्ति पर, बोर्ड उस पर विचार करेगा और पारस्परिक निधि, न्यासियों या आस्ति प्रबंध कंपनी को एक कारण क्लाओ सूचा की प्राप्ति की तारीख से चौह दिनों के भीतर, बोर्ड को उत्तर प्रेषेगा ।
- (2) पारस्परिक निधि, आस्ति प्रबंध कंपनी या न्यासी, कारण क्लाओ सूचा की प्राप्ति की तारीख से चौह दिनों के भीतर, बोर्ड को उत्तर प्रेषेगा ।
- (3) बोर्ड, पारस्परिक निधि, न्यासियों या आस्ति प्रबंध कंपनी के उत्तर पर, यदि कोई हो, विचार करने के पश्चात् क्लाओ सूचा रेसा ग्राहण पारित करेगा जो वह ठीक सम्मता है ।
- (4) बोर्ड पारस्परिक निधि, न्यासियों या आस्ति प्रबंध कंपनी को उप-विनियम (3) के मध्यमे किए गए ग्राहण को एक प्राप्ति प्रेषेगा ।

राष्ट्रियकरण के निलंबन या रद्दकरण का प्रभाव

73. (1) आगजन या अमुमेन के निलंबन की तरीख से ही, व्यासियांति, पारस्पारिक निधि, नासी या आसित प्रबंध रूपी, निलंबन की जापीय के दौरान पारस्पारिक निधि, नासीयों या आसित प्रबंध रूपी के स्थ में कोई क्रियाकलाप करना बंद कर दींगे, और पारस्पारिक निधि, नासीयों या आसित प्रबंध रूपी के स्थ में इसके क्रियाकलापों से संबंधित किन्हीं आमिलेशों, दस्तावेजों या प्रतिभृतियों, जो इसकी ग्रामिकाया या निकंप में हों, के संबंध में बोर्ड के खिलेंगे के ग्राम्यपत्र होंगे।
- (2) आगजन या अमुमेन के रद्दकरण की तरीख से ही व्यासियांति पारस्पारिक निधि, नासी या आसित प्रबंध रूपी, व्यासियांति, पारस्पारिक निधि, नासीयों या आसित प्रबंध रूपी के स्थ में कोई क्रियाकलाप करना तकलीफ बंद कर दींगे।
- (3) बोर्ड, शैक्षिक धारकों के छात्र में, पारस्पारिक निधि, नासीयों या आसित प्रबंध रूपी के स्थ में इसके क्रियाकलापों से संबंधित किन्हीं आमिलेशों, दस्तावेजों या प्रतिभृतियों, जो इसकी ग्रामिकाया या निकंप में हों, के प्रतरण के संबंध में निवेश पारित कर सकेगा।
- (4) बोर्ड, शैक्षिक धारकों के छात्र के सरकार के लिए इस प्रश्नोन के लिए विनियोगिता नियुक्त किसी व्यक्ति या अन्य किसी नासी या आसित प्रबंध रूपी को आमिलेशों, दस्तावेजों, प्रतिभृतियों, ग्रामी देश का ग्रामेश दे सकेगा।

एवं यह कि बोर्ड ऐसे किसी व्यक्ति को नियुक्त करते समय ऐसी नियुक्ति के निवेश में ग्राम्यपारित करेगा।

निलंबन या रद्दकरण के ग्रामेश का प्रभाव

74. विनियम 72 के उप-विनियम (3) के जापीन पारित निलंबन या रद्दकरण का ग्रामेश दो स्माचारकाओं में बोर्ड द्वारा प्रकाशित किया जा सकेगा।

विवरणों के निम्न-कार्याई

73. बोर्ड ग्राहिनिया की धारा 12 के ग्राहीन रोजस्ट्रीकरण प्राप्ति धारण फूले वाले किसी ग्राहकी के रोजस्ट्रीकरण के निलंबन या रद्दकरण के तिर कार्याई जारी कर सकेगा जो सुधूर तपता का प्रयोग फूले या इन विवरणों के ग्राहीन वायताओं सी अनुपातमा फूले में उपस्थित होता है :

एतु इह कि ऐसा कोई रोजस्ट्रीकरण प्राप्ति धारण तक निलंबित या रद्द नहीं किया जाए जब तक कि ऐसे ग्राहकी पर लागू विवरणों में विनिर्दिष्ट प्रक्रिया का अनुपात स्थीर किया जाता है।

वायविक्षण, जारी

76. बोर्ड, ग्राहिनिया की धाराएं 15क से 15इ. में विनिर्दिष्ट अपराधों के लिए ग्राहिनिया की धारा 15इ. के ग्राहीन कार्याई जारी कर सकेगा और ग्राहिनिया या विवरणों के लिए उपलंब्धों के आतिक्रम की रक्ति में, ग्राहिनिया की धारा 11, 11इ. या धारा 24 के ग्राहीन कार्याई जारी कर सकेगा।

(2) बोर्ड प्राप्ति धारण के निलंबन या रद्दकरण के आतिरिक्त, इस ग्राहिय के ग्राहीन प्रक्रिया का अनुसरण फूले के परामर्श इन विवरणों के स्थिर उपलंब्धों के आतिक्रम के लिए पारस्पारिक नियम की किसी स्कीम के जारी करने को एक वर्ष से अधिक अवधि के लिए निलंबित फूले का ग्राहेश दे सकेगा।

(3) बोर्ड इस ग्राहिय के ग्राहीन निलंबन या रद्दकरण सी किसी कार्यवाही के लंबित होने के दौरान इस ग्राहिय के ग्राहीन प्रक्रिया का अनुसरण किए जिन किसी स्कीम को तीन मास से अधिक अवधि का जारी करने से निलंबित फूले का ग्राहेश भी दे सकेगा।

एतु इह कि सुवर्णाई का अप्राप्त दिए जिन कोई ग्राहेश परिवर्तनीय नहीं जाएगा।

ग्रन्थ X

विविध

स्पष्टीकरण बारी करने की बोई
की शक्ति

77. इन विनियमों के लागू करने या निर्वाचन में किन्हीं खट्टियाँ हों से दूर करने के लिए, बोई के पास उपलब्धियों वा परिज्ञाओं के स्थान में स्पष्टीकरण और आधिकारिक सिद्धांत बारी करने की शक्ति होगी जो प्रायोगिक, पारस्पारिक नियिमों, न्यासियों, आसांख्यिक और आमिरकर्तों पर वापस कर देगी।

निरस्त और असौंति

78. (1) भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोई (पारस्पारिक नियिम) विनियम, 1993 एकद्वारा निरीक्षित किए जाते हैं।

(2) ऐसे निरस्त के होते हुए भी :-

(क) नायिक विनियमों के अधीन प्रदत्त राजस्त्रीकरण या अनुग्रहन, संचालित फ़ीस, घोषित स्कैम, राजस्त्रीकरण या अनुग्रहन, नियंत्रिका की गई या रद्द की गई, प्रारंभ की गई कोई अंत या अन्वेषण को अंतर्विष्ट करते हुए की गई कोई ब्रत अवश्यक नहीं कोई कार्रवाई अवश्यक नहीं करते हुए के लिए या लिए जाने के लिए तत्पर्यक, इन विनियमों के तत्पर्यनी उपलब्धों के अधीन किए गए या लिये गए सम्पर्क जाए।

(ख) कोई जाकेन जो नायिक विनियमों के अधीन बोई से लिया गया और इसके सम्बन्धित है, इन विनियमों के तत्पर्यनी उपलब्धों के अधीन लिया गया सम्पर्क जाए।

(प) कोई प्रीति जो साधन विनियोगों के प्रधान बेंच मरकार से सी गयी है और इसके साथ लिखा है, इन विनियोगों के तत्पात्री उपलब्धों के प्रधान सी गये समाचार जाएगी।

[फा. सं. भाप्रविक्रो/विधि/23/96]

देवेन्द्र राज मेहता, अध्यक्ष

फली झूसूची

प्राप्ति

भारतीय प्रौद्योगिकी और विनियोग बोर्ड

(पारस्पारिक निधि) विविध, 1996

(विविध 3,5)

पारस्पारिक निधि का रजिस्टरिंग प्रक्रम किए जाने के लिए ग्राहक

ग्राहक का नाम

संपर्क व्यक्ति

प्रमाणात्मक आधारीका नाम _____

ठेलफ़ोन म. फ़ोन फैक्स म. _____

प्राप्ति प्राप्ति के लिए झूसूची:-

1. ग्राहकों को स्वास्थ्य संरक्षक इस्ताविंगों मांडिया भरा हुआ ग्राहक प्राप्ति बोर्ड को प्रस्तुत करना चाहिए ।
2. वह घटत्वरूप है कि वह ग्राहक प्राप्ति, विविधों के झूसारा भरा जाए ।
3. एक ग्राहक जो पृष्ठ नहीं है ग्राहकार रूप दिया जायेगा ।
4. उत्तर दीक्षा और सुपाल्य होने चाहिए ।
5. वह जनकारी जिसके आधार व्यारों देना ग्राहकर कृपा फ़न्डों पर दी जा सकती जो ग्राहक प्राप्ति के सब संलग्न किए जाने चाहिए ।
6. ग्राहक ऐसा करने का प्राधिकार उसे वले सभ्या व्यक्ति द्वारा स्वतान्त्रता होना ही चाहिए और सभी व्यक्ति व्यक्ति में होने चाहिए ।

पारस्परिक निधि के प्रयोगक द्वारा रजिस्टरेशन के लिए आवेदन

- 1) प्रयोगक का नाम

- 2) रजिस्ट्रीटर कार्यालय का
प्लॉट व्हाइर के लिए प्ला

देलीफेस सं.
देलीस सं.
फैस सं.

- 3) संकेत विभिन्न का नाम

- 4) प्रयोगक के नियम की तारीख
और स्थान
(नियम प्रभाग की रु
प्रह संलग्न करें।)

- 5) प्रयोगक के उद्देश्य
(मान-जाज मौर संग्रह-मुद्रण
की प्रति संलग्न करें।)

मुख्य उद्देश्य
ग्रन्थांक उद्देश्य

- 6) पूँजी संरक्षा और खेत
धारिता ऐवं

- 7) साथार-डियमलारों का

क्रमानु व्यवस्था

उस व्यवस्था में वर्ष संख्या

- 8) संक्षिप्त वित्तीय चालकारी
(वर्ष वर्षों के तहतक
जैसा लाप-टाइट लेवल स्थान करें)
- 9) लेवल नीतियाँ
(द्विवर्षीय लेवल नीतियों का वर्णन करें)
- 10) फ़िल्टर्स और प्रॉग्राम्स
(सरकारी द्वारा फ़िल्टर्स और प्रॉग्राम्स
के लिए कानून के कानून के
द्विवर्षीय नियमण का वर्णन करें)
- 11) महिनत संचालन/समाजिक रूपनियों /
समन्वयियों आदि के नाम ।
- 12) प्रायोगिक का प्रबंधन
नियेशकों के नामों, प्रमुख,
झौंठा और दूसरा संघीय का बोर्ड

प्रथा कार्यक के नाम

प्रायोगिक संरक्षा

महिनत मालानों, रूपनियों
और समन्वयियों का नियेशक बोर्ड

- 13) प्रयोगक के लेकारों के नाम और फो
- 14) प्रयोगक के लेका परीक्षणों
के नाम और फो
- 15) नायात्मा के माध्यम/मूलदो जिनमें
प्रयोगक छिले तीन वर्ष में
अन्तर्वाला रहा हो
- 16) परायाएक निधि के एजेंट्सीकरण के
प्रबोधन के सभ प्रकार की एक प्रति तसी होणी
(अ) आस विलेन का प्रश्न;
(ब) विनिधान ग्रंथालय करार का प्रश्न; और
(ग) सर्विक्स फ्लाई का प्रश्न

संक्षेत्र वित्तीय जमकारी

५) ज्ञाय विवरण

वर्ष

(मि.)

1, 2, 3, 4, 5

ग्रामः	लम्पांशु
	व्यापार
	प्रांच फौस
	अन्य ज्ञाय
	योग
व्यापः	निवेशक का पारिस्थितिक
	नासीब की फौस
	ग्रामरक्षक की फौस
	राजस्तार की फौस
	अन्य व्याप
	योग

सम्पूर्ण लम्प

ज्ञायविवरण

सर के पूर्व शुद्ध लम्प

सर

सर के परचात् लम्प

लम्पांशु

प्रतिपादित उपलब्ध

क) ग्राहित्यों और दायित्व

ग्राहित्यों

का

(मूल)

1, 2, 3, 4, 5

सिर ग्राहित्यों

महान्

प्रधानम्

एवं मूल

गत् ग्राहित्यों

विनिधान *

मत्य (मृष्टा विनिर्दिष्ट करें ।)

मह और के आधिकारों

प्रा

गत् दायित्व और

उपाय

एवं ग्रन्ति

ग्रन्ति द्वारा दर्शितः

पुरोभूत और स्थानत पूर्णी

खली ग्राहित्यों

(मृष्ट्यवान् ग्राहित्यों से छोड़कर)

दोष

* विनिधानों से पूर्ण विवरणों हैं ।

प्रम्य स

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड
(पारस्पारिक निधि) विनियम, 1996
(विनियम 9)

राजस्वकरण प्राप्ति

- (i) बोर्ड, भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड अधिनियम, 1992 (1992 फ़ा 15) के मुध्यमें बनाए गए भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (पारस्पारिक निधि) विनियम, 1996 के साथ पहले उस अधिनियम की धारा 30 द्वारा एक शाखियों का व्याप्ति रूप से द्वारा द्वारा देता है।
- (ii) पारस्पारिक निधि के लिए राजस्वकरण कोड पा.नि. है।

तारीख

ग्राहण से

है,

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड के लिए और उसकी ओर से

प्रत्यक्ष ग

भारतीय प्रतिमूर्ति और विनियम बोर्ड
(पारस्परिक निधि) विनियम, 1996

[विनियम 16(1)(प)]

पारस्परिक निधि का नामांक

1) यदि पारस्परिक निधि का नामांक ऐसी एवं
जिसी चाप संस्थानी के पास है तो
संस्था निम्नलिखित विवरणों द्वारा :-

- a) मुद्रालेन के तिए
संग्रह-मुद्रालेन और
संग्रह-चाप का ग्राह्य
- b) चाप संस्थानी के उद्देश्य
- c) ग्राह्य, अनुमति और अद्वितीय संधि
नामांक संस्थानी का निदेशक बोर्ड
- d) ग्राह्य कार्यालय

2.) फ़लतीयाँ और प्रक्रियाएँ,
आप्रेसेव अनुदेश आदि

3) लेखापरीक्षकों और बैंकों के नाम

2) यदि पारस्परिक निधि का नामांक
जिसी डिव्हेंर नामी, बैंक
ग वित्तीय संस्था के पास है तो

कृष्ण निमिलिंगित विशेषियों दे :-

- १) संस्था का नाम
- २) फाईटेनिंग/देसेस/फैस सं.
- ३) संरक्ष व्यक्ति का नाम
- ४) पृष्ठभूमि चमकारी ऊर्ध्व (कैपनियों, चामों दी संख्या जिनके लिए उन्हें नामियों के स्थान पर रुद्धि मिला है या उन्हें घर रही है, उन कैपनियों, चामों के स्थान पर ग्रूप्स के वर्षों की संख्या, चामकारी की रूल प्राप्ति, फिल्टर तीन वर्षों के लिए चामोड़-फौस प्राप्तिनीत, चामोड़ के रूद्धि करने के लिए साढ़नावक अवसरता, जिसके अन्तर्गत चामोड़ ग्रन्डप बैंगूठ सुविधाएँ हैं, डिक्टेनर नामियों की दशा में व्यक्तिगत कैपनियों की संख्या, आज और ग्रूप्स के संदर्भ में व्यक्तिगत के ग्राहकों की संख्या ग्रौ डिक्टेनर नामियों द्वारा की गई कार्रवाई का भी वर्णन करें।)
- ५) यदि पारस्परिक निर्धारित का चामोड़ किन्हीं व्यक्तिगत चामों बोडे के पास है तो कृष्ण निमिलिंगित निर्धारित हैं -
- ६) चामों बोडे के सदस्यों के नाम
- ७) मायू, अमूब, अहोंगा और वृन्द
- ८) चामों बोडे के सदस्यों की प्रायोंक
- ९) प्रायोंक के फिसी सहयुक्त के साथ नामेतारी

- 4) नास किलेख सा प्राप्त
नास किलेख प्राप्ति में अन्य वस्तों के साथ निम्नलिखित
के लिए उपयोग होना चाहिए :
- निधि की आस्तियों के संरक्षण
के लिए न्यासियों के उत्तराधिक, बाध्यारं और आधिकार;
 - द्व रूप कि विनिधन अनुज्ञात
प्रकृति के और नियम सीमाओं के प्रतीक होने चाहिए;
 - निधि प्रबंधक अन्तर्गत आस्ति
प्रबंध रूपी के उत्तराधिक, बाध्यारं और आधिकार;
 - विनिधनों, शून्यों के सूचन, निर्णय और रद्दकरण,
शून्यों के कीमत-निर्धारण और प्रोत्स, संवृत्त स्कीमों की दशा में
शून्यों के सूचीबद्धकरण, निधि के व्यव,
जिसके अन्तर्गत फीस का संहार और माय तथा आमताप्राप्ति का वितरण और लेना है, के लिए नीतियाँ;
- 5.) प्रस्तावना दस्तावेजों और विज्ञापनों में
स्कीम-उद्देश्य और विनिधन-उद्देश्यों
के प्रकल्पों और निधि की विभिन्न स्कीमों के
विनिधनस्तापितों को वार्षिक और ग्रन्थ-वार्षिक
रिपोर्ट देने की आवश्यकता के लिए नीतियाँ;
- 6) आस्ति प्रबंध रूपी की त्रिपादी रिपोर्ट
आमताप्राप्ति रखने के अलावा आस्ति प्रबंध
रूपी से ग्रावरक जमकारी आमताप्राप्ति
रखने का न्यासियों का आधिकार;

- ७) शुद्धियों के फ़ैला-निपारण और निधि में
और उससे संबंध और निधि की ग्राह के
सम्बन्ध लेता तथा झूलात व्यक्त के प्रभारण,
झूलात वितरण के बारे में ग्राहित प्रबन्ध
कंपनी की स्थित पर जाँच-एडाल फरने से
आधिकार;
- ८) नासा किलोवट की जनता को उपलब्धता
- ९) प्रम्य प्रत्येक के लिए झूलात (प्रम्य के देखे)

प्रति प

मारतीव ग्राम्यता में विभिन्न बोहे
(पारस्पारिक निधि) विनियम, 1996

[विनियम 19(1)]

ग्राम्य प्रबंध समिति

- 1) ग्राम्य प्रबंध समिति का नाम

- 2) प्रस्तावित राजनीतीकृत
राष्ट्रीय/प्रत्यक्ष व्यवाहार के लिए प्रा

टेलकोम सं.
टेलेसॉ सं.
फैस सं.

- 3) सरकार योजना का नाम

- 4) ग्राम्य प्रबंध समिति के प्रस्तावित उद्देश्य
अम्बुजन के लिए सामग्री-संचयन
और सामग्री-शास्त्र के कला की पात्र सम्पन्न करें।

उद्देश्य
ग्राम्योदय उद्देश्य

- 5) 5) प्रस्तावित योजना संस्था
 - 6) योजना की एक शीर्षक जो
निम्नोंपरिवार द्वारा योजना की जाएगी
(लोकारोपणको का आवश्यक घोषणा दिया जाएगा)

- 6) ग्रासित प्रबंध कम्पनी की प्रस्तावित पद्धतियाँ और प्रक्रियाएँ
(कम्पनी में प्रस्तावित पद्धतियाँ और प्रक्रियाएँ का
प्राप्त करने का नामकरण इसमें के लिए
प्राविष्टक प्रान्तिक नियमों का शर्तन करें)
- 7) ग्रासित प्रबंध कम्पनी के सहयोग संघर्षों/सामूहिक
कंपनियों/समुसंगीयों आदि के नाम
- 8) ग्रासित प्रबंध कम्पनी का प्रबंधन
नियमों के नामो, अधिक, अद्वा,
और वृत्त सांकेतिक कांडे

एवं कांग्रेस के नाम

प्रस्तावित सांघनिक संरक्षा

सहयोग संघर्षों, कंपनियों और
समुसंगीयों का नियंत्रक बोर्ड

यदि ग्रासित प्रबंध कम्पनी विद्यालय कम्पनी है तो

- 1) ग्रासित प्रबंध कम्पनी का नाम
- 2) राष्ट्रियीकृत कार्यालय का पाठ/
प्रथा व्यवहार के लिए पाठ

टेलीफोन सं.

टेलीसंस सं.

१८८ सं.

- 3) संस्कृत व्यक्ति का नाम

4) आरीत प्रांथ रंगनी के निष्पत्ति की
तारीख और साम
(निष्पत्ति प्राप्ति की एक प्रति संतुष्टि करे ।)

5) आरीत प्रांथ रंगनी के उद्देश्य
(सम्प्र-जापन और सम्प्र-मनुष्यों
की प्रति संतुष्टि करें-)

प्रथ्य उद्देश्य

आनुशाश्वीक उद्देश्य
(सम्प्र-जापन प्रौढ़ और सम्प्र-मनुष्यों के
लिए मारतीय प्राप्तिमूर्ति और विनिष्पत्ति बोडे के मनुष्योदय की
मावश्यकता दोषी और विद्युत सम्प्र-
जापन प्रौढ़ सम्प्र-मनुष्यों में मावश्यक संरोधन सामिलता करने द्वारा)

6) ऐच्छी संख्या और शेषरधारिता फैल
(वर्वीनतम् तारीख को)
जो निम्नलिखित द्वारा दर्शित की जाएगी

7) कारबाह फिराकलताप के कर्त्ता व्यक्तिगत
उस व्यक्तिगत में वर्ष संख्या

- 8) संकेत किसी जमकारी
(जैसे ये के दृश्यमान हों
वा उन्हें किसी कानून के)
- 9) लेता-नीतियाँ
(दृश्यमान लेता-नीतियों का वर्णन करें)
- 10) फ़लतीयों और प्रक्रियाएँ
(किसी में फ़लतीयों प्रौद्योगिकीयों
वा सामाजिक रूप से बदलाव के लिए
उपयोग करने की वर्णन करें)
- 11) सहृदय संघों/समाजिक कंपनियों/
समुदायीयों ग्राहि के नाम
- 12) ग्राहित प्रबंध कंपनी का प्रबंधन

नियोगों के नाम, अधिक, अहंता,
वृत्ति सहित ग्राहित प्रबंध कंपनी का बोर्ड

पूछ कार्यक के नाम
- साधनामुक संख्या
- सहृदय संघों, कंपनियों और
समुदायीयों का नियोग बोर्ड
- 13) ग्राहित प्रबंध कंपनी के बैंकों के नाम और फ़ि

- 14) ग्रासिं प्रबंध संस्थी के लेतारीकों के नाम और फो
- 15) नायता के ग्रासिं प्रबंध संस्थी को
ग्रासिं प्रबंध संस्थी फिले तीन वर्ष
में अंतर्भूत हो
- 16) ग्रासिं प्रबंध के लिए अनुदेश
(प्रबंध के दलों)

संक्षेप वित्तीय जामकारी

क) माय विवरण

ग्राहः वर्ष (मि)

1, 2, 3, 4, 5

लभाय

व्यापार

प्रबंध फीस

अन्य ग्राह

दोष

व्याहः

निदेशक का पारिशिक

व्यासीद फीस

आमिरक की फीस

राजस्वार की फीस

अन्य व्या

दोष

सहत लाभ

उपकारण

कर के पूर्व शुल्क लाभ

४८

मर के प्रवास तथा

तमांस

प्रतिधारित उपलब्ध

ग) ग्रामीणों और दाकिन

वर्ष

(मि.)

1, 2, 3, 4, 5

ग्रामीणः

प्रेसर ग्रामीणों

सकल

अवधारण

एड मूल

ग्रामीणों

विनिधन *

जन्य (मुख्या विनिर्दिष्ट फर)

नम और बैंक ग्रामीण

घटा

ग्रामीण दाकिन और

उपचार

एड ग्रिलिक्स

नियोनीक्स द्वारा दर्शनः

प्रोफ्स और स्पाहत एंजी

इंजी आरबितियों

(मुख्यांकन आरबितियों को छोड़कर)

दोग

* विनिधनों की पूर्ण विवरीयों हैं

दूसरी झटकी
 भारतीय प्रतिपूति मुंग विनियम बोर्ड
 (पारस्पारिक निधि) विनियम, 1996
 [विनियम 4, 9, 12, 28(2)]

फौस

I

- (a) पारस्पारिक निधियों द्वारा संदेश प्राप्तिकरण कोस एक्सेस हेतु लाई रखा
- (b) पारस्पारिक निधियों द्वारा संदेश राजस्वांकरण कोस एक्सेस लाई रखा
- (c) पारस्पारिक निधियों द्वारा संदेश मेंवा कोस दो लाई प्राप्त हेतु लाई रखा
- (d) प्रस्ताव प्रलेख दर्शित करने की कोस एक्सेस हेतु लाई रखा

II ग्राहक छठ I मेर उल्लिखित कोस मुद्रई में 'भारतीय प्रतिपूति मुंग विनियम बोर्ड' को देय कैंक इस द्वारा संदेश होगी।

तीसरी झूम्ली
भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड
(प्रारम्भिक निधि) विनियम, 1996
[विनियम 15 (1)]
न्यास विलेव की झूम्लेत्तु

न्यास विलेव में निम्नलिखित लंड होगे, झूम्लः-

1. i) कोई न्यासी न्यासी बोर्ड या न्यासी फंडकी के सदस्य के स्थ में उन्हें उत्तराधिकारों को नियन्त्रण में अन्य राजसियों या संसाधों या किंतु या प्रधारियों या किसी नागरिक निकाय से, जिनसे वह संबद्ध हो, सुरक्षित दूरी वाला संबंध रखेगा ।
ii) कोई न्यासी, न्यासी बोर्ड या न्यासी फंडकी के भागिकारों में भग नहीं लेगा जब विविधताओं के लिए जिन्हें वह डिस्ट्रिक्ट हो विनियम लिये जाने हो ।
iii) सभी न्यासी, न्यासीबोर्ड या न्यासी फंडकी को उस द्वितीय सभी विशेषज्ञों को जो उसका, किसी अन्य फंडकी या संस्था या किंतु या प्रधारियों या किसी नियामित निकाय में निवेशक, प्राप्तीदार के स्थ में उसके एक के प्राप्तार पर हो या जिससे वह किसी अन्य दैसंसद में संबद्ध हो ।
2. न्यास विलेव में न्यासियों की न्यूनतम संख्या का वर्णन होना चाहिए ।
3. न्यास विलेव में यह उपर्युक्त अवश्य होना चाहिए कि न्यासी प्रारम्भिक निधि की स्थैतिकी को सभी संभाल ग्रपों को अन्य जारीकरण में दी जाए और इसे वृन्दावन धारकों के लिए न्यास में धारण करें ।
4. न्यास विलेव में विनियोग स्थ से यह उपर्युक्त अवश्य होना चाहिए कि ग्रन्टधारकों का, न्यास संभाल में मुला-मुला स्थैतिकों में फैल अन्यों फंडकी भारिता के विस्तार तक तथ्य छिप दोना ।
5. न्यास विलेव में यह उपर्युक्त होगा कि न्यासियों का यह कर्तव्य होगा कि वे ग्रन्टधारकों के हित में कार्य करें ।
6. न्यास विलेव में यह उपर्युक्त होगा कि न्यासियों का यह कर्तव्य होगा कि वे ग्रन्टधारकों और बोर्ड को वह जानकारी दें या वित्तवाही

जो बोर्ड द्वारा विनियिष्ट की जाए ।

7. चास विलेल में यह उपबंध होगा कि न्यासी, न्यासियों और बोर्ड द्वारा अनुमोदन के पश्चात पारस्परिक निधि के लिए स्कॉलर चालू करने प्रीत चास विलेल और विनियमों के उपबंधों के अनुमान विनियम स्कॉलर के अधीन जटाई गई नियमों का प्रबंध करने के लिए बोर्ड द्वारा अनुमोदित आंतरिक प्रबंध फ़र्मनी की नियमित करेंगे । न्यासी इस फ़्लोजन के लिए आंतरिक प्रबंध फ़र्मन के साथ विनियम प्रबंध कराएंगे और उसे चास विलेल के साथ संतुलन करेंगे ।
8. चास विलेल में यह सुनीरित करने के लिए वृक्षयुक्त साधारणी बदलने के न्यासी के कार्य के लिए उपबंध होगा कि प्रांती प्रबंध फ़र्मनी द्वारा चालू और प्रबंधित स्कॉलर के अधीन नियमों चास विलेल प्रीत विनियमों के अनुमान हैं ।
9. चास विलेल में विनियमों के अनुमान बोर्ड के अनुमोदन से फ़ेवर विनियिष्ट दसाप्रो में आंतरिक प्रबंध फ़र्मनों को प्रदर्शन करने की न्यासियों की शोक्त के लिए उपबंध प्रबंध होगा ।
10. चास विलेल में यह उपबंध होगा कि न्यासी प्रांतीक फ़र्मनों प्रीत पारस्परिक निधि के संघर्ष में इसके क्रियाकलाप के प्रविक्षण के लिए उत्तराधीन होंगे प्रीत इस प्रयोजन के लिए प्रांतीक के साथ आंतरिक कराएंगे ।
11. ०
चास विलेल में यह उपबंध होगा कि पारस्परिक निधि के लिए तेजापराक्रम प्रांती प्रबंध फ़र्मनों के लेजापराक्रम से मिन होगा ।
12. चास विलेल में, न्यासियों के, स्कॉलर को संतुल फ़ी जाने के लिए शोध किसी प्राय के साहृदय का पर्यवेक्षण करने और फ़र के किसी प्रतिसंहित का दावा करने के लिए तो प्राय किसी प्राय को चास विलेल, विनियमों के अनुमान धाराओं के लिए चास में लगने के उत्तराधीन के लिए उपबंध होगा ।
13. प्रूजी या प्राय को संदर्भों के ग्रांडन के बारे में विस्तृत नीतियां चास विलेल में उपर्योग फ़ी जानी चाहिए ।
14. चास विलेल चास संघील में से किसी प्रांतीक के ग्रन्ति का स्पष्ट स्प से निषेध प्रीत रुपयों कोई ऐसा दायित्व ग्रहण करना ग्रन्तवीलत है जो ग्रन्तीयित है, या वह किसी प्रीत प्रकार संघील किलंगम में परिणामिक नहीं होगा ।
15. चास विलेल पारस्परिक निधि और आंतरिक प्रबंध फ़र्मनी सो कोई उपर देने या प्रव्याप्त करने या कोई क्रियाकलाप जो विनियमों के प्रतिकूल न हो, फ़रने में निषेध करेगा ।

16. नामेयों को संबंध नामीष फीम का शब्द कोई हो, त्याम किलेल में उपलंप किया जाएगा ।
17. नाम किलेल में यह उपलंप होगा कि नाम किलेल में कोई संशोधन बोर्ड और यूनिपारकों के प्रवर्गनामेन के बिना नहीं किया जाएगा । एंतु यह कि त्यापि शब्द नामी को त्रायाम नामी कम्पनी में संचारित कर दिया जाता है तो ऐसे संचारित के लिए यूनिपारकों का मन्मान आवश्यक नहीं होगा ।
18. सभी मालियों में नामों को इटार जाने के लिए बोर्ड का प्रवर्गनामेन प्रयोग होगा ।
19. नाम किलेल, विनियामों में व्याविनिर्दिष्ट ऐसी परीक्षियों के अपनी यूनिपारकों का मन्मान माले की प्रक्रिया आवश्यक होगा ।

श्रीमती मृत्युजी

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड
(पारस्परिक नियम) विनियम, 1996)

[विनियम 18(2)]

विनियम प्रबंध करार सौ अन्तर्वक्तु

विनियम प्रबंध करार में ग्राहित प्रबंध कर्तव्यों के कल्याणों और उत्तराधिकारों के लिए स्वयं उपलब्ध होगे, मर्यादा :-

- (i) बोर्ड के पूर्व प्रभागीन से न्यायिकों द्वारा नियुक्त ग्राहित प्रबंध कर्तव्यों न्यायिकों द्वारा स्फीटों के लिए प्रभागीन के पश्चात् व्याप्त विलोग और विनियमों के उपर्योग के प्रदान प्रबंध कर्तव्यों के लिए स्वयं गति रखने और विभिन्न स्फीटों के मध्यन्तर लूटाई गई नियमों का प्रबंध रखने के लिए उत्तराधिकारी देखें ;
- (ii) ग्राहित प्रबंध कर्तव्यों और बोर्ड के पूर्व प्रभागीन के लिए विनियम 23 के मध्यम सिनेदिष्ट क्रियाकाल तथा पारस्परिक नियमों के प्रबंध और विलोग सेवा प्रदान, वार्तालालक ज्ञानात् एवं अनुभव और विशेषण का प्रदान-प्रदान जैसे मन्त्र क्रियाकाल रही रहेंगी जब तक कि वे स्वयं इसके नियम प्रबंध क्रियाकाल के विशेष रूप में नहीं हों ;
- (iii) ग्राहित प्रबंध कर्तव्यों विभिन्न स्फीटों के मध्यन्तर लूटाई गई नियमों का विनियम व्याप्त विनियमों के उपर्योग के प्रसार रहेंगी ।
- (iv) ग्राहित प्रबंध कर्तव्यों स्फीट से संबंधित में से किसी ग्राहित का ग्रहण नहीं करने वालों जिसमें किसी रेसे दावेदार का एक अन्तर्वक्तु है जो ज्ञानीय है और जो स्फीट की संरक्षित के किसी भी इकाई में विलोगात् में दर्शाया जाए तो स्फीट ही स्फीट है ;
- (v) ग्राहित प्रबंध कर्तव्यों उपर नहीं देखी या उन्हें प्रत्याभूत नहीं करेंगी या विनियमों के उत्तराधिकार में कोई क्रियाकाल प्राप्त नहीं करेंगी ।
- (vi) ग्राहित प्रबंध कर्तव्यों या ग्राहित प्रबंध कर्तव्यों के ग्राहिकारीयों या ग्राहित प्रबंध कर्तव्यों द्वारा प्रत्याधोषित किमो व्याप्ति द्वारा उपलब्ध करें देखी या तुक्सात् या व्याप्ति व्याप्ति संबंधित में से एक नहीं है, जारी ।
- (vii) ग्राहित प्रबंध कर्तव्यों यह सांस्कृतिक करेंगे कि कोई मानवन प्रय या भवति क्रियाएँ दो जाति किया गया विकल्प प्राप्त है या भव्य मुकुंद सम्मानी, या वृन्दावानों के साधारण नियात्, या जनता या प्रेम या स्वाध के भव्य माध्यमों को संबोधित कियाजाएँ, या ऐयों

और/या घोषणा (कीमतों या उत्पादनों की घोषणा से पिछे) न्यासियों के लिखित स्वर्ग में पूर्विक अनुग्रहन के बिना जारी नहीं की जाती है या प्रकाशित नहीं की जाती है और उसमें न्यास विलेन या न्यासियों और बोर्ड द्वारा अनुमोदित प्रश्नावेद स्कीम विशेषितों से गहरे कोई रूपन या बात नहीं है ;

(viii) ग्राहित प्रबंध कंपनी स्कीम विशेषितों में निधि की विभिन्न स्कीमों की पृष्ठः इव सीमत और एह आतिथ मूल्य की संग्राहा का ग्राधार प्रकट करेगी और उसे विनिपत्तकर्ताओं को ऐसे अंतरालों पर प्रकट करेगी जो न्यासियों और बोर्ड द्वारा विनिर्दिष्ट किए जाएँ;

(ix) न्यासियों को ग्राहित प्रबंध कंपनी से ग्राहित प्रबंध कंपनी द्वारा फ्रॉन्टिपार विभिन्न पारस्परिक निधि की विभिन्न स्कीमों की संक्षियाज्ञों के संबंध में सभी जानकारी ऐसे अंतरालों पर और ऐसी रीति से ग्राहित करने का ग्राफिकर होगा जो न्यासियों द्वारा इह सुनीरक करने के लिए अपेक्षित है कि ग्राहित प्रबंध कंपनी न्यास विलेन और विनियोगों के उपर्योगों का पालन कर रही है ;

(x) ग्राहित प्रबंध कंपनी न्यासियों को पारस्परिक निधि की स्कीमों के फलांकरण पर लिमाही या ऐसे अंतरालों पर रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी जो न्यासियों या बोर्ड द्वारा अपेक्षित हों ;

(xi) न्यासी को विनियोगों के अनुसार बोर्ड के अनुग्रहन से बेक्स विनिर्दिष्ट दशाएँ में ग्राहित प्रबंध कंपनी को परद्युत करने की शक्ति होगी।

पांचवीं मुस्लिमी

प्रारंभिक प्रतिभूति और विनियम बोर्ड
(पारस्परिक निपियां) विनियम, 1996
[विनियम 18(22), 25(16), 68(ज)]

ग्राहक संहिता

1. यासियों प्रौद्योगिक स्टॉकों का मालन, प्रयोगन, जब्धन या अर्थात् प्रतिक्रियाएँ के संबंध में स्टॉक के सभी ग्रन्ट्हादारों के लिए ऐसे हमें क्षमाद् प्रदायकों, प्राप्ति प्रबंध संघरणों के विनियमों, न्यायी वर्तन के नियमों या न्यायी नामों के नियमों, सहज व्यक्तियों के हित में ग्रन्ट्हादारों के विशेष जांकों के लिए में नहीं होना चाहिए ।
2. यासियों प्रौद्योगिक प्रबंध संघरणों को सभी ग्रन्ट्हादारों को विनियम नीतियों, विनियम उल्लंघनों, वित्तीय संशोधन प्रौद्योगिक स्टॉक के सम्बन्ध क्रमकाल के बारे में सख्त भाग में उत्तराधिक ग्रन्ति जानकारी का आवश्यक, सही, समीरिता या में उत्तराधिक ग्रन्ति ग्रन्ट्हादारों का लाभ नहीं होना चाहिए ।
3. यासियों प्रौद्योगिक प्रबंध संघरणों को दलालों को, सहजों के साथ कारबाह के अव्याधक संकेतण और कुछ विनियमकरणों के बालं किसी स्टॉक के ग्राहकों को अव्याधक धाराओं में प्री में लगा चाहिए ।
4. यासियों प्रौद्योगिक प्रबंध संघरणों को स्टॉकों के क्रमकाल का न्यूनतम रूप में इस के विवेच से बना चाहिए प्रौद्योगिक ग्रन्ट्हादारों के लिए जो महत्वपूर्ण रूपना चाहिए ।
5. यासियों प्रौद्योगिक प्रबंध संघरणों को नक्दी प्रौद्योगिक तंत्रों के स्कोरिंग शृणकरण को अवश्य सुनीचत करना चाहिए ।
6. न्यायी प्रौद्योगिक प्रबंध संघरणों कारबाह का निष्पादन करेंगे और प्रस्ताव दस्तावेजों में कौपित विनियम उद्देश्यों के प्रस्ताव विनियम रूपों प्रौद्योगिक ग्रन्ट्हादारों के लिए में विनियम का विनियम करेंगे ।
7. यासियों प्रौद्योगिक प्रबंध संघरणों को अन्य स्टॉकों का विकास; विषय या किसी विनियमकर्ता से उद्दोगित मरने वाले किन्हीं प्रौद्योगिक सम्पत्तों का उपयोग नहीं करना चाहिए ।

जड़ी भूमूली

भारतीय प्रतिभूति और विनियोग बोर्ड
(पारस्पारिक निधि) विनियम, 1996

【विनियम 30(1)】

विज्ञापन संहिता

1. विज्ञापन सच्चा, उचित और स्पष्ट होगा और उसमें कोई ऐसा ऋण, वक्तन या एवं नियमानुसार मंतव्यिष्ट नहीं होगा जो गतत या भ्रामक है।
2. कोई विज्ञापन भ्रामक समझा जाणा यदि उसमें निम्नलिखित मंतव्यिष्ट है :-
 - क) भ्रामक ऋण : पारस्पारिक निधि के कार्य निष्पादन या क्रियाकलाप के बारे में ग्रावरेक स्पष्टीकरण या सापेक्ष ऋणों के ग्रावरेक में किया गया व्यापदेशन और जो उस कार्य या क्रियाकलाप का उससे बढ़ा-चढ़ाकर किया दर्शन करता है, जो वास्तव में है।
 - ख) किसी भूमूले कार्य-निष्पादन का गतत किया या उसका इस रीति से किया जिससे वह विविधत होता है कि भूमूले सामिलान या आवधि की भविष्य में फ़्रारबृत्त होगी।
 - ग) विनिधानों से संबंधित महत्वपूर्ण जांचियों का साथ-साथ वर्णन किये बिना पारस्पारिक निधियों की स्थिति में घूमों के स्थानी होने या उनमें विनिधान फ़र्ज के फालों का क्षम देने वाले ऋण।
3. विज्ञापन की अंतर्वस्तु और स्पष्ट-विधान या ग्रिंट इस प्रकार परिकल्पित नहीं होगा जिससे भ्रांति होना समाधि हो या किसी ऋण के वास्तविक मार्ग के बदल जाने की समाजना हो। विज्ञापनों में ऐसे ऋण नहीं होंगे जो प्रत्यक्ष रूप से या विषया द्वारा या जांच द्वारा विनिधानकर्ता को भ्राम में डाल दें।
4. विकल्प साहित्य में केवल वही जानकारी मंतव्यिष्ट हो सकती है जिसका मार्ग इस संदर्भ के मुद्रामार्ग निधियों के दाता विज्ञापनों में सम्मिलित किया गया है।
5. विज्ञापन इस प्रकार नहीं बनाए जाएं जिसमें विनिधानकर्ताओं के मुद्रामार्ग या जान के ग्रावरेक का व्योग हो : उनके दाता विनिधानकर्ता उन्हें या विनीय प्राप्तियों में सुनिज हो जाएंगे जो सम्भव हैं इसलिए इस सावधानी बतानी चाहिए कि विज्ञापन सदर, सर्किन ग्राह कीकरण द्वारा

में विर जाते हैं। लकड़ी की या विधिक राष्ट्रकर्ती का जीवन भाषा के प्रयोग प्रौढ़ फैला देते हैं, जिससे विनियोगकर्ता ज्ञानपूर्ण हों, जोगति करने में अच्छा चाहते हैं।

6. विज्ञान में ऐसी जानकारी नहीं होती जिसकी उल्लंगन किसी भी विद्यार तक भारणामो पर निर्भर करती हो।
7. विज्ञान में स्पष्ट रूप से या विविध रूप से एक नियंत्रण की उल्लंगन किसी भूत्य नियंत्रण से नहीं की जाणी जब तक कि उल्लंगन नियंत्रण नहीं हो प्रोत्तु उल्लंगन से सुरक्षित समीक्षा जानकारी विज्ञान में सीमित नहीं की गई हो।
8. नियंत्रणों को जो प्राचिनियों के बारे में विज्ञान करती है, जोकि मूल एवं वास्तविक लम्बाई, इत्य कीमत पर वास्तविक प्राचिन और प्रत्याग्र भी वास्तविक फलांभ दर जैसे प्राचिन परीकलनों का दी उपयोग करता चाहिए।
9. पारस्परिक नियंत्रण समीक्षा में नियंत्रण के व्यवस्थाएँ, न्यासों, प्रबन्धक और/या वित्त संलग्नकार के नाम उपलब्धित करेंगी जिनमें इन संसाधनों की विधिक प्राचिनियत और वाक्यविवर, उन्हें से हर एक के बीच विधिक रूप से और उनके मूल्यों, उत्तराधिकों और वायदामों के अनुसार घन्ता स्पष्ट रूप से दी जाएं।
10. समीक्षा विज्ञानों में इस प्रथम रूप स्पष्ट करने भी होता है कि सभी पारस्परिक नियंत्रणों और प्रतिभूति विनियोग बाजार जोखिमों के ग्राधीन होंगे और ऐसा कोई ग्राधासन नहीं हो सकता कि नियंत्रण के उद्देश्य प्राप्त कर तिर जाए।
11. तथापि यदि विज्ञान में कोई पारस्परिक नियंत्रण भवी विनियोगकर्ताओं को किसी फलांभ या प्राचिन की उल्लंगन दर की गारंटी या ग्राधासन देती है तो ऐसी गारंटी का समर्पण करने के तिर संसाधन भी उपलब्धित करने चाहिए।
12. यदि कोई विद्यान पारस्परिक नियंत्रण विज्ञानों में उस नियंत्रण का मूल्यवैकल्प-निष्पादन उपलब्धित करती है तो प्रत्याग्र/प्राचिन की दरों की सांख्या करने के लिए ग्राधार और दिर्ग ग्राधारों (यदि कोई हो) इस करन सहित स्पष्ट रूप से उपलब्धित करने चाहिए कि ऐसी जानकारी भविष्यकर्ताओं परिणामों की ग्राधीन: सूक्ष्म नहीं है और इस भूत्य विनियोगों से उल्लंगन के लिए ग्राधयक ग्राधार नहीं देती है।
13. पारस्परिक नियंत्रण या इसके प्रयोगके या ग्राचिन प्रश्न सभी द्वारा बारी स्थिर ग्राधे ये सभी विज्ञानों में सोचते होते कि "पारस्परिक नियंत्रणों और प्रतिभूतियों में सभी विनियोग बाजार जोखिमों के ग्राधीन हैं और सभी का शुद्ध ग्राचिन मूल्य प्रतिभूति बाजार को प्रभावित करनेवाले तथां और वहों के ग्राधार पर उपर या नीचे हो सकता।"

14. स्कॉप के संबंध में जारी किये गये सभी विज्ञानों में प्रत्यावर दस्तावेज़ में खालीपाल चौकियाँ तथा को प्री निम्न देखाई स्फर्तों के साथ आगे बढ़ से प्रवर्द्ध करना चाहिए :-
- (क) _____ बेकल स्कॉप का नाम गवाह है और इसी मी रीति में स्कॉप के गुण, उसका भावी स्वरूप वा प्रत्याप्त उपर्युक्त स्फर्त है; और,
- (ख) मृप्ता विनियोग करने से एहते प्रत्यावर दस्तावेज़ छोड़े।
15. विनियोग 15 के अनुसार मृप्ता प्रत्याप्त वेळा के गवाहों के विवाद किसी स्कॉप को प्रत्याप्त का कोई मारवास्तु उपर्युक्त करने की दृष्टि से कोई नाम नहीं दिया जा सकता है।
16. कोई भी विज्ञान ऐसे स्फर्त के साथ जारी नहीं किया जायेगा कि जिस अवधि में स्कॉप अधिकार के तिर खूबी है, उस अवधि के दौरान स्कॉप अधिकार वा अत्यधिकार की गयी है।
17. यदि अधिकार-अवधि के दौरान प्रावेशक वा समूह संघर्षों में से किसी ओर को सहयोग की सहयोग संभवी द्वारा नियम विज्ञान जारी किया जाता है तो पारस्पारिक निधि की स्कॉप वा स्वयं पारस्पारिक निधि का कोई संर्भग नहीं दिया जायेगा, अत्यधि इसे निर्णय विज्ञान सम्मा जायेगा।
18. यदि स्कॉप प्रारंभ होने से पूर्व प्रावेशक द्वारा जारी गिया विज्ञान में इसके द्वारा प्रावेशिक पारस्पारिक निधि वा इसकी प्रारंभ की गयी / प्रारंभ की जनवेली किसी स्कॉप का संर्भग दिया जाता है तो इसमें इस ग्रावर का स्फर्त होगा कि प्रावेशक के कार्य-नियावन का अधिकार पारस्पारिक निधि के प्रत्यारित कार्य-नियावन वा इसकी किसी स्कॉप से कोई संबद्ध नहीं है।
19. पारस्पारिक निधि वा इसकी ग्रावर संबंध ओर को साथीनियावन पर विज्ञान में पिछले कार्य नियावन की तुलना इस विनियोग के अनुसार प्रति सारी व्यक्ति के द्वारा पर ही की जायेगी। एहत ग्रावर मूल्य के तिर विज्ञान में स्कॉप का पिछला तथा नवीनतम् एहत ग्रावर मूल्य अवश्य उपर्युक्त करना चाहिए। प्रावित-संग्रहन इन विनियोगों में उपर्युक्त अनुसार की जायेगी।

सालीं अनुसूची

भारतीय प्रतिपूति और विनियम बोर्ड

(पारस्परिक निधि) विनियम, 1996

[विनियम 44(1)]

विनियमों पर प्रतिवेदन

1. इष्ट लिखतों में विनियम केवल साथ निर्धारित इष्ट लिखतों में किया जाना चाहिए, जो भारतीय के ग्रधन से क्रियाकलाप करने के लिए प्राप्तिकृत इसी साथ निर्धारण लिखतों द्वारा निर्धारित विनियम श्रेणी से नहीं हो।

एंटु यह कि यदि इष्ट लिखत का साथ निर्धारण नहीं किया जाता है तो विनियम के लिए आसित प्रबंध रूपनी के बोर्ड का विनियोजित मन्त्रालय लेना चाहिए।

2. किसी भी पारस्परिक निधि को इसकी सभी स्तरों के ग्रधन किसी रूपनी की प्रतिपूति का प्रत्यक्ष प्रबंध रूपनी के दस प्रतिशत से अधिक का स्वामी नहीं होना चाहिए।
3. एक ही पारस्परिक निधि में एक स्तरों से दूसरे स्तरों में विनियमों के ग्रतरण की प्रत्यापत्ति केवल तब दी जायेगी जब,-
 - (क) ऐसे ग्रतरण द्वारा ग्राधार पर उत्कीर्ण लिखतों के लिए वर्तमान बाजार मूल्य पर ही किये गये हों।
 - (ल) इस प्रकार ग्रंतीत प्रतिपूतियों स्तरों, जिसमें ऐसा ग्रतरण किया गया है, के विनियम-उद्देश्य के ग्रन्ति होंगी।
4. कोई स्तरों उसी आसित प्रबंध रूपनी या अन्य किसी पारस्परिक निधि के ग्रधन दूसरी स्तरों में कोई फौस प्रारिति मिये विनायक रूप संसंगी, एंटु यह कि उसी प्रबंध तंत्र के ग्रधन सभी स्तरों द्वारा या किसी अन्य आसित प्रबंध रूपनी के प्रबंध तंत्र के ग्रधन स्तरों में किये गये सकल ग्रातरस्त्रीय विनियम पारस्परिक निधि के ग्रद्ध आसित मूल्य के 5% से अधिक नहीं।
5. किसी भी स्तरीय की बाजात प्रारंभिक निधि व्य उस स्तरीय के ग्रधन लकड़ी गयी निधि के छह प्रतेशत से अधिक नहीं हो सकेगा।
6. प्रत्येक पारस्परिक निधि सूखीयों के ग्राधार पर प्रतिपूतियों का इव और विक्रय करेंगी और, इव के सभी ग्रामों में संबंधित प्रतिपूतियों की सूखीयों लेंगी और विक्रय के सभी ग्रामों में प्रतिपूतियों सूख करेंगी तथा किसी भी बाजात में स्वयं को ऐसी स्थिति में रहेंगी जहाँ उसे ग्रन्ति विक्रय या बकला संव्यवहार करना एंटु या बकल कित में लाना एंटु।

7. प्रत्येक पारस्परिक निधि संबंधित स्कीम में पारस्परिक निधि के नाम में प्रतिपूतियों जरूरी वा ज़रूरीत करेगी, जहाँ प्री विनिपातों का दीर्घावधि स्वयं का होना आवश्यक हो ।
8. पारस्परिक निधि, स्कीम के विनिपात-उद्देश्यों के अनुसार प्रतिपूतियों में स्कीम की निधियों का जापानेश्वरण लंबित रखकर अनुसृति वाणिज्य बैंकों की ग्राहकावधि ज्ञाराशीयों में स्कीम की निधियों का विनिपात कर सकता है ।

ग्राही जनसूची

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड
(पारस्पारिक निधि) विनियम, 1996

[विनियम 47]

विनियम मूल्यांकन ग्रन्ति

पारस्पारिक निधि निम्न मूल्यांकन ग्रन्तियों के जनसार इसके विनियमों का मूल्यांकन होगी :

स्तरीय का शुद्ध ग्राही मूल्य, मूल्यांकन तारीख को बकाया योग्यों की संख्या से स्तरीयों की शुद्ध ग्राहीयों के विभाजन द्वारा क्या अवधारित ।

1. व्यापारित प्रतिभूतियाँ :-

- (i) प्रतिभूतियाँ स्टॉक एस्सेंज में ग्राही उत्कृष्ट व्यापार पर मूल्यांकित की जायेंगी ।
- (ii) जब प्रतिभूतियाँ एक से ग्राही ग्राही व्यापार स्टॉक एस्सेंज पर व्यापारित की जाती हैं, प्रतिभूतियाँ स्टॉक एस्सेंज में, जहाँ प्रधानतः प्रतिभूतियों का व्यापार किया गया है, ग्राही उत्कृष्ट व्यापार पर मूल्यांकित की जायेंगी । उपर्युक्त स्टॉक एस्सेंज का चयन ग्राही प्रबंध कंपनी के निषेधायमान होगा, परंतु चयन के कारण लिंगित रूप में ग्राहीलिंगित किये जाने चाहिए । तथापि, स्टॉक एस्सेंज में, जहाँ विनियम के मूल्य में ग्राहीकांश प्रधानतः व्यापारित होते हैं, उत्कृष्ट मूल्यों पर मूल्यांकित सभी स्तरीयों के लिए कोई असील नहीं होगी ।
- (iii) किसी विशेष प्रतिभूति के मूल्यांकन के लिए एक बार स्टॉक एस्सेंज का चयन हो गया हो तो ग्राही प्रबंध कंपनी द्वारा एस्सेंज के पारकरण के कारण लिंगित रूप में ग्राहीलिंगित किये जायेंगे ।
- (iv) जब किसी विशेष मूल्यांकन दिवस पर प्रतिभूति चयनित स्टॉक एस्सेंज में व्यापारित नहीं की गयी हो, जिस मूल्य पर वह दूसरे स्टॉक एस्सेंज में व्यापारित की गयी हो, उस मूल्य का उपयोग किया जा सकता ।
- (v) जब विशेष मूल्यांकन दिवस पर किसी स्टॉक एस्सेंज में प्रतिभूति का व्यापार नहीं किया गया है, जिस मूल्य पर उसका व्यापार व्यापारित चयनित स्टॉक एस्सेंज में या किसी ग्रन्ति स्टॉक एस्सेंज में संबंधित पूर्व दिन को किया गया था, वह मूल्य उपयोग में लाया जा सकता है, परंतु यह कि ऐसी तारीख मूल्यांकन तारीख से साठ दिनों से फूले की न हो ।

2. 'ग्रन्थार्थियों' :-

- (i) जब मूल्यांकन तारीख मेर्व साठ लिनों की प्रवापि में किसी स्टॉक एक्सचेंज में प्रतिमूलि का व्यापार नहीं किया गया है, तो ऐस्युप को 'ग्रन्थार्थित' मौजूद ही समझा जाए ।
- (ii) ग्राहित प्रबंध समीक्षा के बोर्ड द्वारा मनुष्योंद्वारा सिद्धांतों पर आधारित उपलब्ध मूल्यांकन घटातीयों के प्राप्तार्थ प्रबंध समीक्षा द्वारा ग्रन्थार्थित प्रतिमूलि का मूल्यांकन "समावर्तक" किया जायेगा । ऐसे निष्ठा को बोर्ड के सम्बन्ध में प्रतिवेक एक प्रबंध किया जाना चाहिए और इस प्रकार मूल्यांकित प्रत्येक प्रतिमूलि की बाबत सम्बन्धित मॉडलों का संरक्षण प्रदर्शित करना चाहिए । "समावर्तक" मूल्य के परिनियोगण के लिए उपरोक्त में लारी गयी फलातीयों की व्याख्या द्वारा सम्बन्ध-सम्बन्ध पर मनुष्यों की जानी जायेगी और लेतारीको द्वारा निर्धारित के वापिस लेतो पर उनकी विपर्यास में "मूल्य और शुल्कमूल्य" के एवं रिपोर्ट की जानी चाहिए । ग्रन्थार्थित प्रतिमूलि के मूल्यांकन के प्रबोधन के लिए निम्नलिखित सिद्धांत उपलब्ध जाने चाहिए :-
- (क) इंवेस्टोरों समान्यतः उपलब्धों के पूर्णकरण के प्राप्तार्थ पर मूल्यांकित की जायेगी, मुकेते दो या शुल्क ग्राहित मूल्य के साथ-साथ, पूर्णकरण के प्रबोधनों के लिए मूल्य या तृतीय व्यापारित प्रतिमूलि के उपलब्ध मनुष्यों और निम्नता तरलता के लिए संकेत बढ़ावे के साथ, का प्रयोग करते हुए ।
- (ख) मूल्य लिक्विडों को समान्यतः पौरकक्षा प्राप्तार्थों, तृतीय व्यापारित प्रतिमूलि के लिए नियमित दौरेवाले पूर्णकरण घटक और निम्नता तरलता के लिए उपलब्ध बढ़ावे के साथ मूल्यांकित किया जायेगा;
- (ग) मूला बाजार लिक्विडों का मूल्यांकन एक से प्राप्तिक व्यक्तिरीय या इतान मेर्व प्रतिमूलि को प्राप्तार्थ पर किया जा सकेगा;
- (घ) पौरकक्षीय लिक्विडों और बोर्डों की बाबत संपर्कनीय और से प्राप्तिनीय घटकों का फ्रेग-सम्बन्ध मूल्यांकन किया जायेगा । ग्राहितप्रतिमूलि घटक का मूल्यांकन उनमी प्राप्तार्थ द्वारा किया जायेगा, जो लृप्त लिक्विड का व्याप्तिक घटक का मूल्यांकन उभी आधार पर किया जायेगा जो इंवेस्टोरों लिक्विड को प्रयोग्य होता । शब्द 'मपीवल्यूम' के द्वारा प्राप्तिक इंवेस्टोरों लिक्विड को विद्यमान लिक्विड, जो व्यापारित है, के साथ सम्बन्ध एवं व्यापारित किया जायेगा; अन्यतों लिक्विड के मूल्य को इंवेस्टोरों ग्राहित के द्वारा लिक्विड और व्यापार-प्रक्रिया के लिए उपलब्ध बढ़ावे के द्वारा ग्राहित किया जा सकता है । ऐसी नियमों के मूल्यांकन में दोनों एहत तथा के मध्य संबंध व्यक्तिगत ही भास्त्र में रखा जाना चाहिए;

- (c.) निकाले से सख्त शरोतों के लिए प्रैमिका उत्पादने वालों की बातें जारी करन्होंका गंभीर काम है यह यहाँ पर किया जा सकता है, जो उन वालों को जिसमें से बातों का प्रयोग करने पर नदेह इसे उल्ली राशि अपेक्षी की है, जो प्रबंधन उत्पादने पर प्राप्त होता है। मेरीजनरी डिविडों की बातें ज्ञानांक उत्पादने वाले के साथ लट्टा (उत्पादन उप-ऐरोडक (३) व स्टोरेज फ्लूमा) इस प्रबंधन के तेजा-जांचे के लिए जो जारी की गयी है उनमें से इसने प्रवर्ण वर्गमाला द्वारा दर्शाये गए नियमों से भविष्य प्राप्ती लाना चाहिए।
- (d) जहाँ लिकल "पुःप्र" माध्यम पर प्राप्त होता है, वहाँ निकालों का मूल्यांकन इन्वेंटरी के तारीख तक ग्राह्य बाज़ के खोलों के बाद प्रैमिकों का मूल्य पर ही किया जाए। जहाँ लिकल "पुःप्र" माध्यम पर कोई योग्य ही जहाँ लिकल "पुःप्र" माध्यम (पुःप्र) की तारीख तक प्राप्त बाज़ की खोलों के बाद प्रैमिक के मूल्य के बाद इनके लिए मूल्यांकन ज्ञानांक देता है। यदि उन्नीसी मूल्य, मूल्य से प्राप्तिक है तो अवधियां भी व्यवस्था प्रबंधन की जानकारी देती हैं। यदि उन्नीसी मूल्य मूल्य से नियमित है तो प्राप्तिक प्रबंधन नियम लाना चाहिए।

3. आ तक अपना व्यापार सही किया जाता, "सांघिका" शब्दों के बाब्त की परामर्शन नियमकाल सो जहाँ चाहिए :

$$\text{मूल्य सा.} = \frac{\text{मूल्य सा.}}{\text{मूल्य भु.}} \times (\text{मूल्य भु.} - \text{मूल्य ग्र.})$$

जहाँ :

मूल्य	=	सांघिका मूल्य
सा.	=	प्रस्तावित ग्रामिकाएँ की मूल्य
भु.	=	धारात घूल देनारों की संख्या
मूल्य भु.	=	पूर्व-सांघिकार मूल्य
मूल्य ग्र.	=	सांघिकार प्रबंधन मूल्य

जहाँ सांघिकार शेषों को विद्यान शेषों के लाभ सम्बन्धित से नहीं जाना जाता है, सांघिकार शेषों के मूल्य के लिए उपकरण सम्बन्धित किया जाना चाहिए। जहाँ सांघिकार शेषों के लिए ग्रामिकार करने का रहा, तरु उन्हें व्यापक रूप से विनियोग किया जाता है और तज्ज्ञ भा व्यापार किया जा रहा है, सांघिकार शेषों का मूल्यांकन तज्ज्ञ मूल्य पर किया जा सकता है।

4. शुद्ध प्राचित मूल्य के साथन के लिए मूल्यांकन तारीख तक प्रोत्पृष्ठ समीक्षा द्वारा और प्रायों पर विवाद लिया जाता है। इस मूल्यांकन के लिए प्रबन्ध संस्कृत और मूल्य प्राविधिक व्याख्याओं नेसे मूल्य व्याख्याओं का प्रोत्पृष्ठन निर्दिशन प्राप्ति पर लिया जाता रहता है, मूल व्याख्याओं और साथ के प्रोत्पृष्ठन की प्रावधानता नहीं है, परन्तु यह कि प्रोत्पृष्ठन न करना शुद्ध प्राचित मूल्य को परिणामितों पर 1% से अधिक ग्राहक न डालता है।
5. प्रतिपादियों द्वारा शुद्धितों की सहयोग में कोई भी परिवर्तन संवेदनारांकी तारीख की मुशायारी फूली मूल्यांकन तारीख से प्रारंभित, शुद्धियों में आमिलताप्रद लिया जाए। यदि शुद्ध प्राचित मूल्य प्रबन्धन की मार्गीत देना यह स्पष्ट नहीं है तो आमिलतेम को संवेदनारांकी तारीख के मुशायारी मात्र दिनों की अवधि तक विसंकेत रखा जा सकता है, परन्तु यह कि आमिलतेम के प्रारंभित के तौर पर शुद्ध प्राचित मूल्य परिणाम 2% से अधिक तक ग्राहकित नहीं होता।

स्वीकृति

भारतीय प्रतिपक्ष और विनियोग बोर्ड

(प्रारम्भिक निपि) विनियु, 1996

[विनाय 50(3), 55(4) (iii)]

लेखा नीतियां और मन्त्र

- (क) विनियोग विभाग के ग्रामीणों के लिए प्रारम्भिक निधि सभी विनियोगों को बाजार के लिए नियम करने की प्रोत्ता विनियोगों को तुलनात्मक बोलता है तो जाहिर है। तथांग, यूंक विनियोगों के प्रारम्भिक रूप में अधिक, बहुत न किये गये प्रतिलाप का विभाग इसी तरीके से ज्ञाना है, किंतु विभाग योग्य रूप के इसके समय इस प्रकार के प्रतिलाप के लिए उपलब्ध किया जाना चाहिए।

(ख) किसी स्कॉलर ड्राय उपचारित लभाने प्राप्त की एवं लभाने प्राप्त पर लभाने प्राप्त होने की तारीख को इसी बोलते रूपके लिए उपलब्ध होने की तारीख को मानका देनी चाहिए। विनियोगों, जो स्टॉक एक्सचेंज में उपलब्ध नहीं किये गये हैं, के लिए लभाने प्राप्त को बोलता की तारीख को दी गयका देनी चाहिए।

(ग) सभी डिस्काउंट विनियोगों के प्राप्ति में जब का प्रदेशवन इनके प्राप्ता था हो, जब-जब वह उपचारित होती है, फलता चाहिए। प्रतः जब से विनियोग उपचारित जाते हैं, तब इन्हें बाबू की नियम तारीख से ब्यासी तक ही प्राप्ति के लिए मंदिल बाबू की रुप के जब तक तो रह किएका नहीं माना जाना चाहए किंतु उपचारित व्यापक लेवल पर ही नियम उपचारित हो।

(घ) विनियोगों की धारप लाभ और विनियोगों के विकल्प एवं प्रतिलाप ग्राम द्वारा का ज्ञानात्मक रूप के लिए उपचारित ग्राम जनसंख्या का चाहिए।

(ङ.) विनियोगों के विकल्प और रुप के लिए सभवानारी का उसी रूप में मानका देनी चाहिए जैसे व्यापार-तारीख में हो, और न कि उस रूप में जैसे वह नियम तारीख में हो, ताकि विकल्प वर्ष के दोनों व्यापारीत सभी विनियोगों का प्रभार आमतौरपक्ष किया जाए और उस वर्ष के विकल्प विवरण में प्रतिविविध हों। जड़ों स्टॉक बाजार के बाहर विनियोग मंदिलार किये जाते हैं, उद्घारणात्मक नियमी संधि की प्रारंभिक विकल्प और रुप के नियम नियोग की प्रारंभिक किये जाने वाले संघरणहर, जहाँ विकल्प की दशा में उपी तारीख के संघरणहर आमतौरपक्ष किये जाने चाहिए जिस तारीख को स्कॉलर मूल्य के समय के लिए प्रबन्धनीय व्यापका प्रारंभिक रूपता करती है, रुप की दशा में उपी तारीख को जब स्कॉलर रुप के आपांगों के साथक के लिए प्रबन्धनीय प्रारंभिक व्यापका को सूझागों के लिए प्रबन्धनीय व्यापका प्रारंभिक रूपता है,

(ङ) बोनस रेटरी, जिसके लिए स्कॉलर हस्तार होती है, को उपी मानका दी जानी चाहिए जब प्रबन्धनीय रेटर, जिन पर बोनस हस्तारी प्रोत्ता देती

है, स्टॉक एसेक्यू में पूर्व-बेस स्प्राथार पर व्यापारित किये जाते हैं। इसी प्रकार साफिकार छक्कारियों से तभी मानवता दी जानी चाहिए जब फूल खेल, जिन पर साफिकार छक्कारी प्रोफेशन होती है, पूर्व-साफिकार स्प्राथार पर स्टॉक एसेक्यू में व्यापारित किये जाते हैं।

- (८) लड़ों विनिधानों पर प्राप्त माय प्रोफेशन की गयी हो और नियम तारीख के तद 12 फ़ैसों की अवधि तक प्राप्त रहों की गयी हो, लड़ों स्प्रकार प्रोफेशन माय को मापदंशी जाते में नग्ने डालकर प्रवापन करना चाहिए और माय का ऐसे विनिधान की बाबत माय का और साफिक प्रोफेशन नहीं किया जाना चाहिए।
- (९) जब विवृत स्फीट के मापते में यूनिट लेने जाते हैं तो यूनिट के विकल्प मूल्य और अंकित मूल्य पूँजी जाते में ज्ञा करते हैं यदि भनात्मक हो तो आरबिंतियों में ज्ञा किया जाना चाहिए और यदि रुणात्मक हो तो आरबिंतियों में नग्ने डालना चाहिए। इसी प्रकार जब ऐसी किसी स्फीट की बाबत यूनिट नुः यारदि जाते हैं तो अंकित मूल्य पूँजी जाते में ज्ञा करते हैं यूनिट के रुप मूल्य और अंकित मूल्य के अंतर को, यदि भनात्मक हो तो आरबिंतियों में नग्ने डालना चाहिए और यदि रुणात्मक हो तो आरबिंतियों में ज्ञा करना चाहिए।
- (१०) विवृत स्फीट के मापते में जब यूनिट लेने जाते हैं विकल्प ज्ञानों का एक उपयुक्त ज्ञान स्पानीकरण लेने में ज्ञा किया जाना चाहिए और जब यूनिट नुः यारदि जाते हैं तो उपयुक्त राशि को स्पानीकरण लेने में नग्ने डालना चाहिए। इस कारण यह ज्ञानीकरण को मापदंशी लेने में ज्ञा करना चाहिए या नग्ने डालना चाहिए। मापदंशी लेने में नग्ने डालनी ज्ञा गी यदि स्पानीकरण लेने में ज्ञानीकरण को निर्भय की रुद्र माय को घटाना या बढ़ाना नहीं चाहिए लेकिन उसे केवल विनिधानों या ज्ञानीकरण की राशि का स्पाधेलन करना चाहिए। मतः इसे निर्भय की माय के ग्रवधारण के बाब ही मापदंशी लेने में दर्शाना चाहिए।
- (११) संसूत स्फीट में, जो यूनिटधारकों को उनके मापने यूनिटों के पूर्व मोन या पुनः रुप का विकल्प देती है, यूनिटों का सम्मूल्य पूँजी लेने में ज्ञा किया जार और रुप मूल्य तथा सम्मूल्य में अंतर को, यदि भनात्मक हो तो आरबिंतियों में नग्ने डाला जाए और यदि रुणात्मक हो तो आरबिंतियों में ज्ञा किया जार। उपरिलिख मार्गी व्यायों के स्पानीकरण ज्ञान को आरबिंतियों में अतिरिक्त किया जाना चाहिए ताकि उम लेने में स्पानीत मानीरेष, शेष ब्रकाया यूनिटों की संख्या से स्पानीकरण ढूँ।
- (१२) अंजित या यारदि गये विनिधानों की लागत में दलाली, स्टाप्स प्राथार और दलाल के रुद्र-ठिप्पण में ग्राहक के रुप में शामिल किया गया कोई भी प्राथार सम्मानित होना चाहिए। निजी रुप में नियोंनिज रुप लिंकों की बाबत किसी प्रस्तावित प्रारंभिक दृष्टि को विनिधान की लागत से घटाया जाना चाहिए।

- (3) जब स्कैम का चालन सही है, वहाँ हमीदारी स्थीरन को आपसनी के स्पृह में मनका देनी चाहिए। जहाँ स्कैम का कोई चालन नहीं है, वहाँ प्राप्त पूरे स्थीरन को और चालन के लिए प्रयोग्य अंश मत्र नहीं, विनिधन की तरफ से घटना चाहिए।

सर्वीं प्रूफ़ों

**भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड
(पारस्परिक नियन्त्रण) विनियम, 1996**

[विनियम 52(5)]

प्रारंभिक नियंत्रण व्यवस्था

प्रारंभिक नियंत्रण व्यवस्था के मुख्य में तेज़ा व्यवहार :-

- (क) प्रारंभिक नियंत्रण उसी स्कोर्प में शुरू हो के दो बाँड़े एक भार राईल और दूसरी भार राईल के मध्य या तो "भार" या "भारद्वान ग्राहक" या, या प्रारंभिक ग्राहक दो स्कोर्प ग्राहक का संकेती, फिर उह कि विनियमकर्ताओं के लिए शु.ग्रा.प्र. (शुद्धार्थि प्रूफ़) पर ऐसे भार को विभागों का प्रज्ञाव दस्तावेज़ में निम्नीं घटित इच्छण के ग्राहक से व्यष्ट रूप में स्वीकृत दिया जाना चाहिए। आंकड़ प्रबंध नियंत्रण ग्राहक; प्रारंभिक स्कोर्प ग्राहक का संकेती जिसमें भार का एक प्रश्न ग्रार्डिस्ट प्रबंध नियंत्रण इच्छा द्वारा शेष स्कोर्प द्वारा इच्छा दिया जाए। जबकि ऐसी स्कोर्प "भारद्वान" स्कोर्प बनाने के लिए इह नहीं होती और "भारोत" स्कोर्पों के रूप में उपरोक्त में व्यवहारित सी जाती है। भारद्वान स्कोर्प के ग्राहकों द्वारा, प्रारंभिक नियंत्रण व्यवस्था द्वारा ग्रार्डिस्ट प्रबंध करनी चाहीए।
- (ख) "भार ग्राहक" दो ग्राहक की गयी संकृत स्कोर्प के लिए प्रारंभिक नियंत्रण व्यवस्था को ग्राहक के दोनों सार्वांकित ग्राहक दो कर्तव्योंपरि किए जाएं।
- (ग) संकृत उह कि स्कोर्प में कार्यकाल के दौरान ग्राहक; ग्रोव के लिए प्रारंभिक होने की स्थिति में सुमान ग्राहकों के दौरान बकाया शुरू होनी प्रारंभिक संकृत राशि भी संतुष्टा पर विचार करते हुए परिस्थित किया जाए।
- (घ) "भार" ग्राहक पर ग्राहक की गयी संकृत स्कोर्पों के लिए प्रारंभिक नियंत्रण व्यवस्था ग्राहक व्यवधान में ग्रार्डिस्ट ग्राहक से ग्रार्डिस्ट परिस्थित किए जाएं। विकृत स्कोर्पों की कालावधि के दौरान उपरोक्त नियंत्रण व्यवस्था परिस्थित नहीं किये जाएं।
- (ङ) "भार" ग्राहक पर ग्राहक की गयी संकृत और विकृत स्कोर्पों के मध्यमे व्यवस्था का प्रशिरितोंपरि ग्रार्ड शु.ग्रा.प्र. (शुद्धार्थि प्रूफ़) की संगति में सम्मानित किया जाए। तथापि, ऐसा ग्राहक इन विकृतों के विनियम 51 के ग्रार्डिस्ट प्रबंध कंपनी की विनियम

प्रबंध और सलाहकार फोर्म के अवधारण के प्रयोग के लिए वा व्यक्ति की संघर्ष के अवधारण के लिए श.आ.प. में समीक्षित नहीं किया जाएगा ।

- (d.) "भारतीन" प्रधार पर भारत सी गवीं स्कीमों के लिए मार्गित प्रबंध संघर्ष श.आ.प. के 1% से प्रारंभिक आंतरिक प्रबंध फोर्म उद्योगों का संघर्षी । मार्गित प्रबंध संघर्षों को इव के बाद इहले वार्षीय के दौरान मोर्च के लिए समाजिक जास्तीनित विकास प्रमाणों को उद्योगीन करने का द्वितीय द्वेष शाहिर, जो इहले वर्ष में मोर्च प्रगतियों के 4% दूसरे वर्ष में 3%, तीसरे वर्ष में 2% और चौथे वर्ष में 1% से प्रारंभिक हो ।
- (e) मार्गित स्कीमों के मान्त्रे सभी परिवारी विवाह प्रमाणों का वहन जानेवाले: स्कीम द्वारा भौत भारतीन स्कीमों के मान्त्रे में मार्गित प्रबंध संघर्षी द्वारा ही किया जाना चाहिए ।

**यात्री अनुसूची
भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड
(पारस्परिक निधि) विनियम, 1996
[विनियम 54, 56(2)]**

वार्षिक रिपोर्ट

1. वार्षिक रिपोर्ट

वार्षिक रिपोर्ट में निम्नलिखित जारीवाल होगा -

- i) निधि की विविध स्थिरों और संशुर्घ निधि की वर्ष के दौरान संकेतिकों और निधि के प्राची दृष्टिकोण पर नासी बोर्ड की रिपोर्ट;
- ii) इस अनुसूची के घटारः पैरा 2, 3 और 4 के मुन्सार तुलनात्मक और ग्राहकी लेता,
- iii) इस अनुसूची के पैरा 5 के मुन्सार लेतारीकृत की रिपोर्ट;
- iv) निम्नलिखित एक्स्ट्रो पर नासी बोर्ड का संबंधित विवरण, अर्थात्:-

 - a) नासियों और व्यवस्थाएँ के वायिन और उत्तरवायित;
 - b) प्रत्येक स्थान का विनियम उद्देश्य,
 - c) स्थान में मन्त्रनिहित विनियम ग्राहार और नीति;
 - d) यदि स्थान रोपरों, वंशजों, डिवेलरों और अन्य स्थितियों या प्रातिभूतियों में, ग्राहिक स्थ से वा पूर्ण स्थ से विनियम को अनुसा देती है, जिसके मूल्य में उत्तर-चाल हो सकता है, तो निम्नलिखित के मुन्सार एक रूपन :-

"यूनिटों की कमीज और प्रोफेसन मूल्य, और उनसे ग्राह, उसके मन्त्रनिहित विनियमों के बाजार मूल्य में उत्तर-चाल के साथ अधिक और कम हो सकता है।"

- 3.) स्थान के कार्य निष्पादन पर नासियों की टिप्पणियां, पूरे प्रौद्योगिक के साथ ।
- v) इस अनुसूची के पैरा 6 के मुन्सार सुसामान प्रत्यक्ष महत्वपूर्ण 'प्रति शून्य' जांकड़े देने वाला विवरण;
- vi) निम्नलिखित के मुन्सार रूपन :

"वर्तमान और प्राचीन यूनिट भारत/विनिधानकर्ता नाम किलेव, वार्षिक रिपोर्ट और सुसंगत मर्कीप के पाण की प्रति लिखित अनुरोध पर ऑफिशियल कर सकते हैं।"

2. लेता विर्याप के लिए पारस्परिक निपिंडों द्वारा निम्न लेता नीतियों का पहला स्थिति काढ़ा :

- i) विनिधान के इन ग्रामों पर प्राचीन आदिवासी नाम अग्रास वृद्धि या छास की भौमि वित्तीय विवरणों में दर्शाया जायेगा। सभी वित्तीय विवरणों के प्रयोजन के लिए सभी विनिधानों को बाजार के लिए मंकित किया जायेगा और विनिधानों को तुलनात्मक में बाजार कूट पर प्रकट किया जायेगा ताकि उपर्युक्त प्राप्ति में भारतीय रेटिंग एंड एक्सेंट मंचन द्वारा उनके सरकारों को ग्रामवासी निर्भीरा विर्यापियां जारी किये जाने तक विनिधानों को लागत पर, युक्त स्थ से दृश्यता बाजार मूल्य से मूल्यांकित करना जारी रह सकेगा और दो विभिन्न स्थों में मूल्यांकित विनिधानों में परिवर्तनों के लिए फिल्म विवरण, उपर्युक्त किया जायेगा।

जहाँ वित्तीय विवरण बाजार प्राते बाजार आधार पर तैयार किये जाते हैं, वहाँ छास के लिए युक्त उपर्युक्त की जावशक्ता नहीं है। जब तक विनिधानों पर वृद्धि में से प्रोत्सूचा, अग्रास आमिलाम का विवरण नहीं किया जा सकता है, इसके उपर्युक्त के लिए और विवरणात्मक ग्राम की गणना के लिए उपर्युक्त रहता हैगा।

- ii) अव्याप्ति विनिधानों को सातवी अनुसूची में विनिर्दिष्ट ग्रामों के अनुसार संदर्भनामूर्ख कूल्यांकित किया जायेगा।
- iii) उक्तांक शेरों के लिए, स्फीप्ट द्वारा आजित लम्पांश ग्राम को गणना दी जायेगी, उस तारीख को नहीं जिसको लम्पांश घोषित किया गया है, बील्कु उस तारीख को जिसको शेर पूर्व-लम्पांश आधार पर उक्तांकित किया गया हो। शेरों में विनिधान के लिए जो स्टॉक एम्पेलों पर उक्तांक नहीं किए गए हैं, लम्पांश ग्राम की गणना घोषणा की तारीख को दो दिनों चाहिए।
- iv) डिक्षित सभी विनिधानों के सबध में ग्राम, दैनिक आधार पर प्रोत्सूचा दोगी जैसे यह मार्कित की गई हो। ग्राम ज्ञान से विनिधान बदल जाते हैं, आंतरिक बाजार देने की नियत तारीख से इन्हें कूपी जाते हैं तक की जारीपी के लिए संदर्भ बाजार को कूपी की लागत नहीं सम्भव जाएगा, परन्तु बहुतीयोग्य बाजार जाते में सम्भव जाएगा। इसी प्रकार, आंतरिक बाजार की नियत तारीख से विक्रय की तारीख तक की जारीपी के लिए विक्रय के समय प्राप्त बाजार को विक्रय मूल्य के आंतरिक रुदायी नहीं सम्भव जाएगा बील्कु असूची धोय बाजार जाते में जागा किया जायेगा।
- v) विनिधानों की भारण लागत और विनिधानों के विक्रय पर आमिलाम या इनी प्रवधानित करते हुए "ग्रौस्त लागत" पढ़ाते का पहला किया जायेगा।

- vi) विनियोगों के रूप या विकल्प के लिए संबद्ध होने से व्यापार तारीख से प्राची जायेगा और न कि निष्ठा तारीख से, ताकि वित्तीय वर्ष के दौरान व्यापारित सभी विनियोगों के प्राप्त आमतिरीक्षण किये जाएँ और उस वर्ष के लिए वित्तीय विवरण में प्रतीक्षित हों। जहाँ स्टॉक बलार के बाहर विनियोग संबद्ध होते हैं, उद्धरणात्मक, किसी स्थान की प्राप्ति ऊर्जा अथवा निवी संधि की प्राप्ति रूप या विकल्प, तो संबद्ध होने से आमतिरीक्षण किया जायेगा, रूप की दशा में उस तारीख से जब स्कॉप मूल्य के संबंध की प्रबंधनीय बाधता आमताप्राप्त करती है या, विकल्प की दशा में, जब स्कॉप विकल्प के प्राप्तियों को संशोधित करने से प्रबंधनीय आमताप्राप्त करती है।
- vii) बोनस रेटों से, जिनके लिए स्कॉप हस्तार हो जाती है, केवल तब मानदारी दी जायेगी जब मूल रेटर जिन पर बोनस हस्तारी प्रोटोकॉल होती है बोनस राशि ग्राधार पर स्टॉक एक्सचेंज में व्यापारित किये जाते हैं। स्कॉप कार, आमताप्राप्त हस्तारी केवल तब ही ग्रान्त की जायेगी जब मूल रेटर जिन पर आमताप्राप्त हस्तारी प्रोटोकॉल होती है आमताप्राप्त राशि ग्राधार पर व्यापारित किये जाते हैं।
- viii) जब विनियोगों पर प्राप्त ग्रान्त प्रोटोकॉल हो गयी हो और नियत तारीख के फलस्वरूप 12 महीनों की ग्रान्ति के लिए प्राप्त नहीं की गयी हो, इस कार प्रोटोकॉल ग्रान्त के लिए ग्रान्तनी जाते में नम्बे द्वारा उपबंध किया जायेगा और ऐसे विनियोगों की बालत ग्रान्त का और ग्रान्तिरीक्षण प्रोटोकॉल नहीं किया जाना चाहिए।
- ix) जब इसी संबृत स्कॉप के ग्रैन्ट बोर्डे जाते हैं, ग्रैन्ट के विकल्प मूल्य और प्रोटोकॉल मूल्य में फ़्लॉट, यदि भनात्मक हो, तो ग्रान्तिरीक्षणों में ज्ञान किया जायेगा और यदि रुक्णप्रत्यक्ष हो तो ग्रान्तिरीक्षणों में नम्बे डाला जायेगा। इसी कार जब संबृत स्कॉप के ग्रैन्ट एन्ड रूप किए गए हों, ग्रैन्ट के रूप मूल्य और प्रोटोकॉल मूल्य में फ़्लॉट, यदि भनात्मक हो ग्रान्तिरीक्षणों से नम्बे डाला जाएगा, यदि रुक्णप्रत्यक्ष हो ग्रान्त मूल्य को पूँजी जाते को नम्बे डालते हुए ग्रान्तिरीक्षणों को ज्ञान किया जाएगा।
- x) (क) किसी संबृत स्कॉप के ग्रान्ट में, जब ग्रैन्ट बोर्डे जाते हैं विकल्प ग्रान्त का उपकृत ग्रान्त समानीकरण जाते में ज्ञान किया जायेगा और जब ग्रैन्टों का एन्ड रूप किया गया हो तो उपकृत राशि समानीकरण जाते को नम्बे डाली जायेगी। इस जाते में एक ग्रान्तिरीक्षण को ग्रान्तनी जाते में ज्ञान करना चाहिए या नम्बे डालना चाहिए। ग्रान्तनी जाते को नम्बे डाला गया या ज्ञान किया गया समानीकरण जाते को ग्रान्तिरीक्षण निधि की एक ग्रान्त में ज्ञान या बृद्धि नहीं करेगा बल्कि वितरणयोग्य आमतरीक्षण का केवल एक समाधोर्जन है। इसलिए एक ग्रान्तनी जाते में निधि की शुद्ध ग्रान्त उपधारित हो जाने के बाद ही प्रतीक्षित होगी।

(क) नासी या नासी कमी का बोड़, यदि ग्राहक हो, तथांश स्मानकरण आरक्षित में वितरणयोग्य तथा ज्ञा भंग अंतरित कर सकेगा। ऐसा अंतरण ×(क) में या उपरिकृत ग्रन्तिरात्रि वर्ते के प्रशासन की जरूरत से व्यवहार होगा।

- xii) बिल स्ट्रीम में, जो बून्द धारकों को उनके प्रसन्न ग्रन्टों के पूर्ण प्रोत्तर या इन्हें इन का विकल्प प्राप्त करते हैं, यैन्ट का ज्ञा मूल्य पूँजी जाते को ज्ञा किया जाएगा और इनका मूल्य तथा मात्र मूल्य में भ्रंत, यदि भ्रान्त हो, आरक्षितों को नये डाला जाना चाहिए और, यदि व्युत्पन्न हो, तो आरक्षितों में ज्ञा किया जाना चाहिए। यारेसांधित आरपिक नियम यदों का एक मान्यातीक भंग भी आरक्षितों को अंतरित किया जाएगा ताकि उस जाति में अनन्त आतिशय बढ़ाया रह गए ग्रन्टों की संख्या का मान्यातीक हो।
- xiii) भ्रंति या भ्रंति या विनिधानों की तापत में दताती, स्ट्राप प्रभार और दलाल के फ्लैट-बोट में अंतर्विलत कोई मध्यक प्रभार प्रतिवर्त नहीं होगा। निली रूप से विनिधान इन निकतों की बाजत प्रस्तावित, आरप और ज्ञा में प्रस्तावित हृत को विनिधान की तापत में प्रदाया जाएगा।
- xiv) हासीदारी क्षमीशन को केवल प्राप्तनी के तौर पर तब मान्यता दी जायेगी जब स्ट्रीम पर कोई तापत नहीं है। जहाँ स्ट्रीम पर तापत है, वहाँ प्राप्त की गई पूरी हासीदारी क्षमीशन को और न कि केवल तापत को प्रत्येक ज्ञा को विनिधान तापत से प्रदाया जाएगा।

3. तूलन्य की अन्तर्वर्ती

- i) तूलन्य में उसकी आस्तियों और दायित्वों की विशेषिताओं स्फूर्तिवार दी जाएगी। इन विशेषिताओं में इसके उपलब्ध 1क और 1स में प्राप्ति जानकारी होगी। इसमें ज्ञा बातों के साथ विनिधानों के मूल्यांकन और ज्ञा प्रत्यवर्ती क्षेत्रों से संबंधित लेना नीतियां प्रकट की जाएंगी।
- ii) यदि विनिधान तापतों पर या दृसित तापत पर किये जाते हैं, तो विनिधान के प्रत्येक प्रकार की बाजत उनका सफल बाजार मूल्य प्रकृ-प्रकृ का पैकित किया जाएगा, जैसे इम्परी रेवर, आधिकारी रेवर, मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज में सूचित परिवर्तीय डिवेंपर, आरिदार्नीय डिवेंपर या बॉण्ड, उन्हें और यिन्द्र करते हूर कि वे जो मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज में सूचित हैं और वे जो निली रूप में रखे गये हैं।

- iii) तुलनात्मक में विनिधान के प्रत्येक प्रकार के ग्राहीन निष्क्रिय विनिधानों का समूल बहन मूल्य ग्रोव बजार मूल्य पृष्ठ-पृष्ठ प्रकट किया जाएगा। विनिधान को निष्क्रिय सम्पादन जाएगा यदि पारस्पारिक निधि के लेना वर्ष के ग्रन्त तक उससे दो चर्चों से ज्ञापेक के लिए लाभांश या लाभ के स्थान में कोई प्रत्याग्राम प्राप्त न हुआ हो। तथापि ऐसे निष्क्रिय विनिधानों का प्रकटीकरण प्रावधारक नहीं उत्तर देना स्थांक समी विनिधान बजार-प्रति-बजार मूल्यांकित होते हैं।
- iv) तुलनात्मक में निष्क्रिय विनिधानों के मूल्य में हास्त/दाने के लिए ग्राहकनी जाते हैं किंतु ग्रोव उपलब्ध का विस्तार उद्दर्शित होता। तथापि यदि विनिधान बजार-प्रति-बजार मूल्यांकित होते हैं, हास्त के लिए उपलब्ध ग्रावरशक महों होते हैं।
- v) तुलनात्मक में लेना वर्ष के ग्रन्त पर का ग्राही ग्रूप ग्रुड ग्राहीत मूल्य प्रकट किया जाएगा।
- vi) जैसा कंपनीयों की दशा में है, तुलनात्मक में प्रत्येक प्रक के सामने, पृष्ठकी लेना वर्ष के ग्रन्त तक के तस्वीरों में सूचित होते हैं दिये जायें।
- vii) तुलनात्मक की टिप्पणियों में विनिधानों से संबंधित ग्रिजलिंगित जानकारी प्रकट की जायेगी :-
- समी विनिधानों को तुलनात्मक में दिये गये प्राप्त वार्षिकरण के ग्राहीन वार्षिकता किया जाएगा।
 - प्रत्येक प्राप्त वार्षिकरण में प्रत्येक प्राप्त उद्योग समूह के ग्राहीन ग्राहकों विनिधानों (जो प्राप्त वार्षिकरण में इस विनिधान के 5% से अधिक गठित करते हैं) को वार्षिकरण के भीतर इस विनिधानों के संबंध में उसके प्रतीकात के साथ प्रकट किया जाना जाएगा।
 - जहाँ कोई व्यापक विनिधान प्राप्त वार्षिकरण में इस विनिधानो के 2% से अधिक गठित करता है, ऐसे विनिधान का व्यापक प्रकटीकरण किया जाना चाहिए।
 - स्वीम के विनिधानों की पूरी सूची ग्रोव निरीक्षण के लिए ग्राहीत प्रबंध कंपनी के दास उपलब्ध ऊरायी जायेगी।
- 3.) ग्राहक, जिस पर ग्राहीत प्रबंध कंपनी को प्रबंध फैस का संदर्भ लिया गया है ग्रोव उसकी सामग्री ;
- यदि दलाली, ग्राहीत कंपनी या सेवाओं के लिए कोई मूल्य साध्य, जिसी ऐसी सूता को, जिसमें ग्राहीत प्रबंध कंपनी या इसके प्राप्त शेयरधारकों का पांचवां हित, (इसकी एंजी के 10% से अधिक) है, संतुल लिया जाता है या संतुल है, तो ऐसी सेवाओं की बाबत राजस्व जाते को नग्ये इसी गयी राशियों या विनिधान लाभ सम्पादी जानेवाली राशियों को ग्राहीत प्रबंध कंपनी या इसके प्राप्त शेयरधारकों के हित के ब्योरों के साथ ग्राहा-ग्रहण प्रकट किया जाएगा।

- ८) वर्ष के दोस्रे विनिधनों के रूपों और विक्री का सकल मूल्य और ग्राहक साक्षात्क एवं ग्राहक मूल्य के प्रतिशत के मध्य में अंतर;
- ९) उहाँ ज्यातीय विनिधन, जिनका मूल्यांकन "सम्पादकरण" किया गया है, वर्ष के मध्य पर एवं ग्राहक मूल्य के 5% से अधिक होता है, उहाँ से विनिधनों का सकल मूल्य ; और
- १०) एंजी बैंक में उत्तर-द्वारा की जिया जाना चाहिए।

विस रीति में बैंक एंजी के उत्तर-द्वारा का प्रस्तुत किया जाता है उसका एक उदाहरण नीचे दिया गया है :—

बैंकों की संख्या	लाख रु.
१ जूले 1994 को जारीरेख	1250, 00, 000
वर्ष के दोस्रे वर्षे गये बैंक	127, 50, 000
वर्ष के दोस्रे प्रमुः खरों गये बैंक	(15, 40, 000)
	<hr/>
	1362, 10, 000
	13621 . 00.

- ११) यदि विनिधन बाजार के लिए उपलब्ध हैं, सभी की कुल जाय में विनिधनों पर ग्राहक मूल्य हास या मूल्य वृद्धि समीकरित होगी। प्रस्तीकरण किया जाना चाहिए और वितरणों पर इनमें से पहले ग्राहक मूल्य वृद्धि को नियमीति में घटाया जायेगा, उदाहरण:

लाख रु.	लाख रु.
ग्राहकों लेव के मुक्तार एवं जाय	100
बढ़ों : १ जूले 1994 को जारीरित जाय का जारीरेख ग्राहकों	20
	<hr/>
	120

घटाएँ : विनियोगों पर भ्रष्टाचार मूल्यवृद्धि			
31 मार्च 1995 से		30	
1 जनवरी 1994 से	15	(15)	
		105	
घटाएँ : विनियोगों से वित्तीय आरक्षिति में अतिरिक्त		80	
	5	(85)	
		20	

- viii) सरकार जमाराइशों, संविधान सभा और संविधान बकाया तथा प्रोटोकॉल प्राप्ति के लिए उपलब्ध हो रहनाम के दायित्व संबंधी भ्रष्टाचार के अधीन शामिल नहीं किया जायेगा, वहींकि इसको सुलगत प्राप्ति के सफल मूल्य से एक फ्रैटों के रूप में दराया जायेगा।
- ix) नमी स्थानीय दायेवों के लिए हाइड्रोली प्रतिक्रियाओं, भ्रष्टाचार संबंधी दायेवों एवं अन्य प्रतिक्रियाओं को बांट विभागित करके पृष्ठ-पृष्ठ दराते हुए प्रकटीकरण किया जायेगा।

4. भ्रष्टाचार की अंतर्कात्मकता

- i) भ्रष्टाचारी लेना में वारपर्याक नियंत्रण की जगह, यदि और अधिकारी विविध घटाएँ की विशेषज्ञान स्कॉलार दी जाएं ; इन विशेषज्ञानों में इस अनुसूची के उपर्युक्त 2 में व्यापित जनकारी होंगी।
- ii) यदि भ्रष्टाचारी लेने में विविध विनियोगों के विवरण या तात्पर्य में, उसी वारपर्याक नियंत्रण के भ्रष्टाचारी विनियोगों के भ्रष्टाचार-स्कॉलर भ्रष्टाचार या तात्पर्यानि सम्बन्धित है तो व्यक्ति या एवं इसमें भ्रष्टाचारी लेना या तात्पर्य विविध विनियोगों के विनियोगों के विवरण या तात्पर्यानि के मान देने वाला पृष्ठ या से प्रकट किया जाएगा।
- iii) विनियोगों के मूल्य में भ्रष्टाचार मूल्य हास, जो उनके सफल बाजार मूल्य और उनको बहुत लाभ में भ्रष्टाचार से लौटा है, भ्रष्टाचारी उन्हें की प्राप्तता विविध विनियोगों के रूप में प्रकट किया जायेगा ; इसके विवरण, विनियोगों पर भ्रष्टाचार या तात्पर्य, जो उनके सफल बाजार मूल्य

प्रौढ़ तथा मृत वर्गीकृत है, लेतों में इष्टिका के स्थान में प्रकृत किया जायेगा। प्राप्तनी लेतों में प्रारब्धितियों प्रौढ़ विवरित लभांश के प्रत्यरूप के स्थान में प्राप्तिरूप का विविधग्रन्थवर्गीकृत किया जायेगा। तथापि, यदि विवेधन बाजार के लिए प्रकृत है तो इस का उपचय नहीं किया जा सकता।

iiv) प्राप्तनी लेतों में प्राप्तिरूप के विविधग्रन्थ को प्रारब्धितियों में प्रत्यरूप प्रौढ़ विवरित लभांश के स्थान में उपचय किया जायगा।

v) प्राप्तनी लेतों में निम्न व्यापारिकण मध्ये जारी :

- (a) मांगप वक्तव्याशयों, रुपों प्रौढ़ वक्तव्य तथा प्रोटोप्रूत ग्रन्थ के सम्बल पूर्व के लिए उपचय
- (b) विवेधनों के द्वय मध्ये प्रौढ़ ग्रन्थ में लाभ या हानि शुद्ध ग्राधार पर रखायी जा सकती
- (c) प्रौढ़व्यापार और राजस्वार्थीकृति
- (d) सामाजिक ग्राधार पर परिवर्तन, प्रौढ़ ग्रास्तियों के प्रतिरूप के स्थान में प्राप्तिरूप रूप ग्रन्थ प्रौढ़ व्यापार।

5. लेता परीक्षक की रिपोर्ट

i) स्थानीय व्यापारिक दिविधियों से, उनके चाप्स विलेतों में उस प्रभाव के उपचयों के अनुसार, उनके लेतों की लेतापरीक्षा करने की जमक्का की जाएगी। लेतापरीक्षक की रिपोर्ट वापिस रिपोर्ट का भाग होगी। इसके साथ संबंधित तुलनण्ड और प्राप्तनी लेता संलग्न होना चाहिए। लेतापरीक्षक चार्ची बोर्ड को न कि यूनिट धारकों को रिपोर्ट देगा।

ii) लेतापरीक्षक यह स्थन कराया कि स्थान :-

- 1) उसने स्थानीय जानकारी प्रौढ़ स्पष्टीकरण प्राप्तिरूप कर लिए हैं जो उसके स्वरूपमें जान प्रौढ़ विवेधन के अनुसार उसकी लेतापरीक्षा के प्रयोग के लिए प्रावधक हैं।
- 2) तुलनण्ड और प्राप्तनी लेता निधि की लेतापरीक्षीयों से फ्रेंज जाते हैं।

iii) लेतापरीक्षक यह राय देगा कि स्थान :-

- 1) तुलनण्ड निधि के कामकाल की स्थैतिक विधियों का सही प्रौढ़ छल कि दर्शन करता है जैसा कि तुलनण्ड की तरीके को पाया जाएगा।

- 2) ग्रामदली सेवा तुलनात्मकों तरीके से समाज द्वारा वर्ष/जर्वर्ष के लिए नियोग के स्कॉलरशिप प्राप्ति भांड जा सकती है और इसे किंवदं दर्शात रखता है।

6. प्रत्यक्ष प्रदत्तपूर्ण प्रति शून्य आंकड़े:

- 1) यह स्थग पिछले 3 वर्षों के लिए नियन्त्रित स्कॉलरशिप प्रति शून्य आंकड़े प्रदत्त करेगा:

- (a) शुद्ध आंकड़ा मूल्य, प्रति शून्य;
- (b) सकल ग्राम प्रति शून्य और नियन्त्रित संघटकों में विचारित हो :

 - i) विनियोग के विकल्प पर तभ्य से भिन्न ग्राम, प्रति शून्य;
 - ii) विनियोग के ग्रंथालय-स्कॉलरशिप किसी विकल्प पर तभ्य से ग्राम, प्रति शून्य;
 - iii) तृतीय प्रधानार्थ को विनियोग के विकल्प पर तभ्य से ग्राम, प्रति शून्य;
 - iv) पिछले वर्षों की ग्रामदली सेवा से ग्रामदली सेवा में ग्रंथालय, प्रति शून्य,

- v) व्यवस्था, अवकाश, फ़ास्ट अवकाश और ब्राह्मर का योग, प्रति शून्य,

- vi) शुद्ध ग्राम, प्रति शून्य;

- 2.) विनियोगों के मूल्य में वस्तुतः न जी गई शून्य/उच्चतम, प्रति शून्य;

- (a) यदि शून्यों का व्यापार या फ़ूःस्त्र / फ़ूःविकल्प किया जाता है तो वर्ष के दौरान प्रति शून्य उच्चतम और नियन्त्रित ग्राम-प्रधान ग्रन्थालय ।

- (b) प्रति शून्य, प्रतिशत द्वारा ग्राम-प्रधान शुद्ध ग्रामियों में व्यवस्था सुनिश्चित ।

- (c) प्रति शून्य, प्रतिशत द्वारा ग्राम-प्रधान शुद्ध ग्रामियों में ग्राम का ग्रन्थालय (पिछले वर्ष की ग्रामदली सेवा तात्परता को अवकाश को छोड़कर किंतु विनियोगों पर ग्राम-प्रधान की सीमानिति करते हुए);

- (d) प्रति शून्य शुद्ध ग्रामित मूल्य

उपलेख १क

(पैरा ३ देश)

स्कोरिकार तुलनात्मक की महत्वात्मकता

तुलनात्मक का प्राप्ति भाग :

I. तुलनात्मक की आंतरिक विनियोग को में वर्णित की जाएगी :

- विनियोग;
- लागत;
- प्रयोग चल आंतरिक;
- विवर आंतरिक;
- भास्यांगत प्राप्तनी व्यव;

II. विनियोग

विनियोगों के विनियोग प्रकारों को अलग-अलग प्रकट किया जाएगा।

- i) श्रीमद्भागवत,
- ii) गीतार्थी शंखर,
- iii) निर्वाचन सभा में लेजे गए डिक्टेशन/बैठक,
- iv) प्रश्नप्राप्त स्टाफ प्रफ़ेशनल में सूचीबद्ध/संशीबद्ध विवर जाने की प्रक्रिया सुनने वाले डिक्टेशन/बैठक,
- v) मौणपुर्व सदाचार
- vi) साक्षीप्त उपाय,
- vii) केन्द्रीय/राज्य प्रकार की प्रतिभूतियाँ (जिनके महत्वात्मकता इत्यादि हैं)
- viii) वाणिज्यिक घटा
- ix) झन्य,

विनियोगों के मूल्यांकन की लेजा-नीति प्रकट किये जायें।

III. ज्ञा

निमंतीक्ष्ण के बीच विवेद करना :

- जनसूचित बैंकों के पास ज्ञा;
- देशीय/संस्थानों के पास ज्ञा;
- मन्य;

IV. मन्य चल् ग्राहितयां

निमंतीक्ष्ण के बीच विवेद करना :

- बैंकों के पास चल् लेजा में ग्राहितयः;
- दृष्ट नक्की;
- विविध देशादः;
- विनिपानों के विक्रय के लिए संविदाएः;
- बकाया प्रौद्योगिक्यः;
- ग्राहित, ज्ञा, ग्राहित;
- तहकालिक कित्त;
- ग्राहन के लिए इसे दूर राष्ट्र/डिप्रेशन ग्राहन घनताणः;
- मन्य;

V. विवर ग्राहितयां

विवर ग्राहितयों की दास्तित लगत को सम्मा स्व में फ्रूट किया जा सकेगा ।

VI. ग्राह्यांगत ग्राहनी व्यय

- ग्राहीपक ग्राहितयः, वर्ष के दौरान ग्राहितीक्ष्ण रकम, परिवर्तनी वर्षों में ग्राह्यांगत रकम के बीच विवेद करना ।
- व्यय को ग्राह्यांगत ग्राहनी व्यय के स्व में ग्राहन के संबंध में लेजा-नीति प्रौद्योगिक्य ग्राहन फ्रूट किया जाएगा ।

उपलब्ध I व

(पैरा 3 देखें)

क्रमवाल तुलनात्मक की प्रक्रिया

I. तुलनात्मक का दावेत माम

तुलनात्मक का दावेत माम निम्नलिखित बाँधों में विभाजित किया जाए :

- i) यूनिट पूँजी;
- ii) आरोग्यियां और अधिशेष;
- iii) उपचार;
- iv) चर्चा दावेत माम और उपलब्ध;

II. यूनिट पूँजी

निम्नलिखित के बीच विभेद फरना

- प्रारंभिक पूँजी;
- यूनिट पूँजी(जिसके प्रत्याप्त यूनिट की संख्या और ग्राहक मूल्य प्रति यूनिट है)

III. आरोग्यियां और अधिशेष

निम्नलिखित के बीच विभेद फरना

- यूनिट प्रीमिया आरोग्यिति; 1(वैकल्पिक)
- सामान्य आरोग्यिति;
- लाभांश सामानीकरण आरोग्यिति; (वैकल्पिक) (सामानीकरण लेता, अनुसूची के 2(x) के अनुसार)
- कोई मूल्य आरोग्यिति (उसकी प्रकृति प्रकट फरना);
- विनियोग लेता;
- प्रारंभिक ग्राहकों, आरोग्यिति सेवा में अंतरण, अंत अधिशेष उपर्युक्त प्रकार की प्रत्येक आरोग्यिति के लिए अन्तरा-अन्तर ग्राहक किया जाएगा।

IV. उधार

- निम्नलिखित के बीच चयन करना
- मात्रीय रिजर्व बैंक से उधार,
 - व्यवसायकों से,
 - मन्य से,
 - यदि उपर्युक्त उधार प्रतिभूत है तो प्रतिभूत की प्रकृति और वित्तार प्रकट करना चाहिए,
 - स्कैम द्वारा उधार, राशि, उधार दर, स्रोत और पृष्ठ स्थ में स्रोतावार दर्शाये जन्य विविधों सहित गलू दायित्व और उपचंप

निम्नलिखित गलू दायित्व और उपचंपों के बीच चयन करना

गलू दायित्व

- विविध लेनदार,
- उधारों पर संदेश बाज़,
- विविधों के ग्राह के लिए संविदा,
- बड़ियों के मनुसार अध्यासन बैंक लेना,
- अत्यावृत्त वित्तीत ग्राह,
- मन्य,

उपचंप

- हानि/विविधों के गूला दास के लिए उपचंप (प्रत्येक प्रकार के विविधान के संरप्ति में गूला-गूला);
(वैकल्पिक, यदि बाजार के लिए प्राप्ति है);
- संदेश सम्पादी लमेवाली बकाया और प्रोत्येषु ग्राह के लिए उपचंप
- उपदान के लिए उपचंप,
- स्मर्वारी रूपायाप निधि के लिए उपचंप,
- आरामिक छूटी और शून्य छूटी पर वित्तीत प्रस्ताविका ग्राह,
- मन्य उपचंप।

VI. सामाजिक दायित्व

- सभी समाजिक दायित्वों के लिए प्रकटीकरण किया जाना चाहिए, अतः-अलग दशाओं में :
- i) हार्दिकारी प्रतिक्रियाएँ
 - ii) भाषण: स्पास्त शब्दों पर अनाहत दायित्व;
 - iii) मन्त्र प्रतिक्रियाएँ; और
 - iv) मन्त्र (व्यौर विनियोग करते हुए)

उपर्युक्त 1ग

(पैरा 3 देखें)

ग्रामदनी लेता ही भूतवस्तु

- लभाराः;
- व्याजः;
- विनिधनों के विकल्प/प्रयोग पर लाभ (अतः स्फीम भूतरण/विकल्प से मिलन);
- विनिधनों के अतः स्फीम भूतरण/विकल्प पर लाभ,
- अन्य जाय (प्रकृति उपर्योगित फरते हए);

व्यय मौर व्यायामः

- विनिधनों के मूलदाता के लिए उपर्युक्त
- शक्तिपद सम्पदी गई बकाया प्रेस्भूत जाय के लिए उपर्युक्त; शक्तिपद ज्ञाना मौर वाल ग्रामज्ञानों के लिए उपर्युक्त;
- विनिधनों के ऋण या प्रोग पर हानि (अतःस्फीम भूतरण/विकल्प से मिलन);
- विनिधनों के अतःस्फीम भूतरण या विकल्प पर हानि;
- ग्राम फीसः;
- न्यासीष फीसः;
- राष्ट्रपारिवृक्ष लगान जिसके प्रत्यक्षता केन, प्रत्ये, प्रत्येष निधि में जारीहस्त, उपदान जारी;
- फार्मलियन मौर प्रशासनिक व्यय;
- राजस्टीकरण मौर स्थानीय प्राप्ताः;
- प्राप्तिकर्तागो को रक्षणा;
- ग्राम व्ययः;
- लेता परीक्षा फीसः;
- अन्य ग्रामतन व्ययः;
- प्रयोगिति ग्रामसाधारण ग्रामदनी व्ययः;
- विषय ग्रामज्ञानों का ग्रामध्येणः;
- ग्रामरक्षण फीसः
- राजस्टीकरण फीसः

प्रधारं प्रध्य के लेवे गृनटो के विक्षय पर बस्तु की गयी राशि;

टिप्पण : i) विनिधनों से प्राप्तनी और प्राप्त की (जिसके प्रत्याप्त लाभांश में व्याल है) एवं उसमें की बदलते लेवा नीति एक टिप्पण के रूप में प्रकट की जाएगी।

ii) विनिधनों के मूल्य में, उनके सकल बाजार मूल्य और उनकी वह तात्पत्र के बीच का अंतर दरानिवाले द्वास और बृद्धि को टिप्पणी के रूप में प्रकट किया जायेगा।

iii) शक्तिपूर्वक ज्ञान छानों और बकाया तथा प्रोटोकूल प्राप्त के लिए उपक्रम को फल्गु से दराने की प्रावधानता नहीं है परंतु सकारात्मक किया जा सकता है।

iv) विक्षय पर लाभ या विनिधनों के ग्रोव और विक्षय पर हानि या विनिधनों के ग्रोव को सकल ज्ञानाधार पर दराने की जरूरत नहीं है, परंतु ऐसे शुद्ध लाभ या हानि को दराने की प्रावधानता है।

v) ग्रौस्त शुद्ध ग्राहितों के प्रतिशत के रूप में अधिकतम रूप ज्ञान और व्यवहार पर सांगीत उपर्याप्ति किया जाना चाहिए।

vi) ग्राहितों में अंतरण और विकारित लाभांशों के रूप में आधिकारिक विनियोग साक्षेत्र ग्राप्तनी लेवे में ही प्रकट किया जाना चाहिए।

vii) तृतीय घर और ग्राप्तनी लेवा स्कॉप्सवार निपिध प्रब्लेम्स/प्रब्लेम्सों और न्यासी बोर्ड द्वारा छस्ताभारित होगे, तथा उन पर लेवारीको द्वारा खिरोड़ दी जायेगी। स्कॉप्स के वित्तीय विवरणों को ग्राहित लाभांश के निवेशक बोर्ड की बैठक और न्यासियों या न्यासी कंपनी के मामले में न्यासी कंपनी के निवेशक बोर्ड की बैठक में भी अनुमोदित किया जाना चाहिए।

गांधी झुक्की
भारतीय प्रतिपूति और विनियम बोर्ड
(पारस्पारिक निधि) विनियम, 1996

(विनियम 59)

प्रदर्शनीक वित्तीय वारेंट्स

(क) संकेत ग्राहकी लेता के संकेत विकास की अंतर्दृश्य

पारस्पारिक निधि

से स्थान हर वर्ष/प्रतिपूति के लिए ग्राहकी लेता

(लल मार ग्रे)

पर	पर	पर	पर	पर	पर
वर्ष	वर्ष	वर्ष	वर्ष	वर्ष	वर्ष

1. ग्राह

- 1.1 लम्पांश
- 1.2 लाल
- 1.3 विक्रय पर लाभ/विनिधानों का ग्रहण
(प्रतरक्षीय प्रतरण/विक्रय से मिल)
- 1.4 विनिधानों के प्रतरक्षीय प्रतरण/विक्रय पर लाभ
- 1.5 मन्द ग्राह (प्रकृति दर्शन से)

2. व्यय और हानि

- 2.1 खरप, नासीब, प्रशासनिक और मन्द प्रवर्तन व्यय
- 2.2 शक्तिपूति ग्राह के लिए उपलब्ध

-
- 2.3 शकास्त्र लगा/गलू मास्टियो के लिए उपचार
 - 2.4 विक्रय पर हानि/विनिधानों का मोत्तेज (अंतरस्कंद्र अवरण/विक्रय से प्रिन)
 - 2.5 विनिधानों के अंतरस्कंद्र अवरण/विक्रय पर हानि
-

गोण :

(ल) संकेत तुलना के संकेत विज्ञान की अवधारणा

पारस्परिक नीति

से का तुलना

विभिन्न स्तरों के नम

(तालिका)

दायित्व

वाह	वां	वाह	वां	वाह	वां
वर्ष	वर्ष	वर्ष	वर्ष	वर्ष	वर्ष

1. शैक्षणिक पूँजी
2. प्रारंभिक और प्राधिकरण
- 2.1 शैक्षणिक प्रारंभिक और प्रारंभिक वित्तीय
- 2.2 मन्त्र वित्तीय
3. वित्तीय और उपचार
- 3.1 वित्तीय में
- 3.2 मन्त्र में
4. वाह दायित्व और उपचार
- 4.1 शक्तिसंदर्भ माल/जमा के लिए उपचार
- 4.2 प्रस्तावित माल वित्तीय
- 4.3 मन्त्र वाह दायित्व और उपचार

प्राप्ति

प्रास्तियां

(लाल भर में)

प्र	व्र	प्र	व्र	प्र	व्र
व्र	व्र	व्र	व्र	व्र	व्र

1. विनियम *
- 1.1 इंस्ट्री और जन्मानी शेर
- 1.3 निची में से रखे गए डिक्षेन्ड/बंधन
- 1.3 मानकान्वात स्टाक एक्सेल के पास सूचीबद्ध/सूचीकरण के लिए प्राविधिक डिक्षेन्ड और बंधन
- 1.4 सावधि उपार
- 1.5 सरकारी प्रतिमूलिकां
- 1.6 मन्त्र
2. ज्ञा
- 2.1 मन्त्रपूर्ण बैंकों के पास
- 2.2 मन्त्र के पास
3. मन्त्र चल् प्रास्तियां
- 3.1 नस्दी और बैंक प्रतिरोध
- 3.2 मन्त्र

4. सिर प्रास्तियां (द्वासित मूल्य पर)
5. जातिशास्त्र जापनी व्यय (जो प्रतीतिक्षण न किए गए व्यय की सीमा तक होता)

द्वासि

टिप्पणी *

1. विनियमों के मूल्यांकन की लेना नीति प्रस्तुत की जानी चाहिए ।

(ग) संकेत वित्तीय परिणामों के विनाश की जन्य उत्तरस्तु

1. लेवलरीक्षकों की रिपोर्ट;
2. फिल्म ग्राह वर्षों के लिए निम्नलिखित स्कीम्सवार प्रति यूनिट जानकारी प्रकट करनेवाले मात्री प्रह्लवपूर्ण प्रति यूनिट मोड़े :
 - (क) शुद्ध ग्राहित मूल्य, प्रति यूनिट;
 - (ख) निम्नलिखित संघर्षों में विद्युत सकल ग्राह प्रति यूनिट;
 - (i) विनिधान के द्वारा पर लाभ से भिन्न ग्राह, प्रति यूनिट
 - (ii) विनिधान के उत्तरस्कीम विकायों/उत्तरण पर लाभ से ग्राह, प्रति यूनिट;
 - (iii) तीसरे पक्षकार से विनिधान के द्वितीय पर लाभ से ग्राह, प्रति यूनिट;
 - (iv) फिल्म वर्ष की ग्राहितियों से ग्राहनी लेने में उत्तरण, प्रति यूनिट;
- (ग) शुद्ध ग्राह, प्रति यूनिट;
- (द.) यदि यूनिट व्यापारित या न्यू: फर्ड/एस: बोर्ड जाते हैं, तो वर्ष के दौरान प्रति यूनिट उच्चतम और निम्नम मूल्य तथा ऊपर ग्राहनी ग्राहनी कर सकता है।

**SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA
NOTIFICATION**

Mumbai, the 9th December, 1996

**SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA
(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996**

S.O. 856(E).—In exercise of the powers conferred by section 30 read with clause (c) of sub-section (2) of section 11 of the Securities and Exchange Board of India Act, 1992 (15 of 1992) the Securities and Exchange Board of India hereby makes the following regulations :—

**CHAPTER I
PRELIMINARY**

1. **Short title, application and commencement.**—(1) These regulations may be called the Securities and Exchange Board of India (Mutual Funds) Regulations, 1996.
- (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.
2. **Definitions.**—In these regulations, unless the context otherwise requires :—
 - (a) “Act” means the Securities and Exchange Board of India Act, 1992 (15 of 1992);
 - (b) “advertisement” includes every form of advertising, whether in a publication, by display of notices, signs, labels or by means of circulars, catalogues or other documents, by an exhibition of pictures or photographic films, by way of sound broadcasting or television, or in any other manner;
 - (c) “associate” includes a person—
 - (i) who directly or indirectly, by himself, or in combination with relatives, exercises control over the asset management company or the trustee as the case may be, or
 - (ii) in respect of whom the asset management company or the trustee, directly or indirectly, by itself, or in combination with other persons exercises a control, or
 - (iii) whose director, officer or employee is a director, officer or employee of the asset management company;
 - (d) “asset management company” means a company formed and registered under the Companies Act, 1956 (1 of 1956) and approved as such by the Board under sub-regulation (2) of regulation 21;
 - (e) “broker” means a stock broker as defined in Securities & Exchange Board of India (Stock Broker) Rules, 1992;
 - (f) “close-ended scheme” means any scheme of a mutual fund in which the period of maturity of the scheme is specified;
 - (g) “control” means,—
 - (i) in case of a company any person or combination of persons who directly or indirectly own, control or hold shares carrying not less than 10% of the voting rights of such company; or
 - (ii) as between two companies, if the same person or combination of persons directly or indirectly, own control or hold shares carrying not less than 10% of the voting rights of each of the two companies; or
 - (iii) majority of the directors of any company who are in a position to exercise control over the asset management company.
 - (h) “custodian” means a person who has been granted a certificate of registration to carry on the business of custodian of securities under the Securities and Exchange Board of India (Custodian of Securities) Regulations, 1996;
 - (i) “depository” means a body corporate as defined in the Depositories Act, 1996 (22 of 1996);
 - (j) “economic offence” means an offence to which the Economic Offences (Limitation of Prosecution) Act, 1974 (12 of 1974) applies for the time-being;
 - (k) “enquiry officer” means any person appointed as such by the Board under Chapter IX;
 - (l) “form” means any of the forms specified as such in the First Schedule;

(m) "**fraud**", for the purpose of these regulations has the same meaning as is assigned to it in section 17 of the Indian Contract Act, 1872 (9 of 1872);

(n) "**Inspecting officer**" means any person appointed as such by the Board under Chapter VIII;

(o) "**money market instruments**" includes commercial papers, commercial bills, treasury bills, Government securities having an unexpired maturity upto one year, call or notice money, certificate of deposit, usance bills, and any other like instruments as specified by the Reserve Bank of India from time to time;

(p) "**money market mutual fund**" means a scheme of a mutual fund which has been set up with the objective of investing exclusively in money market instruments;

(q) "**mutual fund**" means a fund established in the form of a trust to raise monies through the sale of units to the public or a section of the public under one or more schemes for investing in securities, including money market instruments;

(r) "**offer document**" means any document by which a mutual fund invites public for subscription of units of a scheme;

(s) "**open-ended scheme**" means a scheme of a mutual fund which offers units for sale without specifying any duration for redemption;

- (t) "relative" means a person as defined in section 6 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956);
- (u) "scheme" means a scheme of a mutual fund launched under Chapter V;
- (v) "schedule" means any of the schedules annexed to these regulations;
- (w) "securities laws" means the Securities & Exchange Board of India Act, 1992 (15 of 1992), the Securities Contracts (Regulation) Act, 1956 (42 of 1956) and the Depositories Act, 1996 (22 of 1996) including their amendments and such other laws as may be enacted from time to time;
- (x) "sponsor" means any person who, acting alone or in combination with another body corporate, establishes a mutual fund;
- (y) "trustee" means a person who holds the property of the mutual fund in trust for the benefit of the unitholders and includes a trustee company and the directors of the trustee company;
- (z) "unit" means the interest of the unitholders in a scheme, which consists of each unit representing one undivided share in the assets of a scheme;
- (z)(i) "unit holder" means a person holding unit in a scheme of a mutual fund.

CHAPTER II

REGISTRATION OF MUTUAL FUND

Application for registration

3. An application for registration of a mutual fund shall be made to the Board in Form A by the sponsor.

Application fee to accompany the application

4 Every application for registration under regulation 3 shall be accompanied by non-refundable application fee as specified in the Second Schedule.

Application to conform to the requirements

5. An application, which is not complete in all respects shall be liable to be rejected.

Provided that, before rejecting any such application, the applicant shall be given an opportunity to complete such formalities within such time as may be specified by the Board.

Furnishing information

6. The Board may require the sponsor to furnish such further information or clarification as may be required by it.

Eligibility criteria

7. For the purpose of grant of a certificate of registration, the applicant has to fulfil the following, namely:-

(a) the sponsor should have a sound track record and general reputation of fairness and integrity in all his business transactions;

Explanation: For the purposes of this clause "sound track record" shall mean the sponsor should,-

(i) be carrying on business in financial services for a period of not less than five years; and
(ii) the networth is positive in all the immediately preceding five years; and
(iii) the networth in the immediately preceding year is more than the capital contribution of the sponsor in the asset management company; and
(iv) the sponsor has profits after providing for depreciation, interest and tax in three out of the immediately preceding five years, including the fifth year.

(b) in the case of an existing mutual fund, such fund is in the form of a trust and the trust deed has been approved by the Board;

(c) the sponsor has contributed or contributes atleast 40% to the networth of the asset management company;

Provided that any person who holds 40% or more of the net worth of an asset management company shall be deemed to be a sponsor and will be required to fulfil the eligibility criteria specified in these regulations;

(d) the sponsor or any of its directors or the principle officer to be employed by the mutual fund should not have been guilty of fraud or has not been convicted of an offense involving moral turpitude or has not been found guilty of any economic offence.

(e) appointment of trustees to act as trustees for the mutual fund in accordance with the provisions of the regulations;

(f) appointment of asset management company

to manage the mutual fund and operate the scheme of such funds in accordance with the provisions of these regulations;

(g) appointment of a custodian in order to keep custody of the securities and carry out the custodian activities as may be authorised by the trustees.

Consideration of application

8. The Board, may on receipt of all information decide the application.

Grant of Certificate of Registration.

9. The Board may register the mutual fund and grant a certificate in Form B on the applicant paying the registration fee as specified in Second Schedule.

Terms and conditions of registration .

10. The registration granted to a mutual fund under regulation 9, shall be subject to the following terms and conditions:-

(a) the trustees, the sponsor, the asset management company and the custodian shall comply with the provisions of these regulations;

(b) the mutual fund shall forthwith inform the Board, if any information or particulars previously submitted to the Board was misleading or false in any material respect;

(c) the mutual fund shall forthwith inform the Board, of any material change in the information or particulars previously furnished, which have a bearing on the registration granted by it;

(d) payment of fees as specified in the regulations and the Second Schedule.

Rejection of application

11. Where the sponsor does not satisfy the eligibility criteria mentioned in regulation 7, the Board may reject the application and inform the applicant of the same.

Payment of service fee

12. A mutual fund shall pay before the 15th April each year a service fee as specified in the Second Schedule for every financial year from the year following the year of registration.

Provided that the Board may, on being satisfied with the reasons for the delay permit the mutual fund to pay the service fee at any time before the expiry of two months from the commencement of the financial year to which such fee relates.

Failure to pay service fee

13. The Board may not permit a mutual fund who has not paid service fee to launch any scheme.

CHAPTER III

CONSTITUTION AND MANAGEMENT OF MUTUAL FUND

AND OPERATION OF TRUSTEES, ETC.

**Trust Deed to be registered under
the Registration Act-**

14. A mutual fund shall be constituted in the form of a trust and the instrument of trust shall be in the form of a deed, duly registered under the provisions of the Indian Registration Act, 1908 (16 of 1908) executed by the sponsor in favour of the trustees named in such an instrument.

Contents of trust deed :

15. (1) The trust deed shall contain such clauses as are mentioned in the Third Schedule and such other clauses which are necessary for safeguarding the interests of the unit holders.

(2) No trust deed shall contain a clause which has the effect of-

- (i) limiting or extinguishing the obligations and liabilities of the trust in relation to any mutual fund or the unit holders; or
- (ii) indemnifying the trustees or the asset management company for loss or damage caused to the unit holders by their acts of negligence or acts of commissions or omissions.

**Disqualification from being
appointed as trustees .**

16. 1 A mutual fund shall appoint trustees in accordance with these regulations.

(2) No person shall be eligible to be appointed as a trustee unless -

(a) he is a person of ability, integrity and standing; and

(b) has not been found guilty of moral turpitude; and

(c) has not been convicted of any economic offence or violation of any securities laws; and

(d) has furnished particulars as specified in Form C.

(3) An asset management company or any of its officers or employees shall not be eligible to act as a trustee of any mutual fund.

(4) No person who is appointed as a trustee of a mutual fund can be appointed as a trustee of any other mutual fund unless -

(a) such a person is an independent trustee referred to in sub-regulation (5); and

(b) prior approval of the mutual fund of which he is a trustee has been obtained for such an appointment.

(5) Atleast 50% of the trustees shall be independent persons and no such trustees shall be an associate or a subsidiary or associated in any manner with the sponsor.

(6) In case a company is appointed as a trustee then its directors can act as trustees of any other trust provided that the object of the trust is not

in conflict with the object of the mutual fund.

Approval of the Board for appointment of trustee

17. (1) No trustee shall initially or any time thereafter be appointed without prior approval of the Board.

Provided further if any trustee resigns or retires, a new trustee shall be appointed within a period of three months with the prior approval of the Board.

(2) The existing trustees of any mutual fund may form a trustee company to act as a trustee with the prior approval of the Board.

Rights and obligations of the trustees .

18.(1) The trustees and the asset management company shall with the prior approval of the Board enter into an investment management agreement.

(2) The investment management agreement shall contain such clauses as are mentioned in the Fourth Schedule and such other clauses as are necessary for the purpose of making investments.

(3) The trustees shall have a right to obtain from the asset management company such information as is considered necessary by the trustees.

(4) The trustees shall ensure before the launch of any scheme that the asset management company has;—

(a) systems in place for its back office, dealing

room and accounting;

(b) appointed all key personnel including fund manager(s) for the scheme(s) and submitted their bio-data which shall contain the educational qualifications, past experience in the securities market with the trustees, within 15 days of their appointment;

(c) appointed auditors to audit its accounts;

(d) appointed a compliance officer to comply with regulatory requirement and to redress investor grievances;

(e) appointed registrars and laid down parameters for their supervision;

(f) prepared a compliance manual and designed internal control mechanisms including internal audit systems;

(g) specified norms for empanelment of brokers and marketing agents.

(5) The trustees shall ensure that an asset management company has been diligent in empanelling the brokers, in monitoring securities transactions with brokers and avoiding undue concentration of business with any broker.

(6) The trustees shall ensure that the asset management company has not given any undue or unfair advantage to any associates or dealt with any of the associates of the asset management company in any manner detrimental to interest of the unitholders.

(7) The trustees shall ensure that the transactions entered into by the asset management company are in accordance with these regulations and the scheme.

(8) The trustees shall ensure that the asset management company has been managing the mutual fund schemes independently of other activities and have taken adequate steps to ensure that the interest of investors of one scheme are not being compromised with those of any other scheme or of other activities of the asset management company.

(9) The trustees shall ensure that all the activities of the asset management company are in accordance with the provisions of these regulations.

(10) Where the trustees have reason to believe that the conduct of business of the mutual fund is not in accordance with these regulations and the scheme they shall forthwith take such remedial steps as are necessary by them and shall immediately inform the Board of the violation and the action taken by them.

(11) Each trustee shall file the details of his holdings in securities on a half yearly basis with the trust.

(12) The trustees shall be accountable for, and be the custodian of, the funds and property of the respective schemes and shall hold the same in trust for the benefit of the unit holders in accordance with these regulations and the provisions of trust deed.

(13) The trustees shall take steps to ensure that the transactions of the mutual fund are in accordance with the provisions of the trust deed.

(14) The trustees shall be responsible for the calculation of any income due to be paid to the mutual fund and also of any income received in the mutual fund for the holders of the units of any scheme in accordance with these regulations and the trust deed.

(15) The trustees shall obtain the consent of the unitholders -

(a) whenever required to do so by the Board in the interest of the unit-holders; or

(b) whenever required to do so on the requisition made by three-fourths of the unit holders of any scheme; or

(c) when the majority of the trustees decide to wind up or prematurely redeem the units; or

(d) when any change in the fundamental attributes of any scheme or the trust or fees and expenses payable or any other change which would modify the scheme or affect the interest of the unitholders is proposed to be carried out

unless the consent of not less than three-fourths of the unit holders is obtained:

Provided that no such change shall be carried out unless three fourths of the unit holders have given their consent and the unit holders who do not give their consent are allowed to redeem their holdings in the scheme.

Explanation: For the purposes of this clause "fundamental attributes" means the investment objective and terms of a scheme.

(16) The trustees shall call for the details of transactions in securities by the key personnel of the asset management company in his own name or on behalf of the asset management company and shall report to the Board, as and when required.

(17) The trustees shall quarterly review all transactions carried out between the mutual funds, asset management company and its associates.

(18) The trustees shall continuously review the networth of the asset management company and in case of any shortfall, ensure that the asset management company make up for the shortfall as per clause (f) of sub-regulation (1) of regulation 21.

(19) The trustees shall periodically review all service contracts such as custody arrangements,

transfer agency of the securities and satisfy itself that such contracts are executed in the interest of the unitholders.

(20) The trustees shall ensure that there is no conflict of interest between the manner of deployment of its networth by the asset management company and the interest of the unitholders.

(21) The trustees shall periodically review the investor complaints received and the redressal of the same by the asset management company.

(22) The trustees shall abide by the Code of Conduct as specified in the Fifth Schedule.

(23) The trustees shall furnish to the Board on a half yearly basis, -

(a) a report on the activities of the mutual fund;

(b) a certificate stating that the trustees have satisfied themselves that there have been no instances of self dealing or front running by any of the trustees, directors and key personnel of the asset management company;

(c) a certificate to the effect that the asset management company has been managing the schemes independently of any other activities and incase any activities of the

nature referred to in sub-regulation (2) of regulation 24 have been undertaken by the asset management company and has taken adequate steps to ensure that the interest of the unitholders are protected.

CHAPTER IV
CONSTITUTION AND MANAGEMENT OF ASSET MANAGEMENT COMPANY
AND CUSTODIAN

Application by an asset management company

19 (1) The application for the approval of the asset management company shall be made in Form D.

(2) The provisions of regulations 5, 6 and 8 shall, so far as may be, apply to the application made under sub-regulation (1) as they apply to the application for registration of a mutual fund.

Appointment of an asset management company

20 (1) The sponsor or, if so authorised by the trust deed, the trustee shall, appoint an asset management company, which has been approved by the Board under sub-regulation (2) of regulation 21.

(2) The appointment of an asset management company can be terminated by majority of the trustees or by seventy five per cent of the unit-holders of the scheme.

(3) Any change in the appointment of the asset management company shall be subject to prior approval of the Board and the unitholders.

Eligibility criteria for appointment of asset management company

21 (1) For grant of approval of the asset management company the applicant has to fulfil the following: -

(a) in case the asset management company is an existing asset management company it has a sound track record, general reputation and fairness in transactions;

Explanation: For the purpose of this clause sound track record shall mean the networth and the profitability of the asset management company.

(b) the directors of the asset management company are persons having adequate professional experience in finance and financial services related field and not found guilty of moral turpitude or convicted of any economic offence or violation of any securities laws;

(c) the key personal of the asset management company has not been working for any asset management company or mutual fund or any intermediary whose registration has been suspended or cancelled at any time by the Board;

(d) the board of directors of such asset management company has atleast fifty percent directors, who are not associate of, or associated in any manner with, the sponsor or any of its subsidiaries or the trustees;

(e) the Chairman of the asset management company is not a trustee of any mutual fund;

(f) the asset management company has a networth of not less than rupees ten crores:

Provided that an asset management company already granted approval under the provisions of Securities and Exchange Board of India (Mutual Funds) Regulations, 1993 shall

within a period of twelve months from the date of notification of these regulations increase its networth to rupees ten crores.

Explanation: For the purposes of this clause, "networth" means the paid up capital and free reserves of the company.

(2) The Board may, after considering an application with reference to the matters specified in sub-regulation (1), grant approval to the asset management company.

22. The approval granted under sub-regulation (2) of regulation 21 shall be subject to the following conditions, namely :-

**Terms and conditions to be
complied with**

(a) any director of the asset management company shall not hold the office of the director in another asset management company unless such person is an independent director referred to in clause (d) of sub-regulation (1) of regulation 21 and approval of the board of asset management company of which such person is a director, has been obtained;

(b) the asset management company shall forthwith inform the Board of any material change in the information or particulars previously furnished, which have a bearing on the approval granted by it;

(c) no appointment of a director of an asset management company shall be made without prior approval of the trustees;

(d) the asset management company undertakes to

comply with these regulations;

(e) any change in controlling interest of the asset management company shall be only with prior approval of trustees, the Board and the unitholders.

(f) The asset management company shall furnish such information and documents to the trustees as and when required by the trustees.

Procedure where approval is not granted :

23. Where an application made under regulation 19 for grant of approval does not satisfy the eligibility criteria laid down in regulation 21, the Board may reject the application.

Restrictions on business activities of the asset management company.

24. The asset management company shall

(1) not act as a trustee of any mutual fund;
 (2) not undertake any other business activities except activities in the nature of management and advisory services to offshore funds, pension funds, provident funds, venture capital funds, management of insurance funds, financial consultancy and exchange of research on commercial basis if any of such activities are not in conflict with the activities of the mutual fund;

Provided that the asset management company may itself or through its subsidiaries undertake such activities if it satisfies the Board that the key personnel of the asset management company, the systems, back office, bank and securities accounts are segregated activity wise and there exist systems to prohibit access to inside information of various activities.

Provided further that asset management company shall meet capital adequacy requirements, if any, separately for each such activity and obtain separate approval, if necessary under the relevant regulations.

(3) the asset management company shall not invest in any of its schemes unless full disclosure of its intention to invest has been made in the offer documents.

Provided that an asset management company shall not be entitled to charge any fees on its investment in that scheme.

Asset Management Company and its obligations

25(1) The asset management company shall take all reasonable steps and exercise due diligence to ensure that the investment of funds pertaining to any scheme is not contrary to the provisions of these regulations and the trust deed.

(2) The asset management company shall exercise due diligence and care in all its investment decisions as would be exercised by other persons engaged in the same business.

(3) The asset management company shall be responsible for the acts of commissions or omissions by its employees or the persons whose services have been procured by the asset management company.

(4) The asset management company shall submit to the trustees quarterly reports of each year on

its activities and the compliance with these regulations.

(5) The trustees at the request of the asset management company may terminate the assignment of the asset management company at any time:

Provided that such termination shall become effective only after the trustees have accepted the termination of assignment and communicated their decision in writing to the asset management company.

(6) Notwithstanding anything contained in any contract or agreement or termination, the asset management company or its directors or other officers shall not be absolved of liability to the mutual fund for their acts of commission or omissions, while holding such position or office.

(7) No asset management company shall deal in securities through any broker associated with the sponsor or a firm which is an associate of a sponsor beyond 5% of the daily gross business of the mutual fund.

(8) An asset management company shall not utilise the services of the sponsor or any of its associates, employees or their relatives, for the purpose of any securities transaction and distribution and sale of securities:

Provided that an asset management

company may utilise such services if disclosure to that effect is made to the unit holders and the brokerage or commission paid is also disclosed in the half yearly annual accounts of the mutual fund.

(9) The asset management company shall file with the trustees the details of transactions in securities by the key personnel of the asset management company in their own name or on behalf of the asset management company and shall also report to the Board, as and when required by the Board.

(10) In case the asset management company enters into any securities transactions with any of its associates a report to that effect shall immediately be sent to the trustees.

(11) In case any company has invested more than 5 per cent of the net asset value of a scheme, the investment made by that scheme or by any other scheme of the same mutual fund in that company or its subsidiaries shall be brought to the notice of the trustees by the asset management company and be disclosed in the half yearly and annual accounts of the respective schemes with justification for such investment.

(12) The asset management company shall file with the trustees and the Board -

(a) detailed bio-data of all its directors alongwith

their interest in other companies within fifteen days of their appointment; and

(b) any change in the interests of directors every six months.

(13) A statement of holdings in securities of the directors of the asset management company shall be filed with the trustees with the dates of acquisition of such securities at the end of each financial year.

(14) The asset management company shall not appoint any person as key personnel who has been found guilty of any economic offence or involved in violation of securities laws.

(15) The asset management company shall appoint registrars and share transfer agents who are registered with the Board.

Provided if the work relating to the transfer of units is processed in-house, the charges at competitive market rates may be debited to the scheme and for rates higher than the competitive market rates, prior approval of the trustees shall be obtained and reasons for charging higher rates shall be disclosed in the annual accounts.

(16) The asset management company shall abide by the Code of Conduct as specified in the Fifth Schedule.

Appointment of Custodian

26. (1) The mutual fund shall appoint a custodian to carry out the custodial services for the schemes of the fund and sent intimation of the same to the Board within fifteen days of the appointment of the custodian.

(2) No custodian in which the sponsor or its associates hold 50% or more of the voting rights of the share capital of the custodian or where 50% or more of the directors of the custodian represent the interest of the sponsor or its associates shall act as custodian for a mutual fund constituted by the same sponsor or any of its associate or subsidiary company.

Agreement with Custodian

27 The mutual fund shall enter into a custodian agreement with the custodian, which shall contain the clauses which are necessary for the efficient and orderly conduct of the affairs of the custodian.

Provided that the agreement, the service contract, terms and appointment of the custodian shall be entered into with the prior approval of the trustees.

CHAPTER V

SCHEMES OF MUTUAL FUND

Procedure for launching of schemes.

28.(1) No scheme shall be launched by the asset management company unless such scheme is approved by the trustees and a copy of the offer document has been filed with the Board.

Filing Fees .

(2) Every mutual fund shall along with the offer document of each scheme pay filing fees as specified in the Second Schedule.

Disclosures in the offer document ,

29 (1) The offer document shall contain disclosures which are adequate in order to enable the investors to make informed investment decision.

(2) The Board may in the interest of investors require the asset management company to carry out such modifications in the offer document as it deems fit.

(3) In case no modifications are suggested by the Board in the offer document within 21 days from the date of filing, the asset management company may issue the offer document.

Advertisement material

30. (1) Advertisements in respect of every scheme shall be in conformity with the Advertisement Code as specified in the Sixth Schedule and shall be submitted to the Board within 7 days from the date of issue.

(2) The advertisement for each scheme shall disclose in addition the investment objectives, the method and periodicity of valuation of investments, the method and periodicity of sales and repurchases.

Misleading statements

31 The offer document and advertisement materials shall not be misleading or contain any statement or opinion which are incorrect or false.

Listing of close ended schemes

32 Every close ended scheme shall be listed in a recognized stock exchange within six months from the closure of the subscription.

Provided that listing of close ended scheme shall not be mandatory -

(a) if the said scheme provides for periodic repurchase facility to all the unitholders with restriction, if any, on the extent of such repurchase; or

(b) if the said scheme provides for monthly income or caters to special classes of persons like senior citizens, women, children, widows or physically handicapped or any special class of persons providing for repurchase of units at regular intervals; or

(c) if the details of such repurchase facility are clearly disclosed in the offer document; or

(d) if the said scheme opens for repurchase within a period of six months from the closure of subscription.

Repurchase of close ended schemes.

33. (1) The asset management company may at its option repurchase or reissue the repurchased units of a close ended scheme.

(2) The units of close ended schemes referred to in the proviso to regulation 32 may be open for sale or redemption at fixed pre-determined intervals without listing if the maximum and minimum amount of sale or redemption of the units and the periodicity of such sale or redemption have been disclosed in the offer document.

(3) The units of close ended scheme may be converted into open ended scheme,-

(a) if the offer document of such scheme discloses the option and the period of such conversion; or

(b) the majority of the unitholders gives a consent to that effect.

(4) A close ended scheme shall be fully redeemed at the end of the maturity period unless a majority of the unitholders otherwise decide for its rollover by passing a resolution:

Provided that the unitholders not opting for the rollover shall be allowed to redeem their holdings in the scheme.

Offering Period .

34. No scheme of a mutual fund other than the offering period of any equity linked savings schemes shall be open for subscription for more

than 45 days.

Allotment of Units and refunds of moneys ,

35.(i) The asset management company shall specify in the offer document, -

- (a) the minimum subscription amount it seeks to raise under the scheme; and
- (b) in case of oversubscription the extent of subscription it may retain.

Provided that where the asset management company retains the oversubscription referred to in clause (b), all the applicants applying upto five thousand units shall be given full allotment subject to the oversubscription mentioned in clause (b).

(2) The mutual fund and asset management company shall be liable to refund the application money to the applicants,-

- (i) if the mutual fund fails to receive the minimum subscription amount referred to in clause (a) of sub-regulation (1);
- (ii) if the moneys received from the applicants for units are in excess of subscription as referred to in clause (b) of sub-regulation (1).

(3) Any amount refundable under sub-regulation (2) shall be refunded within a period of six weeks from the date of closure of subscription list, by Registered A.D and by cheque or demand draft marked "A/C. Payee" to the applicants.

(4) In the event of failure to refund the amounts within the period specified in sub-regulation (3), the asset management company shall be liable to pay interest to the applicants at a rate of fifteen percent per annum on the expiry of six weeks from the date of closure of the subscription list.

Unit certificates or Statement of Accounts

36 The asset management company shall issue to the applicant whose application has been accepted, unit certificates or a statement of accounts specifying the number of units allotted to the applicant as soon as possible but not later than six weeks from the date of closure of the subscription list.

Provided that if an applicant so desires, the asset management company shall issue the unit certificates to the applicant within six weeks of the receipt of request for the certificate.

Transfer of units

37. (1) An unit certificate unless otherwise restricted or prohibited under the scheme, shall be freely transferable by act of parties or by operation of law.

(2) The asset management company shall, on production of instrument of transfer together with relevant unit certificates, register the transfer and return the unit certificate to the transferee within thirty days from the date of such production.

Provided that if the units are with the depository such units will be transferable in

accordance with the provisions of the Securities and Exchange Board of India (Depositories and Participants) Regulations, 1996.

Guaranteed returns

38: No guaranteed return shall be provided in a scheme,

- (a) unless such returns are fully guaranteed by the sponsor or the asset management company;
- (b) unless a statement indicating the name of the person who will guarantee the return, is made in the offer document;
- (c) the manner in which the guarantee to be met has been stated in the offer document.

Winding up

39.(1) A close-ended scheme shall be wound up on the expiry of duration fixed in the scheme on the redemption of the units unless it is rolled-over for a further period under sub-regulation (4) of regulation 33.

(2) A scheme of a mutual fund may be wound up, after repaying the amount due to the unitholders,-

- (a) on the happening of any event which, in the opinion of the trustees, requires the scheme to be wound up; or
- (b) if seventy five per cent of the unit holders of a scheme pass a resolution that the scheme be wound up; or
- (c) if the Board so directs in the interest of the unit-holders.

(3) Where a scheme is to be wound up under sub-regulation (1) or sub-regulation (2), the trustees shall give notice disclosing the circumstances leading to the winding up of the scheme:-

- (a) to the Board; and
- (b) in two daily newspapers having circulation all over India, a vernacular newspaper circulating at the place where the mutual fund is formed.

Effect of winding up

40. On and from the date of the publication of notice under clause (b) of sub-regulation (3) of regulation 39, the trustee or the asset management company as the case may be, shall-

- (a) cease to carry on any business activities in respect of the scheme so wound up;
- (b) cease to create or cancel units in the scheme;
- (c) cease to issue or redeem units in the scheme.

Procedure and Manner of winding up

41. (1) The trustee shall call a meeting of the unit holders to approve by simple majority of the unit holders present and voting at the meeting resolution for authorising the trustees or any other person to take steps for winding up of the scheme.

Provided that a meeting of the unit holders shall not be necessary if the scheme is wound up at the end of maturity period of the scheme.

(2)(a) The trustee or the person authorised under sub-regulation (1) shall dispose of the assets of

the scheme concerned in the best interest of the unit holders of that scheme.

(b) The proceeds of sale realised under clause (a), shall be first utilised towards discharge of such liabilities as are due and payable under the scheme and after making appropriate provision for meeting the expenses connected with such winding up, the balance shall be paid to the unit holders in proportion to their respective interest in the assets of the scheme as on the date when the decision for winding up was taken.

(3) On the completion of the winding up, the trustee shall forward to the Board and the unit holders a report on the winding up containing particulars such as circumstances leading to the winding up, the steps taken for disposal of assets of the fund before winding up, expenses of the fund for winding up, net assets available for distribution to the unitholders and a certificate from the auditors of the fund.

(4) Notwithstanding anything contained in this regulation, the provisions of these regulations in respect of disclosures of half yearly reports and annual reports shall continue to be applicable.

Winding up of the scheme

42. After the receipt of the report under sub-regulation (3) of Regulation 41, if the Board is satisfied that all measures for winding up of the scheme have been complied with, the scheme shall cease to exist.

CHAPTER VI

INVESTMENT OBJECTIVES AND VALUATION POLICIES

Investment objective .

43. The moneys collected under any scheme of a mutual fund shall be invested only in transferable securities in the money market or in the capital market or in privately placed debentures or securitised debts.

Provided that moneys collected under any money market scheme of a mutual fund shall be invested only in money market instruments in accordance with directions issued by the Reserve Bank of India;

Provided further that in case of securitised debts such fund may invest in asset backed securities excluding mortgaged backed securities.

**Investment, borrowing, restriction,
etc. —**

44.(1) Any investments to be made under regulation 43 shall be invested subject to the investment restriction specified in the Seventh Schedule.

(2) The mutual fund shall not borrow except to meet temporary liquidity needs of the mutual funds for the purpose of repurchase, redemption of units or payment of interest or dividend to the unit holders.

Provided that the mutual fund shall not borrow more than 20% of the net asset of the scheme and the duration of such a borrowing shall not exceed a period of six months.

(3) The mutual fund shall not advance any loans for any purpose.

Option Trading, etc.

45. The funds of a scheme shall not in any manner be used in option trading or in short selling or carry forward transactions.

Underwriting of Securities

46. Mutual funds may enter into underwriting agreement after obtaining a certificate of registration in terms of the Securities and Exchange Board of India (Underwriters) Rules and Securities and Exchange Board of India (Underwriters) Regulations, 1993 authorising it to carry on activities as underwriters.

Explanation:(1) For the purpose of these regulations, the underwriting obligation will be deemed as if investments are made in such securities.

(2) The capital adequacy norms for the purpose of underwriting shall be the net asset of the scheme.

Provided that the underwriting obligation of a mutual fund shall not at any time exceed the total net asset value of the scheme.

Method of valuation of investments

47. Every mutual fund shall compute and carry out valuation of its investments in its portfolio and publish the same in accordance with the valuation norms specified in Eighth Schedule.

Computation of Net Asset Value.

48.(1) Every mutual fund shall compute the Net Asset Value of each scheme by dividing the net assets of the scheme by the number of units outstanding on the valuation date.

(2) The Net Asset Value of the scheme shall be calculated and published atleast in two daily newspapers at intervals of not exceeding one week:

Provided that the Net Asset Value of any scheme for special target segment or any monthly income scheme which are not mandatorily required to be listed in any stock exchange under Regulation 32, may publish the Net Asset Value at monthly or quarterly intervals as may be permitted by the Board.

Pricing of Units

49.(1) The price at which the units may be subscribed or sold and the price at which such units may at any time be repurchased by the mutual fund shall be made available to the investors.

(2) The mutual fund, in case of open ended scheme, shall atleast once a week publish in a daily newspaper of all India circulation, the sale and repurchase price of units.

(3) While determining the prices of the units, the mutual fund shall ensure that the repurchase price is not lower than 93% of the Net Asset Value and the sale price is not higher than 107%

of the Net Asset Value.

Provided that the repurchase price of the units of a close ended scheme shall not be lower than 95% of the Net Asset Value:

Provided further that the difference between the repurchase price and the sale price of the unit shall not exceed 7% calculated on the sale price.

(4) The price of units shall be determined with reference to the last determined Net Asset Value as mentioned in sub-regulation (3) unless,

- (a) the scheme announces the Net Asset Value on a daily basis; and
- (b) the sale price is determined by adding to the future Net Asset Value a fixed premium which is declared in advance.

CHAPTER VII

GENERAL OBLIGATIONS

To maintain proper books of accounts and records, etc. —

50.(1) Every asset management company for each scheme shall keep and maintain proper books of accounts, records and documents, for each scheme so as to explain its transactions and to disclose at any point of time the financial position of each scheme and in particular give a true and fair view of the state of affairs of the fund and intimate to the Board the place where such books of accounts, records and documents are maintained.

(2) Every asset management company shall maintain and preserve for a period of ten years its books of accounts, records and documents.

(3) The asset management company shall follow the accounting policies and standards as specified in Ninth Schedule so as to provide appropriate details of the schemewise disposition of the assets of the fund at the relevant accounting date and the performance during that period together with information regarding distribution or accumulation of income accruing to the unitholder in a fair and true manner.

Financial year

51. The financial year for all the schemes shall end as of March 31 of each year.

Provided that, for a new scheme commenced during a financial year, the disclosure and reporting requirements would apply for the period beginning from the date of its commencement and ending on March 31st of the following year.

Limitation on fees and expenses on issue of schemes

52.(1) All expenses should be clearly identified and appropriated in the individual schemes.

(2) The Asset Management Company may charge the mutual fund with investment and advisory fees which are fully disclosed in the offer document subject to the following namely:-

(i) One and a quarter of one per cent of the weekly average net assets outstanding in each accounting year for the scheme concerned, as long as the net assets do not exceed Rs.100 crores, and

(ii) One per cent of the excess amount over Rs.100 crores, where net assets so calculated exceed Rs.100 crores.

(3) For schemes launched on a no load basis, the asset management company shall be entitled to collect an additional management fee not exceeding 1% of the weekly average net assets outstanding in each financial year.

(4) In addition to the fees mentioned in sub regulation (2), the asset management company may charge the mutual fund with the following

expenses namely:-

- (a) initial expenses of launching schemes.
- (b) recurring expenses including:-
 - (i) marketing and selling expenses including agents' commission, if any;
 - (ii) brokerage and transaction cost;
 - (iii) registrar services for transfer of units sold or redeemed;
 - (iv) fees and expenses of trustees;
 - (v) audit fees;
 - (vi) custodian fees; and
 - (vii) such other costs as may be approved by the Board.

(5) Any expense other than those specified in sub-regulation (2) and (4) shall be borne by the asset management company.

Provided that initial expenses of floating the scheme shall not exceed six percent of the initial resources raised under that scheme and such expenses shall be accounted in the books of accounts of the scheme as specified in the Tenth Schedule.

(6) The total expenses of the scheme excluding issue or redemption expenses, whether initially borne by the mutual fund or by the asset management company, but including the investment management and advisory fee shall be subject to the following limits :-

- (i) On the first Rs.100 crores of the average weekly net assets 2.5%

- (ii) On the next Rs.300 crores of the average weekly net assets 2.25%
- (iii) On the next Rs.300 crores of the average weekly net assets 2.0%
- (iv) On the balance on the assets 1.75%
Provided that such recurring expenses shall be lesser by at least 0.25% of the weekly average net assets outstanding in each financial year in respect of a scheme investing in bonds.

(7) Any expenditure in excess of the limits specified in sub-regulation (6) shall be borne by the asset management company.

(8) The provisions of sub-regulations (3), (4), (5) and (6) will come into effect after three months from the date of notification of these regulations for those schemes of mutual funds which have been launched prior to notification of these regulations.

Despatch of warrants and proceeds

53. Every mutual fund and asset management company shall,

- (a) despatch to the unitholders the dividend warrants within 42 days of the declaration of the dividend.
- (b) despatch the redemption or repurchase proceeds within 10 working days from the date of redemption or repurchase.

Annual Report ,

54. Every mutual fund or the asset management company shall prepare in respect of each

financial year an annual report and annual statement of accounts of the schemes and the fund as specified in Eleventh Schedule.

Auditor's Report ,

55 (1) Every mutual fund shall have the annual statement of accounts audited by an auditor who is not in any way associated with the auditor of the asset management company.

Explanation: For the purposes of this sub-regulation and regulation 66 "auditor" means a person who is qualified to audit the accounts of a company under section 224 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956).

(2) An auditor shall be appointed by the trustees.

(3) The auditor shall forward his report to the trustees and such report shall form part of the Annual Report of the mutual fund.

(4) The auditor's report shall comprise of the following:-

(a) a certificate to the effect that:-

(i) he has obtained all information and explanations which, to the best of his knowledge and belief, were necessary for the purpose of the audit;

(ii) the balance sheet and the revenue account give a fair and true view of the scheme, state of affairs and surplus or deficit in the Fund for the accounting period to which the Balance Sheet or, as the case may be the Revenue Account relates;

(iii) the statement of account has been prepared in accordance with accounting policies and standards as specified in the Ninth Schedule.

Publication of Annual Report and summary thereof

56 (1) The schemewise Annual Report of a mutual fund or an abridged summary thereof shall be published through an advertisement as soon as may be but not later than six months from the date of closure of the relevant accounts year.

(2) The Annual Report and abridged summary thereof shall contain details as specified in the Eleventh Schedule and such other details as are necessary for the purpose of providing a true and fair view of the operations of the mutual fund.

(3) The report if published in summary form shall carry a note that full Annual Report shall be available for inspection at the Head Office of the mutual fund and a copy thereof shall be made available to the unit holder on payment of such nominal fees as may be specified by the mutual fund.

Annual Report to be forwarded to the Board

57 Every mutual fund and asset management company shall within six months from the date of closure of each financial year forward to the Board a copy of the Annual Report and other information including details of investments and deposits held by the mutual fund so that the entire schemewise portfolio of the mutual funds

is disclosed to the Board.

Periodic and continual disclosures

58 (1) The mutual fund, the asset management company, the trustee, custodian, sponsor of the mutual fund shall make such disclosures or submit such documents as they may be called upon to do so by the Board.

(2) Without prejudice to the generality of sub-regulation (1), the mutual fund and the asset management company shall furnish the following periodic reports to the Board namely :-

- (a) copies of the duly audited annual statements of accounts including the balance sheet and the profit and loss account for the fund and in respect of each scheme, once a year;
- (b) a copy of six monthly unaudited accounts;
- (c) a quarterly statement of movements in net assets for each of the schemes of the fund;
- (d) a quarterly portfolio statement, including changes from the previous periods, for each scheme.

(3) No sale of units of any scheme of a mutual fund shall be made by the trustees or an asset management company unless accompanied by documents which contain information which is adequate for the investors to take an informed decision.

Half Yearly disclosures

59. A mutual fund and asset management company shall before the expiry of two months

from the close of each half year that is on 31st March and on 30th September, publish its unaudited financial results in one english daily newspaper circulating in the whole of India and in a newspaper published in the language of the region where the Head Office of the mutual fund is situated.

Provided that the half-yearly unaudited report referred in this sub-regulation shall contain details as specified in Twelfth Schedule and such other details as are necessary for the purpose of providing a true and fair view of the operations of the mutual fund.

Disclosures to the investors

60. The trustees shall be bound to make such disclosures to the unit holders as are essential in order to keep them informed about any information which may have an adverse bearing on their investments.

CHAPTER VIII

INSPECTION AND AUDIT

Board's right to inspect and investigate

61.(1) The Board may appoint one or more persons as inspecting officer to undertake the inspection of the books of accounts, records, documents and infrastructure, systems and procedures or to investigate the affairs of a mutual fund, the trustees and asset management company for any of the following purposes, namely:

- (a) to ensure that the books of accounts are being maintained by the mutual fund, the trustees and asset management company in the manner specified in these regulations;
- (b) to ascertain whether the provisions of the Act and these regulations are being complied with by the mutual fund, the trustees and asset management company;
- (c) to ascertain whether the systems, procedures and safeguards followed by the mutual fund are adequate;
- (d) to ascertain whether the provisions of the Act or any rules or regulations made thereunder have been violated;
- (e) to investigate into the complaints received from the investors or any other person on any matter having a bearing on the activities of the mutual funds, trustees and asset management company;

(f) to suo-motu ensure that the affairs of the mutual fund, trustees or asset management company are being conducted in a manner which are in the interest of the investors or the securities market.

Notice before inspection and investigation

62. (1) Before ordering an inspection or investigation under regulation 61 the Board shall give not less than ten days notice to the mutual fund, asset management company or trustees as the case may be.

(2) Notwithstanding anything contained in sub-regulation (1), where the Board is satisfied that in the interest of the investors no such notice should be given, it may, by an order in writing direct that such inspection or investigation be taken up without such notice.

(3) During the course of inspection or investigation, the mutual fund, trustees or asset management company against whom the inspection or investigation is being carried out shall be bound to discharge his obligations as provided in regulation 63.

Obligations on inspection and investigation

63 (1) It shall be the duty of the mutual fund, trustees or asset management company whose affairs are being inspected or investigated, and of every director, officer and employee thereof, to produce to the inspecting officer such books,

accounts, records, and other documents in its custody or control and furnish him such statements and information relating to the activities as mutual funds, trustees or asset management company, as the inspecting officer may require, within such reasonable period as the inspecting officer may specify.

(2) The mutual fund, trustees or asset management company shall allow the inspecting officer to have a reasonable access to the premises occupied by it or by any other person on its behalf and also extend reasonable facility for examining any books, records, documents, and computer data in the possession of the mutual fund, trustees and asset management company or such other person and also provide copies of documents or other materials which in the opinion of the inspecting officer are relevant for the purpose of the inspection.

(3) The inspecting officer, in the course of inspection or investigation, shall be entitled to examine or record the statements of any director, officer, or employee of the mutual fund, trustees and asset management company.

(4) It shall be the duty of every director, officer, or employee of the mutual fund, asset management company or trustee to give to the inspecting officer all assistance in connection with the inspection or investigation, which the

inspecting officer may reasonably require.

Submission of report to the Board .

64. The inspecting officer shall, as soon as possible, on completion of the inspection or investigation submit a report to the Board:

Provided that if directed to do so by the Board, he may submit interim reports.

Communications of findings, etc.

65.(1) The Board shall, after consideration of the inspection report or investigation report referred to in regulation 64, communicate the findings of the inspecting officer to the mutual fund, trustees or asset management company as the case may be, and give him an opportunity of being heard:

Provided that if any proceedings under Chapter VIII are initiated the procedure under Chapter VIII shall be followed.

(2) On receipt of the reply if any, from the mutual fund, trustees or asset management company, as the case may be, the Board may call upon the trustees or asset management company to take such measures as the Board may deem fit in the interest of the investors, securities market and for due compliance with the provisions of these regulations.

Appointment of Auditor

66. (1) Without prejudice to the provisions of regulation 55, the Board shall have the power to appoint an auditor to inspect or investigate, as the case may be, into the books of accounts or the affairs of the mutual fund, trustee or asset

management company:

Provided that the Auditor so appointed shall have the same powers of the inspecting officer as stated in Regulation 61 and the obligation of the mutual fund, asset management company, trustee, and their respective employees in regulation 63, shall be applicable to the investigation under this regulation.

Payment of inspection fees to the Board

67. The Board shall be entitled to recover such expenses including fees paid to the auditors as may be incurred by it for the purposes of inspecting the books of accounts, records and documents of the mutual fund, the trustees and the asset management company.

CHAPTER IX

PROCEDURE FOR ACTION IN CASE OF DEFAULT

Suspension of certificate

68. The Board may suspend a certificate granted to a mutual fund if such mutual fund :-

- (a) contravenes any of the provisions of the Act and these regulations;
- (b) fails to furnish any information or furnishes wrong information relating to its activity as a mutual fund as required under these regulations;
- (c) fails to submit periodical returns as required under these regulations;
- (d) does not co-operate in any inquiry or inspection conducted by the Board;
- (e) fails to comply with any directions of the Board issued under the provisions of the Act or the regulations;
- (f) fails to resolve the complaints of the investors or fails to give a satisfactory reply to the Board in this behalf;
- (g) indulges in unfair trade practices in securities;

Explanation: For the purpose of this clause "unfair trade practices" has the same meaning as in Securities & Exchange Board of India (Fraudulent and Unfair Trade Practices in Securities Market) Regulations, 1995;

- (h) is guilty of misconduct or improper or unbusinesslike or unprofessional conduct which is not in accordance with the Code of Conduct specified in the Fifth Schedule;
- (i) asset management company fails to maintain

the networth in accordance with the provisions of regulation 21;

(j) fails to pay any fees;

(k) violates the conditions of registration;

(l) mutual fund, asset management company or trustees of that mutual fund does not carry out its obligations as specified in these regulations.

Cancellation of certificate

69. The Board may cancel the certificate of registration granted to a mutual fund, if such mutual fund -

(a) is guilty of fraud, or has been convicted of an economic offence;

(b) has been guilty of repeated defaults of the nature specified in regulation 68;

(c) the mutual fund, asset management company, trustee of that mutual fund indulges in price manipulation or price rigging or cornering activities affecting the securities market and the investors interest;

(d) the financial position of the mutual fund deteriorates to such an extent that the Board is of the opinion that its continuance is not in the interest of unitholders and other mutual funds.

Manner of making order of cancellation or suspension . —

70. No order of suspension or cancellation of certificate or the approval, as the case may be, shall be made by the Board against a mutual fund, trustees, asset management company except after holding an enquiry in accordance with the procedure specified in regulation 71.

Manner of holding enquiry before suspension or cancellation

71.(1) For the purpose of holding an enquiry, under regulation 70 the Board may appoint one or more enquiry officers.

(2) The enquiry officer shall issue to the mutual fund, asset management company or the trustee, as the case may be, at its registered office or the principal place of its business, a notice setting out the grounds on which action is proposed to be taken against it and calling upon it to show cause against such action within a period of fourteen days from the date of receipt of the notice.

(3) The mutual fund, asset management company or trustee shall within fourteen days of the date of receipt of such notice, furnish to the enquiry officer a written reply, together with copies of documentary or other evidence relied on by it or sought by the Board from the mutual fund, trustees, or asset management company.

(4) The enquiry officer shall give a reasonable opportunity of hearing to the mutual fund, trustees, or asset management company, to enable it to make submissions in support of its reply made under sub-regulation (3).

(5) Before the enquiry officer, the mutual fund, trustees or asset management company may either appear in person or through any person duly authorised by the mutual fund, trustees or

asset management company.

Provided that no lawyer or advocate shall be permitted to represent the mutual fund, trustees or asset management company at the enquiry:

Provided further that where a lawyer or an advocate has been appointed by the Board as a presenting officer under sub-regulation (6), it shall be lawful for the mutual fund, asset management company or trustee to present its case through a lawyer or advocate.

(6) The enquiry officer may if he considers it necessary, ask the Board to appoint a presenting officer to present its case.

(7) The enquiry officer shall, after taking into account all relevant facts and submissions made by the mutual fund, trustees or asset management company submit a report to the Board and recommend the action, if any, to be taken against the mutual fund, trustees or asset management company as also the grounds on which the penal action is justified.

Show cause notice and order .

72.(1) On receipt of the report from the enquiry officer, the Board shall consider the same and issue to the mutual fund, trustees or asset management company, a show-cause notice.

(2) The mutual fund, asset management company or trustee, shall within fourteen days of the date of the receipt of the show-cause notice, send a reply to the Board.

(3) The Board, after considering the reply of the mutual fund, trustees or asset management company, if any, shall as soon as possible pass such order as it deems fit.

(4) The Board shall send to the mutual fund, trustees, or asset management company, a copy of the order made under sub-regulation (3).

Effect of suspension or cancellation of certificate of registration

73. (1) On and from the date of the suspension of the certificate or the approval, as the case may be, the mutual fund, trustees or asset management company, shall cease to carry on any activity as a mutual fund, trustee or asset management company, during the period of suspension, and shall be subject to the directions of the Board with regard to any records, documents, or securities that may be in its custody or control, relating to its activities as mutual fund, trustees or asset management company.

(2) On and from the date of cancellation of the certificate or the approval, as the case may be, the mutual fund, trustees or asset management company shall with immediate effect, cease to carry on any activity as mutual fund, trustees or

asset management company, as the case may be.

(3) The Board may in the interest of the unit holders issue directions with regard to the transfer of any records, documents or securities that may be in its custody or control, relating to its activities as mutual fund, trustees or asset management company.

(4) The Board may in order to protect the interest of the unit holders order the transfer of records, document, securities, etc. to any person specifically appointed for the purpose or to any other trustee or asset management company.

Provided that the Board shall while appointing such a person determine the terms and conditions of such an appointment.

Publication of order of suspension or cancellation

74. The order of suspension or cancellation passed under sub-regulation (3) of regulation 72, may be published by the Board in two newspapers.

Action against intermediaries

75. The Board may initiate action for suspension or cancellation of registration of an intermediary holding a certificate of registration under section 12 of the Act who fails to exercise due diligence or to comply with the obligations under these regulations:

Provided that no such certificate of registration shall be suspended or cancelled unless the procedure specified in the regulations

applicable to such intermediary is complied with.

Adjudication, etc.

76. The Board may for the offences specified in sections 15 A to 15 E of the Act initiate action under section 15 I of the Act and in case of violation of any of the provisions of the Act or the regulations, initiate action under sections 11, 11B or section 24 of the Act.

(2) The Board may in addition to suspension or cancellation of certificate, order suspension of launching of any scheme of a mutual fund for a period not exceeding one year for violation of any of the provisions of these regulations after following procedure under this Chapter.

(3) The Board may during the pendency of any proceeding of suspension or cancellation under this Chapter also order suspension for launching of any scheme not exceeding three months without following procedure under this Chapter.

Provided that no order shall be passed without giving an opportunity of hearing.

CHAPTER X

MISCELLANEOUS

Power of the Board to issue clarifications

77. In order to remove any difficulties in the application or interpretation of these regulations, the Board shall have the power to issue clarifications and guidelines in the form of notes or circulars which shall be binding on the sponsor, mutual funds, trustees, asset management companies and custodians.

Repeal and Saving

78.(1) The Securities & Exchange Board of India (Mutual Funds) Regulations, 1993 are hereby repealed.

(2) Notwithstanding such repeal:

(a) anything done or any action taken or purported to have been done or taken, including registration or approval granted, fees collected, scheme announced, registration or approval, suspended or cancelled, any inquiry or investigation commenced under the said regulations, shall be deemed to have been done or taken under the corresponding provisions of these regulations;

(b) any application made to the Board under the said regulations and pending before it shall be deemed to have been made under the corresponding provisions of these regulations;

(c) any appeals preferred to the Central Government under the said regulations and pending before it shall be deemed to have been preferred under the corresponding provisions of these regulations.

F No. SEBI/LE/23/96]

D. R. MEHTA, Chairman

FIRST SCHEDULE - FORMS**FORM A****SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA****(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996**
(Regulation 3, 5)**APPLICATION FOR THE GRANT OF REGISTRATION OF MUTUAL FUND****NAME OF APPLICANT****CONTACT PERSON/****NAME OF THE COMPLIANCE OFFICER****TELEPHONE NO. :** _____ **FAX NO.****INSTRUCTION FOR FILLING UP FORM :-**

1. Applicants must submit a completed application form together with appropriate supporting documents to the Board.
2. It is important that this application form should be filled in accordance with the regulations.
3. An application which is not complete is liable to be rejected.
4. Answers must be typed and legible.
5. Information which needs to be supplied in more details may be given on separate sheets which should be attached to the application form.
6. The application must be signed by the competent person having authority to do so and all signatures must be in original.

APPLICATION BY SPONSOR OF THE MUTUAL FUND FOR REGISTRATION**1] NAME OF THE SPONSOR****2] ADDRESS OF THE REGISTERED
OFFICE/CORRESPONDENCE ADDRESS****TELEPHONE NOS.****TELEX NOS.****FAX NOS.****3] NAME OF THE CONTACT PERSON****4] DATE AND PLACE OF
INCORPORATION OF THE SPONSOR**
(enclose a copy of certificate of incorporation)**5] OBJECTS OF THE SPONSOR**
(enclose copy of the Memorandum and Articles of Association)**MAIN OBJECTS****ANCILLARY OBJECTS****6] CAPITAL STRUCTURE AND
SHAREHOLDING PATTERN****7] PRESENT LINE OF BUSINESS
ACTIVITIES****NUMBER OF YEARS IN THAT LINE****8] CONDENSED FINANCIAL INFORMATION**
(enclose balance sheets and profit and loss account for five years)

- 9] ACCOUNTING POLICIES**
(furnish description of significant accounting policies)
- 10] SYSTEMS AND PROCEDURES**
(furnish description of systems and procedures in the company and essential internal controls in order to carry on the business of the company)
- 11] NAMES OF THE ASSOCIATE ORGANISATIONS/GROUP COMPANIES/SUBSIDIARIES, ETC.**
- 12] MANAGEMENT OF THE SPONSOR**
- Board of the company with names, experience, qualification and profession of the Directors
- Names of key personnel
- Organisational structure
- Board of Directors of associate organisations, companies and subsidiaries
- 13] NAMES AND ADDRESSES OF THE BANKERS OF THE SPONSOR**
- 14] NAMES AND ADDRESSES OF THE AUDITORS OF THE SPONSOR**
- 15] COURT CASES/LITIGATIONS IN WHICH THE SPONSOR MAY HAVE BEEN INVOLVED IN THE LAST THREE YEARS**
- 16] AN APPLICATION FOR REGISTRATION OF MUTUAL FUND SHALL BE ACCOMPANIED BY A COPY EACH OF**
A) DRAFT TRUST DEED;
B) DRAFT INVESTMENT MANAGEMENT AGREEMENT; AND
C) DRAFT CUSTODIAN AGREEMENT

CONDENSED FINANCIAL INFORMATION

(A) INCOME STATEMENT

	YEARS					(Rs)
	1	2	3	4	5	
INCOME :						
Dividend						
Trading						
Management fee						
Other Income						
Total						
EXPENSES :						
Director's remuneration						
Trusteeship fees						
Custodian fees						
Registrar's fees						
Other expenses						
Total						
Gross Profit						
Depreciation						
Net Profit before tax						
Tax						
Profit after tax						
Dividends						
Retained Earnings						

(B) ASSETS AND LIABILITIES

	(Rs)
	YEARS
	1 2 3 4 5
ASSETS	
Fixed Assets	
Gross	
Depreciation	
Net value	_____
CURRENT ASSETS	
Investments*	
Others (please specify)	
Cash and bank balances	
LESS	
Current Liabilities and Provisions	_____
NET WORTH	
REPRESENTED BY :	
Issued and Paid up capital	
Free Reserves (excluding revaluation reserves)	_____
TOTAL	

*provide full particulars of investments

FORM B**SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA
(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996****[regulation 9]****CERTIFICATE OF REGISTRATION**

- I. In exercise of the powers conferred by Section 30 of the Securities and Exchange Board of India Act, 1992, (15 of 1992) read with the Securities and Exchange Board of India (Mutual Funds) Regulations, 1996 made thereunder the Board hereby grants a certificate of registration to _____ as a Mutual Fund.
- II. Registration Code for the Mutual Fund is MF/

Date

By order
Sd/-
For and on behalf
Securities and Exchange Board of India

FORM C**SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA****(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996**

[regulations 16(1)(d)]

TRUSTEESHIP OF THE MUTUAL FUND

- 1] IF THE TRUSTEESHIP OF THE MUTUAL FUND IS WITH A TRUST COMPANY**
then please furnish the following particulars

- [a] **the draft Articles and Memorandum of Association for approval**
- [b] **Objects of the Trust Company**
- [c] **Board of Directors of the trustee company with age, experience and qualification**
- [d] **Key personnel**
- [e] **Systems and procedures, record maintenance, etc.**
- [f] **Names of auditors and bankers**

- 2] IF THE TRUSTEESHIP OF THE MUTUAL FUND IS WITH A DEBENTURE TRUSTEE, BANK, OR FINANCIAL INSTITUTION**
then please furnish the following particulars

- [a] **Name of the Institution**
- [b] **Address/telephone/telex/fax nos**
- [c] **Name of the contact person**

- [d] **Background information i.e. (number of companies, trusts for which it has or has been acting as trustees, names of those companies, trust, number of years of experience as trustees, total volume of business, trusteeship fee record for last three years, organisational infrastructure to handle trusteeship function including record maintenance, computer facilities, in case of debenture trustees also furnish the number of defaulting companies, number of cases of default in payment of interest and principal and action taken by the debenture trustees)**

3] IF THE TRUSTEESHIP OF THE MUTUAL FUND IS WITH A BOARD OF INDIVIDUAL TRUSTEES
then please furnish the following particulars

- [a] **Names of the members of the Board of trustees**
- [b] **Age, experience, qualification and profession**
- [c] **Relationship of the members of the Board of Trustees with sponsor or any associate of the sponsor**

4] DRAFT TRUST DEED
The draft trust deed should inter alia provide for

- [a] **Responsibilities, obligations and rights of the trustees for the protection of the fund's assets**
- [b] **A statement that investments should be of the permitted kind and within set limits**
- [c] **Responsibilities, obligations and rights of the fund manager i.e. the asset management company.**

- [d] Policies for investments, creation, issue and cancellation of units, pricing and redemption of units, listing of units in case of close-ended schemes, expenses of the fund including payment of fees and distribution of income and gains and accounting.
- [e] Policies for disclosures of scheme objectives and investment objectives in offer documents and advertisements and annual and half-yearly reporting requirements to the investors of various schemes of the Fund.
- [f] Right of the trustees to obtain necessary information from asset management company besides obtaining a quarterly report from the asset management company.
- [g] Right to make spot checks on the asset management company regarding pricing of units and payment into and out of the Fund and proper accounting of the income of the fund and charging of expenses as permitted, distribution as permitted
- [h] Public availability of the trust deed

5] INSTRUCTION FOR FILLING UP THE FORM
 (See form A)

FORM D**SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA
(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996****[regulations 19(1)]****ASSET MANAGEMENT COMPANY**

- 1] NAME OF THE ASSET MANAGEMENT COMPANY**

- 2] PROPOSED REGISTERED OFFICE/
CORRESPONDENCE ADDRESS**

TELEPHONE NOS.
TELEX NOS.
FAX NOS.

3] NAME OF THE CONTACT PERSON
- 4] PROPOSED OBJECTS OF THE ASSET MANAGEMENT COMPANY**
(enclose copy of the draft Articles and
Memorandum of Association for approval)

MAIN OBJECTS

ANCILLARY OBJECTS

- 5]**
 - a] PROPOSED CAPITAL STRUCTURE**

 - b] THE NET WORTH OF THE COMPANY
TO BE REPRESENTED BY**
(necessary auditors certificate
to be furnished)

- 6] PROPOSED SYSTEMS AND PROCEDURES FOR THE ASSET MANAGEMENT COMPANY**
 (furnish description of systems and procedures proposed in the company and essential internal controls in order to carry on the business of the company)
- 7] NAMES OF THE ASSOCIATE ORGANISATIONS/GROUP COMPANIES/ SUBSIDIARIES, ETC. OF ASSET MANAGEMENT COMPANY**
- 8] MANAGEMENT OF THE ASSET MANAGEMENT COMPANY**
- Board of the company**
 with names of the Directors,
 experience,qualification
 and profession
- Names of key personnel**
- Proposed Organisational structure**
- Board of Directors of associate organisations, companies and subsidiaries**

IN CASE ASSET MANAGEMENT COMPANY IS AN EXISTING COMPANY

- 1] NAME OF THE ASSET MANAGEMENT COMPANY**
- 2] ADDRESS OF THE REGISTERED OFFICE/CORRESPONDENCE ADDRESS**
- TELEPHONE NOS.**
- TELEX NOS.**
- FAX NOS.**

- 3] NAME OF THE CONTACT PERSON**
- 4] DATE AND PLACE OF INCORPORATION OF THE ASSET MANAGEMENT COMPANY**
(enclose a copy of certificate of incorporation)
- 5] OBJECTS OF THE ASSET MANAGEMENT COMPANY**
(enclose copy of the Memorandum and Articles of Association)

MAIN OBJECTS

ANCILLARY OBJECTS

(the Memorandum and Articles of Association would need the approval of SEBI and necessary amendments shall have to be incorporated in the existing Memorandum and Articles of Association)

- 6] CAPITAL STRUCTURE AND SHAREHOLDING PATTERN**
(as of the latest date)

NET WORTH OF THE COMPANY
(as of the latest date)
TO BE REPRESENTED BY

- 7] PRESENT LINE(S) OF BUSINESS ACTIVITIES**

NUMBER OF YEARS IN THAT LINE

- 8] CONDENSED FINANCIAL INFORMATION**
(enclose balance sheets and profit and loss account for THREE years)

- 9] ACCOUNTING POLICIES**
(furnish description of significant accounting policies)

- 10] SYSTEMS AND PROCEDURES**
(furnish description of systems and procedures in the company and essential internal controls in order to carry on the business of the company)
- 11] NAMES OF THE ASSOCIATE ORGANISATIONS/GROUP COMPANIES/ SUBSIDIARIES, ETC.**
- 12] MANAGEMENT OF THE ASSET MANAGEMENT COMPANY**
Board of the asset management company with names, experience, qualification, profession of the Directors.
- Names of key personnel**
- Organisational structure**
- Board of Directors of associate organisations, companies and subsidiaries
- 13] NAMES AND ADDRESSES OF THE BANKERS OF THE ASSET MANAGEMENT COMPANY**
- 14] NAMES AND ADDRESSES OF THE AUDITORS OF THE ASSET MANAGEMENT COMPANY**
- 15] COURT CASES/LITIGATIONS IN WHICH THE ASSET MANAGEMENT COMPANY MAY HAVE BEEN INVOLVED IN THE LAST THREE YEARS**
- 16] INSTRUCTION FOR FILLING UP THE FORM**
(See Form A)

CONDENSED FINANCIAL INFORMATION

(A) INCOME STATEMENT

(Rs)

YEARS
 1 2 3 4 5

INCOME :
Dividend
Trading
Management fee
Other Income
Total
EXPENSES :
Director's remuneration
Trusteeship fees
Custodian fees
Registrar's fees
Other expenses
Total
Gross Profit
Depreciation
Net Profit before tax
Tax
Profit after tax
Dividends
Retained Earnings

(B) ASSETS AND LIABILITIES

	(Rs)				
	YEARS				
	1	2	3	4	5
ASSETS					
Fixed Assets					
Gross					
Depreciation					
Net value					
CURRENT ASSETS					
Investments*					
Others (please specify)					
Cash and bank balances					
LESS					
Current Liabilities and Provisions					
NET WORTH					
REPRESENTED BY :					
Issued and Paid up capital					
Free Reserves					
(b) (excluding revaluation reserves)					
TOTAL					

*provide full particulars of investments

SECOND SCHEDULE**SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA
(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996****[regulations 4, 9, 12, 28(2)]****FEES**

- | | | |
|-----|---|--------------------------------|
| I. | A. APPLICATION FEES PAYABLE BY MUTUAL FUNDS | Rupees Twenty-Five Thousand |
| | B. REGISTRATION FEES PAYABLE BY MUTUAL FUNDS | Rupees Twenty-Five lacs |
| | C. SERVICE FEES PAYABLE BY MUTUAL FUNDS | Rupees Two lacs Fifty-Thousand |
| | D. FILING FEES FOR OFFER DOCUMENT | Rupees Twenty-Five Thousand |
| II. | The fees referred to in clause I above, shall be paid by means of a bank draft payable to 'The Securities and Exchange Board of India' at Mumbai. | |

THIRD SCHEDULE

SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA
(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996

[regulations 15(1)]

CONTENTS OF THE TRUST DEED

The Trust Deed shall contain the following clauses namely :-

1. i) A trustee in carrying out his responsibilities as a member of the Board of Trustees or of trustee company, shall maintain arms' length relationship with other companies, or institutions or financial intermediaries or any body corporate with which he may be associated.
- ii) No trustee shall participate in the meetings of the Board of Trustees or trustee company when any decisions for investments in which he may be interested are taken.
- iii) All the trustees shall furnish to the board of trustees or trustee company particulars of interest which he may have in any other company, or institution or financial intermediary or any corporate by virtue of his position as director, partner or with which he may be associated in any other capacity.
2. Minimum number of trustees must be mentioned in the Trust Deed.
3. The Trust Deed must provide that the trustees shall take into their custody, or under their control all the property of the schemes of the mutual fund and hold it in trust for the unitholders.
4. The Trust Deed must specifically provide that unitholders would have beneficial interest in the trust property to the extent of individual holding in respective schemes; only.
5. The Trust Deed shall provide that it would be the duty of the trustees to act in the interest of the unit holders.
6. The Trust Deed shall provide that it is the duty of trustees to provide or cause to provide information to unitholders and Board as may be specified by the Board.

7. The Trust Deed shall provide that the trustees shall appoint an asset management company approved by the Board, to float schemes for the mutual fund after approval by the trustees and Board, and manage the funds mobilised under various schemes, in accordance with the provisions of the Trust Deed and Regulations. The trustees shall enter into an Investment Management Agreement with the asset management company for this purpose, and shall enclose the same with the Trust Deed.
 8. The Trust Deed shall provide for the duty of the trustee to take reasonable care to ensure that the funds under the schemes floated by and managed by the asset management company are in accordance with the Trust Deed and Regulations.
 9. The Trust Deed must provide for the power of the trustees to dismiss the asset management company under the specific events only with the approval of Board in accordance with the Regulations.
 10. The Trust Deed shall provide that the trustees shall appoint a custodian and shall be responsible for the supervision of its activities in relation to the mutual fund and shall enter into a Custodian Agreement with the custodian for this purpose.
 11. The Trust Deed shall provide that the auditor for the mutual fund shall be different from the Auditor of the asset management company.
 12. The Trust Deed shall provide for the responsibility of the trustees to supervise the collection of any income due to be paid to the scheme and for claiming any repayment of tax and holding any income received in trust for the holders in accordance with the Trust Deed, Regulations.
 13. Broad policies regarding allocation of payments to capital or income must be indicated in the Trust Deed.
 14. The Trust Deed shall also explicitly forbid the acquisition of any asset out of the trust property which involves the assumption of any liability which is unlimited or shall not result in encumbrance of the trust property in any way.
 15. The Trust Deed shall forbid the mutual fund and the asset management company, to make or guarantee loans or take up any activity not in contravention of the Regulations.
6. Trusteeship fee, if any, payable to trustees shall be provided in the Trust Deed.

17. The Trust Deed shall provide that no amendment to the Trust Deed shall be carried out without the prior approval of the Board and unitholders is obtained.

Provided however that in case a Board of trustees is converted into a trustee company subsequently such conversion shall not require the approval of unitholders.

18. The removal of the trustee in all cases would require the prior approval of the Board.
19. The Trust Deed shall lay down the procedure for seeking approval of the unitholders under such circumstances as are specified in the Regulations.

FOURTH SCHEDULE**SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA
(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996****[regulation 18(2)]****CONTENTS OF THE INVESTMENT MANAGEMENT AGREEMENT**

The Investment Management Agreement shall contain the following provisions for the duties and responsibilities of the asset management company namely:-

- i) the asset management company appointed by the trustees with the prior approval of the Board shall be responsible for floating schemes for the mutual fund after approval of the same by the trustees and managing the funds mobilised under various schemes, in accordance with the provisions of the Trust Deed and Regulations;
- ii) the asset management company shall not undertake any other business activity other than activities specified under Regulation 23 and management of mutual funds and such other activities as financial services consultancy, exchange of research and analysis on commercial basis as long as these are not in conflict with the fund management activity itself without the prior approval of the trustees and Board;
- iii) the asset management company shall invest the funds raised under various schemes in accordance with the provisions of the Trust Deed and the Regulations;
- iv) the asset management company shall not acquire any of the assets out of the scheme property which involves the assumption of any liability which is unlimited or which may result in encumbrance of the scheme property in any way;
- v) the asset management company shall not give or guarantee loans or take up any activity in contravention of the Regulations;
- vi) no loss or damage or expenses incurred by the asset management company or Officers of asset management company or any person delegated by the asset management company, shall be met out of the trust property;

- vii) the asset management company shall ensure that no application form, or sales literature or other printed matter issued to prospective buyers, or advertisement, or report and or announcement (other than an announcement of prices or yields) addressed to the general body of unitholders, or to the public, or to the press or other communications media, is issued or published without the trustees' prior approval in writing, and contains any statement or matter extraneous to the Trust Deed or Offer Document scheme particulars approved by the trustees and Board;
- viii) the asset management company shall disclose the basis of calculating the repurchase price and NAV of the various schemes of the fund in the scheme particulars and disclose the same to the investors at such intervals as may be specified by the trustees and Board;
- ix) the trustees shall have the right to obtain from the asset management company all information concerning the operations of the various schemes of the mutual fund managed by the asset management company at such intervals and in such a manner as required by the trustees to ensure that the asset management company is complying with the provisions of the Trust Deed, and Regulations;
- x) the asset management company shall submit quarterly report on the functioning of the schemes of the mutual fund to the trustees or at such intervals as may be required by the trustees or Board;
- xi) the trustee shall have the power to dismiss the asset management company under the specific events only with the approval of Board in accordance with the Regulations.

FIFTH SCHEDULE

SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA

(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996

[regulations 18(22), 25(16), 68(h)]

CODE OF CONDUCT

1. Mutual fund schemes should not be organised, operated, managed or the portfolio of securities selected, in the interest of sponsors, directors of asset management companies, members of Board of trustees or directors of trustee company, associated persons or in the interest of special class of unitholders rather than in the interest of all classes of unitholders of the scheme.
2. Trustees and asset management companies must ensure the dissemination to all unitholders of adequate, accurate, explicit and timely information fairly presented in a simple language about the investment policies, investment objectives, financial position and general affairs of the scheme.
3. Trustees and asset management companies should avoid excessive concentration of business with broking firms, affiliates and also excessive holding of units in a scheme among a few investors.
4. Trustees and asset management companies must avoid conflicts of interest in managing the affairs of the schemes and keep the interest of all unitholders paramount in all matters.
5. Trustees and asset management companies must ensure schemewise segregation of cash and securities accounts.
6. Trustees and asset management companies shall carry out the business and invest in accordance with the investment objectives stated in the offer documents and take investment decision solely in the interest of unitholders.
7. Trustees and asset management companies must not use any unethical means to sell; market or induce any investor to buy their schemes.

SIXTH SCHEDULE**SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA****(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996****[regulation 30(1)]****ADVERTISEMENT CODE**

1. An advertisement shall be truthful, fair and clear and shall not contain a statement, promise or forecast which is untrue or misleading.
2. An advertisement shall be considered to be misleading if it contains -
 - (a) Misleading Statements:- Representations made about the performance or activities of the mutual fund in the absence of necessary explanatory or qualifying statements, and which may give an exaggerated picture of the performance or activities, than what it really is.
 - (b) An inaccurate portrayal of a past performance or its portrayal in a manner which implies that past gains or income will be repeated in the future.
 - (c) Statements promising the benefits of owning units or investing in the schemes of the mutual funds without simultaneous mention of material risks associated with such investments.
3. The advertisement shall not be so designed in content and format or in print as to be likely to be misunderstood, or likely to disguise the significance of any statement. Advertisements shall not contain statements which directly or by implication or by omission may mislead the investor.
4. The sales literature may contain only information, the substance of which is included in the Funds' current advertisements in accordance with this Code.
5. Advertisements shall not be so framed as to exploit the lack of experience or knowledge of the investors. As the investors may not be sophisticated in legal or financial matters, care should be taken that the advertisement is set forth in a clear, concise, and understandable manner. Extensive use of technical or legal terminology or complex language and the inclusion of excessive details which may detract the investors should be avoided.
6. The advertisement shall not contain information, the accuracy of which is to any extent dependent on assumptions.
7. The advertisement shall not compare one fund with another, implicitly or explicitly, unless the comparison is fair and all information relevant to the comparison is included in the advertisement.

8. The Funds which advertises yield must use standardised computations such as annual dividend on face value, annual yield on the purchase price, and annual compounded rate of return.
9. Mutual funds shall indicate in all advertisements, the names of the Settlor, Trustee, Manager and or Financial Advisor to the Fund, bringing out clearly their legal status and liability of these entities, distinction between each of them, both legally and in terms of their functions, responsibilities and obligations.
10. All advertisements shall also make a clear statement to the effect that all mutual funds and securities investments are subject to market risks, and there can be no assurance that the fund's objectives will be achieved.
11. If however, in any Advertisement a mutual fund guarantees or assures any minimum rate of return or yield to prospective investors, resources to back such a guarantee shall also be indicated.
12. If any existing mutual fund indicates the past performance of the fund in advertisements, the basis for computing the rates of return/yield and adjustments made (if any) must be expressly indicated with a statement that, such information is not necessarily indicative of future results and may not necessarily provide a basis for comparison with other investments.
13. All advertisements issued by a mutual fund or its sponsor or asset management company, shall state "all investments in mutual funds and securities are subject to market risks and the NAV of the schemes may go up or down depending upon the factors and forces affecting the securities market."
14. All advertisement launched in connection with the scheme should also disclose prominently the risks factors as stated in the offer document alongwith the following warning statements :-
 - a) is only the name of the scheme and does not in any manner indicate either the quality of the scheme, its future prospects or returns; and,
 - b) please read the offer document before investing.
15. No name can be given to a scheme with a view to subtly indicate any assurance of return, except in the cases of guaranteed return scheme in accordance with regulation 38.

16. No advertisement shall be issued stating that the scheme has been subscribed or oversubscribed during the period the scheme is open for subscription.
17. If a corporate advertisement is issued by the sponsor or any of the companies in the Group, or an associate company of the sponsor during the subscription period, no reference shall be made to the scheme of the mutual fund or mutual fund itself; otherwise it will be treated as an issue advertisement.
18. If a corporate advertisement of a sponsor issued prior to the launch of a scheme makes a reference to the mutual fund sponsored by it or any of its schemes launched/to be launched, it shall contain a statement to the effect that the performance of the sponsor has no bearing on the expected performance of the mutual fund or any of its schemes.
19. Advertisements on the performance of a mutual fund or its Asset management company shall compare the past performances only on the basis of per unit of statistics as per this Regulations. Advertisements for NAVs must indicate the past as well as the latest NAV of a scheme. The yield calculations will be made as provided in these regulations.

SEVENTH SCHEDULE**SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA****(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996****[regulation 44(1)]****RESTRICTIONS ON INVESTMENTS**

1. Investment in debt instruments should be only in rated debt instruments not below investment grade rated by a credit rating agency authorised to carry such activity under the Act:

Provided that if the debt instrument is not rated, the specific approval of the Board of asset management company should be taken for investment.
2. No mutual fund under all its schemes should own more than ten per cent of any company's paid up capital carrying voting rights.
3. Transfers of investments from one scheme to another scheme in the same mutual fund shall be allowed only if, -
 - (a) such transfers are done at the prevailing market price for quoted instruments on spot basis.
 - (b) the securities so transferred shall be in conformity with the investment objective of the scheme to which such transfer has been made.
4. A scheme may invest in another scheme under the same asset management company or any other mutual fund without charging any fees, provided that aggregate interscheme investment made by all schemes under the same management or in schemes under the management of any other asset management company shall not exceed 5% of the net asset value of the mutual fund.
5. The initial issue expenses in respect of any scheme may not exceed six per cent of the funds raised under that scheme.
6. Every mutual fund shall buy and sell securities on the basis of deliveries and shall in all cases of purchases, take delivery of relative securities and in all cases of sale, deliver the securities and shall in no case put itself in a position whereby it has to make short sale or carry forward transaction or engage in badla finance.
7. Every mutual fund shall, get the securities purchased or transferred in the name of the mutual fund on account of the concerned scheme, wherever investments are intended to be of long term nature.

8. Pending deployment of funds of a scheme in securities in terms of investment objectives of the scheme a mutual fund can invest the funds of the scheme in short term deposits of scheduled commercial banks.

EIGHTH SCHEDULE**SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA
(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996****[regulation 47]****INVESTMENT VALUATION NORMS**

Mutual Fund shall value its investments according to the following valuation norms:

NAV of a scheme as determined by dividing the net assets of the scheme by the number of outstanding units on the valuation date.

1. Traded Securities :-
 - (i) The securities shall be valued at the last quoted closing price on the stock exchange.
 - (ii) When the securities are traded on more than one recognised stock exchange, the securities shall be valued at the last quoted closing price on the stock exchange where the security is principally traded. It would be left to the asset management company to select the appropriate stock exchange, but the reasons for the selection should be recorded in writing. There should however be no objection for all scrips being valued at the prices quoted on the stock exchange where a majority in value of the investments are principally traded.
 - (iii) Once a stock exchange has been selected for valuation of a particular security, reasons for change of the exchange shall be recorded in writing by the asset management company.
 - (iv) When on a particular valuation day, a security has not been traded on the selected stock exchange, the value at which it is traded on another stock exchange may be used.
 - (v) When a security is not traded on any stock exchange on a particular valuation day, the value at which it was traded on the selected stock exchange or any other stock exchange, as the case may be, on the earliest previous day may be used provided such date is not more than sixty days prior to the valuation date.
2. 'Non-traded Securities':-
 - (i) When a security is not traded on any stock exchange for a period of sixty days prior to the valuation date, the scrip must be treated as a 'non-traded' scrip.

- (ii) Non-traded securities shall be valued "in-good faith" by the asset management company on the basis of appropriate valuation methods based on the principles approved by the Board of the asset management company. Such decision of the Board must be documented in the Board minute and the supporting data in respect of each security so valued must be preserved. The methods used to arrive at values "in-good faith" shall be periodically reviewed by the trustees and reported upon by the auditors as "fair and reasonable" in their report on the annual accounts of the fund. For the purpose of valuation of non-traded securities, the following principles should be adopted:-
- (a) equity instruments shall generally be valued on the basis of capitalization of earnings solely or in combination with the net asset value, using for the purposes of capitalization, the price or earning ratios of comparable traded securities and with an appropriate discount for lower liquidity;
 - (b) debt instruments shall generally be valued on a yield to maturity basis, the capitalization factor being determined for comparable traded securities and with an appropriate discount for lower liquidity;
 - (c) money market instruments may be valued on the basis of quotations obtained from more than one dealer or broker;
 - (d) In respect of convertible debentures and bonds, the non-convertible and convertible components shall be valued separately. The non-convertible component should be valued on the same basis as would be applicable to a debt instrument. The convertible component should be valued on the same basis as would be applicable to an equity instrument. If, after conversion the resultant equity instrument would be traded pari passu with an existing instrument which is traded, the value of the latter instrument can be adopted after an appropriate discount for the non-tradability of the instrument during the period preceding the conversion. While valuing such instruments, the fact whether the conversion is optional should also be factored in;
 - (e) In respect of warrants to subscribe for shares attached to instruments, the warrants can be valued at the value of the share which would be obtained on exercise of the warrant as reduced by the amount which would be payable on exercise of the warrant. A discount similar to the discount to be determined in respect of convertible debentures (as referred to in sub-paragraph (d) above) must be deducted to account for the period which must elapse before the warrant can be exercised;
 - (f) Where instruments have been bought on 'repo' basis, the instrument must be valued at the resale price after deduction of applicable interest upto date of resale. Where an instrument has been sold on a 'repo' basis, adjustment must be made for the difference between the repurchase price (after deduction of applicable interest upto date of repurchase) and the value of the instrument. If the repurchase price exceeds the value, the depreciation must be provided for and if the repurchase price is lower than the value, credit must be taken for the appreciation.

3. Until they are traded, the value of the "rights" shares should be calculated as:

$$V_r = \frac{n}{m} \times (P_{ex} - P_{of})$$

Where

V_r	=	Value of rights
n	=	no. of rights offered
m	=	no. of original shares held
P_{ex}	=	Ex-rights price
P_{of}	=	Rights Offer Price

Where the rights are not treated pari-passu with the existing shares, suitable adjustment should be made to the value of rights. Where it is decided not to subscribe for the rights but to renounce them and renunciations are being traded, the rights can be valued at the renunciation value.

4. All expenses and incomes accrued upto the valuation date shall be considered for computation of net asset value. For this purpose, while major expenses like management fees and other periodic expenses should be accrued on a day to day basis, other minor expenses and income need not be so accrued, provided the non-accrual does not affect the NAV calculations by more than 1%.
5. Any changes in securities and in the number of units be recorded in the books not later than the first valuation date following the date of transaction. If this is not possible given the frequency of the Net Asset Value disclosure, the recording may be delayed upto a period of seven days following the date of the transaction, provided that as a result of the non-recording, the Net Asset Value calculations shall not be affected by more than 2%.

NINTH SCHEDULE**SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA
(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996**

[regulations 50(3), 55(4)(iii)]

ACCOUNTING POLICIES AND STANDARDS

- a. For the purposes of the financial statements, mutual fund shall mark all investments to market and carry investments in the balance sheet at market value. However, since the unrealised gain arising out of appreciation on investments cannot be distributed, provision has to be made for exclusion of this item when arriving at distributable income.
- b. Dividend income earned by a scheme should be recognised, not on the date the dividend is declared, but on the date the share is quoted on an ex-dividend basis. For investments which are not quoted on the stock exchange, dividend income must be recognised on the date of declaration.
- c. In respect of all interest-bearing investments, income must be accrued on a day to day basis as it is earned. Therefore when such investments are purchased, interest paid for the period from the last interest due date upto the date of purchase must not be treated as a cost of purchase but must be debited to Interest Recoverable Account. Similarly, interest received at the time of sale for the period from the last interest due date upto the date of sale must not be treated as an addition to sale value but must be credited to Interest Recoverable Account.
- d. In determining the holding cost of investments and the gains or loss on sale of investments, the "average cost" method must be followed.
- e. Transactions for purchase or sale of investments should be recognised as of the trade date and not as of the settlement date, so that the effect of all investments traded during a financial year are recorded and reflected in the financial statements for that year. Where investment transactions take place outside the stock market, for example, acquisitions through private placement or purchases or sales through private treaty, the transaction should be recorded, in the event of a purchase, as of the date on which the scheme obtains an enforceable obligation to pay the price or, in the event of a sale, when the scheme obtains an enforceable right to collect the proceeds of sale or an enforceable obligation to deliver the instruments sold.

- f. Bonus shares to which the scheme becomes entitled should be recognised only when the original shares on which the bonus entitlement accrues are traded on the stock exchange on an ex-bonus basis. Similarly, rights entitlements should be recognised only when the original shares on which the right entitlement accrues are traded on the stock exchange on an ex-rights basis.
- g. Where income receivable on investments has been accrued and has not been received for a period of 12 months beyond the due date, provision should be made by debit to the revenue account for the income so accrued and no further accrual of income should be made in respect of such investment.
- h. When in the case of an open-ended scheme units are sold, the difference between the sale price and the face value of the unit, if positive, should be credited to reserves and if negative is debited to reserve, the face value being credited to Capital Account. Similarly, when in respect of such a scheme, units are repurchased, the difference between the purchase price and face value of the unit, if positive should be debited to reserves and, if negative, should be credited to reserves, the face value being debited to the capital account.
- i. In the case of an open-ended scheme, when units are sold an appropriate part of the sale proceeds should be credited to an Equalisation Account and when units are repurchased an appropriate amount should be debited to Equalisation Account. The net balance on this account should be credited or debited to the Revenue Account. The balance on the Equalisation Account debited or credited to the Revenue Account should not decrease or increase the net income of the fund but is only an adjustment to the distributable surplus. It should therefore be reflected in the Revenue Account only after the net income of the fund is determined.
- j. In a close-ended scheme which provide to the unit holders the option for an early redemption or repurchase their own units, the par value of the unit has to be credited to Capital Account and the difference between the purchase price and the par value, if positive, should be debited to reserves and, if negative, should be credited to reserves. A proportionate part of the unamortized initial issue expenses should also be transferred to the reserves so that the balance carried forward on that account is proportional to the number of units remaining outstanding.
- k. The cost of investments acquired or purchased should include brokerage, stamp charges and any charge customarily included in the broker's bought note. In respect of privately placed debt instruments any front-end discount offered should be reduced from the cost of the investment.
- l. Underwriting commission should be recognised as revenue only when there is no devolvement on the scheme. Where there is devolvement on the scheme, the full underwriting commission received and not merely the portion applicable to the devolvement should be reduced from the cost of the investment.

TENTH SCHEDULE

SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA (MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996 [regulation 52(5)]

INITIAL ISSUE EXPENSES

Accounting treatment with regard to initial issue expenses:-

- (a) Asset management companies may launch schemes either on a "load" or "no-load basis", or on a mixed basis with two classes of units in the same scheme—one with load and the other without load, provided that the implications of such load on the NAV for the investors shall be clearly explained through a worked-out example in the offer document. Asset Management Company may also launch "partial load" schemes in which a part of the load would be borne by the asset management companies and the balance by the scheme. However such schemes will not qualify to be "no load" schemes and would be treated in the same manner as "load" schemes. In case of a no load scheme, the initial issue expenditure shall be borne by the Asset Management Company.
- (b) For a closed-ended scheme floated on a 'load' basis, the initial issue expenses shall be amortised on a weekly basis over the period of the scheme.

Provided that in case the schemes provides for partial redemption during the life of the scheme, the amortisation shall take into account the number of outstanding units and the aggregate amount during the relevant periods.

- (c) For open-ended schemes floated on a 'load' basis, the initial issue expenses may be amortised over a period not exceeding five years. Issue expenses incurred during the life of an open-ended schemes shall not be amortised.
- (d) In case of closed-ended and open-ended schemes floated on a 'load' basis, the unamortised portion of the expenses shall be included in the calculation of the NAV. However, such portion shall not be included in the NAV for the purposes of determining the asset management company's investment management and advisory fees or for determining the limitation of expenses under regulation 51 of these regulations.
- (e) For schemes floated on a 'no-load' basis, the asset management company may levy an additional management fee not exceeding 1% of the NAV. The asset management company may be entitled to levy a contingent deferred sales charge for redemption during the first four years after purchase, not exceeding 4% of the redemption proceeds in the first year, 3% in the second year, 2% in the third year and 1% in the fourth year.
- (f) All subsequent distribution charges must in the case of load schemes shall be borne by the scheme and in the case of no-load schemes borne by the asset management company.

ELEVENTH SCHEDULE**SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA****(MUTUAL FUND) REGULATIONS, 1993****[regulations 54, 56(2)]****ANNUAL REPORT****1. Annual Report**

The annual report shall contain -

- (i) Report of the Board of Trustees on the operations of the various schemes of the fund and the fund as a whole during the year and the future outlook of the fund;
- (ii) Balance Sheet and Revenue Account in accordance with paras 2, 3 and 4 respectively of this schedule;
- (iii) Auditor's Report in accordance with the paragraph 5 of this Schedule;
- (iv) Brief statement of the Board of Trustees on the following aspects, namely:-
 - (a) Liabilities and responsibilities of the Trustees and the Settlor;
 - (b) Investment objective of each scheme;
 - (c) Basis and policy of investment underlying the scheme;
 - (d) If the scheme permits investment partly or wholly in shares, bonds, debentures and other scrips or securities whose value can fluctuate, a statement on the following lines:

"The price and redemption value of the units, and income from them, can go up as well as down with the fluctuations in the market value of its underlying investments;"

- (e) Comments of the Trustees on the performance of the scheme, with full justification.
- (v) Statement giving relevant perspective historical 'per unit' statistics in accordance with paragraph 6 of this schedule;
- (vi) Statement on the following lines:
"On written request, present and prospective unit holder / investors can obtain copy of the trust deed, the annual report and the text of the relevant scheme."

2. Following accounting policies shall be followed by Mutual Funds for the preparation of accounts :

- i. The realised gains or losses on sale or redemption of investment, as well as unrealised appreciation or depreciation shall be recognised in all financial statements. For the purpose of all financial statements, all investments shall be marked to market and investments shall be carried out in the balance sheet at market value. However, till necessary guidance notes are issued by the Institute of Chartered Accountants of India to their members, in the above matter, investments may be continued to be valued at cost, with the market value shown separately and the reconciliation statement for the changes in investments valued in the two different ways ,shall be provided.

Where the financial statement are prepared on a marked to market basis, there need not be a separate provision for depreciation. Since unrealised gain arising out of appreciation on investments cannot be distributed, provision has to be made for its exclusion and for calculating distributable income.

- ii. Non-traded investments shall be valued in good faith in accordance with the norms specified in Seventh Schedule.
- iii. For quoted shares, the dividend income earned by a scheme shall be recognised, not on the date the dividend is declared, but on the date the share is quoted on an ex-dividend basis. For investments in shares which are not quoted on the stock exchanges, the dividend income must be recognised on the date of declaration.
- iv. In respect of all interest-bearing investments, income shall be accrued on a day to day basis as it is earned. Therefore when such investments are purchased, interest paid for the period from the last interest due date upto the date of purchase, shall not be treated as a cost of purchase, but shall be treated to Interest Recoverable Account. Similarly, interest received at the time of sale for the period from the last interest due date upto the date of sale must not be treated as an addition to sale value but shall be credited to Interest Recoverable Account.
- v. In determining the holding cost of investments and the gains or loss on sale of investments, the "average cost" method shall be followed.
- vi. Transactions for purchase or sale of investments shall be recognised as of the trade date and not as of the settlement date, so that the effect of all investments traded during a financial year are recorded and reflected in the financial statements for that year. Where investment transactions take place outside the stock market, for example, acquisitions through private placement or purchases or sales through private treaty, the transaction shall be recorded, in the event of a purchase, as of the date on which the scheme obtains an enforceable obligation to pay the price or, in the event of a sale, when the scheme obtains an enforceable right to collect the proceeds of sale or an enforceable obligation to deliver the instruments sold.

- vii. Bonus shares to which the scheme becomes entitled shall be recognised only when the original shares on which the bonus entitlement accrues are traded on the stock exchange on an ex-bonus basis. Similarly, rights entitlements shall be recognised only when the original shares on which the right entitlement accrues are traded on the stock exchange on an ex-rights basis.
- viii. Where income receivable on investments has been accrued and has not been received for a period of 12 months beyond the due date, provision shall be made by debit to the revenue account for the income so accrued and no further accrual of income should be made in respect of such investment.
- ix. When the units of an open-ended scheme are sold, the difference between the sale price and the face value of the unit, if positive, shall be credited to Reserves and if negative is debited to reserve, the face value being credited to Capital Account. Similarly, when units of an open-ended scheme are repurchased, the difference between the purchase price and face value of the unit, if positive should be debited to Reserves and, if negative, should be credited to reserves, the face value being debited to the Capital account.
- x.a) In the case of an open-ended scheme, when units are sold an appropriate part of the sale proceeds shall be credited to an Equalisation Account and when units are repurchased an appropriate amount shall be debited to Equalisation Account. The net balance on this account should be credited or debited to the Revenue Account. The balance on the Equalisation Account debited or credited to the Revenue Account shall not decrease or increase the net income of the fund but is only an adjustment to the distributable surplus. It shall therefore be reflected in the Revenue Account only after the net income of the fund is determined.
- b) The Trustees or the Board of the Trustee Company may, if necessary, transfer a portion of the distributable profits to a dividend equalisation reserve. Such a transfer would be independent of the requirement to operate an Equalisation Account as provided in (x)(a).
- xi. In a close-ended scheme which provide to the unit holders the option for an early redemption or repurchase their own units, the par value of the unit shall be credited to Capital Account and the difference between the purchase price and the par value, if positive, should be debited to reserves and, if negative, should be credited to reserves. A proportionate part of the unamortized initial issue expenses shall also be transferred to the reserves so that the balance carried forward on that account is proportional to the number of units remaining outstanding.
- xii. The cost of investments acquired or purchased shall include brokerage, stamp charges and any charge customarily included in the broker's bought note. In respect of privately placed debt instruments any front-end discount offered shall be reduced from the cost of the investment.

- xiii. Underwriting commission shall be recognised as revenue only when there is no devolvement on the scheme. Where there is devolvement on the scheme, the full underwriting commission received and not merely the portion applicable to the devolvement shall be reduced from the cost of the investment.

3. Contents of Balance Sheet

- (i) The Balance Sheet shall give schemewise particulars of its assets and liabilities. These particulars shall contain information enumerated in Annexures 1A and 1B hereto. It shall also disclose, inter-alia, accounting policies relating to valuation of investments and other important areas.
- (ii) If investments are carried at costs or written down cost, their aggregate market value shall be stated separately in respect of each type of investment, such as equity shares, preference shares, convertible debentures listed on recognised stock exchange, non-convertible debentures or bonds further differentiating between those listed on recognised stock exchange and those privately placed.
- (iii) The Balance Sheet shall disclose under each type of investment the aggregate carrying value and market value of non-performing investments. An investment shall be regarded as non-performing if it has provided no returns in the form of dividend or interest for more than 2 years as at the end of the accounting year of the mutual fund. However, disclosure of such non-performing investments shall not be necessary if all investments are valued at marked to market.
- (iv) The Balance Sheet shall indicate the extent of provision made in the Revenue Account for the depreciation/loss in the value of non-performing investments. However, if the investments are valued at market to market, provisions for depreciation shall not be necessary.
- (v) The Balance Sheet shall disclose the per-unit net-asset value (NAV) as at the end of the accounting year.
- (vi) As in case of companies, the Balance Sheet shall give against each item, the corresponding figures as at the end of the preceding accounting year.
- (vii) The notes to the balance sheet should disclose the following information regarding investments :-
 - a) All investments shall be grouped under the major classification given in the balance sheet.
 - b) Under each major classification, the total value of investments falling under each major industry group (which constitutes not less than 5% of the total investment in the major classification) shall be disclosed together with the percentage thereof in relation to the total investment within the classification.

- c) Where an individual investment constitutes more than 2% of the total investments in the major classification, individual disclosure shall be made of such investment.
- d) A full list of investments of the scheme shall be made available for inspection with the Asset Management Company.
- e) the basis on which management fees have been paid to the Asset Management Company and the computation thereof.
- f) if brokerage, custodial fees or any other payment for services are paid to or payable to any entity in which the Asset Management Company or its major shareholders have a substantial interest (being not less than 10% of the equity capital), the amounts debited to the revenue account or amounts treated as cost of investment in respect of such services shall be separately disclosed together with details of the interest of the Asset Management Company or its major shareholders;
- g) aggregate value of purchases and sales of investments during the year and expressed as a percentage of average weekly net asset value;
- h) where the non traded investments which have been valued "in good faith" exceed 5% of the NAV at the end of the year, the aggregate value of such investments; and
- i) movement in unit capital should be stated.

An example of the manner in which the movement in unit capital may be disclosed is given below :-

	<u>No of units</u>	<u>(Rs in lakhs)</u>
Balance as on 1st April 1994	1250,00,000	12500.00
Units sold during the year	127,50,000	1275.00
Units repurchased during the year	(15,40,000)	(154.00)
	<u>1362,10,000</u>	<u>13621.00</u>

- j) if the investments are marked to market, the total income of the scheme shall include unrealised depreciation or appreciation on investment. There should be disclosure and unrealised appreciation deducted before arriving at the distributable income in the following manner. e.g.

	Rs lakh	Rs lakh
Net Income as per Revenue Account	100	
Add : Balance of undistributed income as at 1st April 1994 brought forward	20	

	120	
 Less : Unrealised appreciation on investments		
As on 31st March 1995	30	
As on 1st April 1994	15	(15)

	105	
 Less : Distributed to unit holders	80	
Transfer to reserve	5	(85)

	20	

- viii. Provisions for doubtful deposits, doubtful debts and for doubtful outstanding and accrued income shall not be included under provisions on the liability side of the balance sheet, but shall be shown as a deduction from the aggregate value of its relevant asset.
- ix. Disclosure shall be made of all contingent liabilities showing separately underwriting commitments, uncalled liability on partly paid shares and other commitments with specifying details.

4. Contents of Revenue Account

- (i) The Revenue Account shall give schemewise particulars of the income, expenditure and surplus of the mutual fund. These particulars shall contain information enumerated in Annexure 2 of this schedule.
- (ii) If profit on sale of investments shown in the Revenue Account includes profit / loss on inter-scheme transfer of investments within the same mutual fund the aggregate of such profit recognised as realised, shall be disclosed separately without being clubbed with the profit / loss on sale of investments to third parties.

- (iii) Unprovided depreciation in value of investments representing the difference between their aggregate market value and their carrying cost shall be disclosed by way of a note forming part of the Revenue Account. Conversely, unrealised profit on investment representing the difference between their aggregate market value and carrying cost, shall be disclosed by way of note to accounts. The Revenue Account shall indicate the appropriation of surplus by way of transfer to reserves and dividend distributed. However, if investments are marked to market, depreciation may not be provided.
- (iv) The Revenue Account shall indicate the appropriation of surplus by way of transfer to reserves and dividend distributed.
- (v) The following disclosures shall also be made in the revenue accounts :
 - (a) provision for aggregate value of doubtful deposits, debts and outstanding and accrued income;
 - (b) profit or loss in sale and redemption of investment may be shown on a net basis;
 - (c) custodian and registrar fees;
 - (d) total income and expenditure expressed as a percentage of average net assets, calculated on a weekly basis.

5. Auditor's Report

- (i) All mutual funds shall be required to get their accounts audited in terms of a provision to that effect in their trust deeds. The Auditor's Report shall form a part of the Annual Report. It should accompany the Abridged Balance Sheet and Revenue Account. The auditor shall report to the Board of Trustees and not to the unit holders.
- (ii) The auditor shall state whether:
 1. he has obtained all information and explanations which, to the best of his knowledge and belief, were necessary for the purpose of his audit.
 2. the Balance Sheet and the Revenue Account are in agreement with the books of account of the fund.
- (iii) The auditor shall give his opinion as to whether:
 1. The Balance Sheet gives a true and fair view of the schemewise state of affairs of the fund as at the balance sheet date, and
 2. the Revenue Account gives a true and fair view of the schemewise surplus / deficit of the fund for the year / period ended at the balance sheet date.

6. Perspective Historical per Unit Statistics

1. This statement shall disclose the following schemewise per unit statistics for the past 3 years:
 - (a) net assets value, per unit;
 - (b) gross income per-unit broken up into the following components:
 - (i) income other than profit on sale of investment, per unit;
 - (ii) income from profit on inter scheme sales / transfer of investment, per unit;
 - (iii) income from profit on sale of investment to third party, per unit;
 - (iv) transfer to revenue account from past year's reserve per unit.
 - (c) aggregate of expenses, write off, amortisation and charges, per-unit;
 - (d) net income, per unit;
 - (e) unrealised appreciation / depreciation in value of investments, per unit;
 - (f) if the units are traded or repurchased / resold, the highest and the lowest prices per unit during the year and the price-earning ratio.
 - (g) Per unit, ratio of expenses to average net assets by percentage;
 - (h) Per unit, ratio of gross income to average net assets by percentage (excluding transfer to revenue account from past year's reserve but including unrealised appreciation on investments)
 - (i) per unit NAV

ANNEXURE 1A
(refer para 3)

CONTENTS OF SCHEMEWISE BALANCE SHEET

ASSETS SIDE OF THE BALANCE SHEET:

I. The assets of the balance sheet shall be grouped into the following categories:

- Investment
- Deposits
- Other Current Assets
- Fixed Assets
- Deferred Revenue Expenditure

II. INVESTMENTS:

The following types of investments shall be separately disclosed :

- (i) Equity shares;
 - (ii) Preference shares;
 - (iii) Privately placed debentures / bonds;
 - (iv) Debentures and Bonds listed / awaiting listing on the recognised stock exchange;
 - (v) Calls paid in advance;
 - (vi) Term Loans;
 - (vii) Central & State Government Securities (including treasury bills);
 - (viii) Commercial Paper;
 - (ix) Others;
- Accounting policy of valuation of investments shall be disclosed.

III. DEPOSITS

Distinguishing between:

- Deposits with schedule banks;
- Deposits with Companies / Institutions;
- Others;

IV. OTHER CURRENT ASSETS

Distinguishing between:

- Balances with banks in current account;
- Cash on hand;
- Sundry Debtors;
- Contracts for sale of investments;
- Outstanding and accrued income;
- Advance, Deposits, etc.;
- Bridge Finance;
- Shares / debentures application money, pending allotment;
- Others;

V. FIXED ASSETS

- Depreciated cost of the fixed asset as a whole or net block may be disclosed.

VI. DEFERRED REVENUE EXPENDITURE

- Distinguishing between opening balance, amount written-off during the year, amount deferred to subsequent years.
- Accounting policy on treatment of expenses as deferred revenue expenditure and their write-off shall be disclosed.

ANNEXURE 1B
(refer para 3)
CONTENTS OF SCHEMEWISE BALANCE SHEET

LIABILITIES SIDE OF THE BALANCE SHEET

Liabilities side of the balance sheet be divided into the following groups:

- (i) Unit Capital;
- (ii) Reserves & Surplus;
- (iii) Loans;
- (iv) Current Liabilities and Provisions;

II. UNIT CAPITAL:

Distinguishing between:

- Initial capital;
- Unit capital (including number of units and face value per-unit)

III. RESERVES & SURPLUS

Distinguishing between:

- Unit premium reserve;] (optional)
- General reserve;]
- Dividend equalisation reserve; (optional)(Equalisation Account, as per 2(x) of the Schedule);
- Any other reserve (disclosing its nature);
- Appropriation account;
- Opening balance, transfer from / to reserve, closing balance shall be separately disclosed for each above type of reserve.

IV. LOANS

Distinguishing between

- Loan from Reserve Bank of India;
- From Settlor;
- From Other Commercial Banks;
- From others;
- If the above loans are secured, the nature and extent of security should be disclosed;
- Borrowings by the scheme with amount, rate of borrowings, rate of interest, source and other terms shown separately, source-wise;

V. CURRENT LIABILITIES AND PROVISIONS

Distinguishing between the following current liabilities and provisions

CURRENT LIABILITIES:

- Sundry creditors;
- Interest payable on loans;
- Contract for purchase of investments;
- Bank account overdrawn as per books;
- Unclaimed distributed income;
- Others;

PROVISIONS:

- Provision for loss / depreciation in value of investments (separately with reference to each type of investment) (optional, if marked to market);
- Provision for doubtful deposits;
- Provision for outstanding and accrued income considered doubtful;
- Provision for gratuity;
- Provision for staff welfare fund;
- Proposed income distributed on initial capital and unit-capital;
- Other provisions;

VI. CONTINGENT LIABILITIES

- Disclosure should be made of all contingent liabilities, showing separately :-
 - i) Underwriting Commitments;
 - ii) Uncalled liability on partly paid shares;
 - iii) Other commitments; and
 - iv) Others (specifying details)

ANNEXURE 2B
(refer para 3)
CONTENTS OF REVENUE ACCOUNT

- Dividend;
- Interest;
- Profit on sale / redemption of investments (other than inter scheme transfer / sale);
- Profit on inter-scheme transfer / sale of investments;
- Other income (indicating nature);

EXPENSES AND LOSSES:

- Provision for depreciation in value of investments;
 - Provision for outstanding accrued income considered doubtful; Provision for doubtful deposits and current assets;
 - Loss on sale/ redemption of investments (other than inter-scheme transfer / sale);
 - Loss on inter-scheme transfer / sale of investments;
 - Management fees;
 - Trusteeship fees;
 - Staff cost including salaries, allowances, contributions to provident Fund, Gratuity, etc.;
 - Office and administrative expenses;
 - Registration and local charges;
 - Commission to Agents;
 - Publicity expenses;
 - Audit fees;
 - Other operating expenses;
 - Deferred revenue expenses written off;
 - Depreciation of fixed assets;
 - Custodian Fees
 - Registration fees
- Less:** Amount recovered on sale of units on account of management expenses;

NOTE:

- (i) Accounting policy in respect of recognition of revenue and income from investments (including dividend and interest) shall be disclosed by way of a note.
- (ii) Unprovided depreciation and unrealised appreciation in value of investments representing the difference between their aggregate market value and their carrying cost shall be disclosed by way of note.
- (iii) Provision for doubtful deposits, debts and outstanding accrued income need not be separately shown but can be aggregated.

- (iv) Profit on sale/redemption of investments and loss on sale/redemption of investments need not be shown on a gross basis but only the net profit or loss need be shown.
- (v) The total income and expenditure expressed as a percentage of average net assets, calculated on a weekly basis should be indicated.
- (vi) Appropriation of the surplus by way of transfer to reserves and dividends distributed shall be disclosed in the Abridged Revenue Account itself.
- (vii) The Balance Sheet and the Revenue Account shall be signed by the scheme-wise fund manager/s and the Board of Trustees, and reported upon by the Auditors. The financial statements of the scheme should be approved at a meeting of the Board of Directors of the Asset Management Company and also at a meeting of the trustees or in the case of a trustee company by the Board of Directors of the trustee company.

TWELFTH SCHEDULE
SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA
(MUTUAL FUNDS) REGULATIONS, 1996
[regulation 59]
HALF YEARLY FINANCIAL RESULTS

A) CONTENTS OF SUMMARY ADVERTISEMENT OF ABRIDGED REVENUE ACCOUNT

MUTUAL FUND

REVENUE ACCOUNT FOR THE YEAR/PERIOD ENDED _____
(Rupees in lakhs)

1. INCOME	CURRENT YEAR	PREVIOUS YEAR	CURRENT YEAR	PREVIOUS YEAR	CURRENT YEAR	PREVIOUS YEAR
-----------	-----------------	------------------	-----------------	------------------	-----------------	------------------

- 1.1 Dividend
- 1.2 Interest
- 1.3 Profit on sale/redemption of investments (other than inter-scheme transfer/sale);
- 1.4 Profit on inter-scheme transfer/sale of investments
- 1.5 Other income (indicating nature)

2. EXPENSES & LOSSES

- 2.1 Management, trusteeship, Administrative & other Operating Expenses
- 2.2 Provision for Doubtful Income
- 2.3 Provision for Doubtful Deposits/ Current Assets
- 2.4 Loss on sale/redemption of investments (other than inter-scheme transfer/sale)
- 2.5 Loss on inter-scheme transfer/sale of investments

TOTAL

**B) CONTENTS OF SUMMARY ADVERTISEMENT OF ABRIDGED BALANCE SHEET
MUTUAL FUND**

**BALANCE SHEET OF _____ AT _____
NAMES OF THE VARIOUS SCHEMES**

(RUPEES IN LAKHS)

LIABILITIES	Current Year	Previous Year	Current Year	Previous Year	Current Year	Previous Year
1. Unit Capital						
2. Reserves & Surplus						
2.1 Unit Premium Reserves						
2.2 Other Reserves						
3. Loans & Borrowings						
3.1 From Banks						
3.2 From Others						
4. Current Liabilities & Provisions						
4.1 Provision for doubtful Income/ Deposits;						
4.2 Proposed Income Distribution						

**4.3. Other Current Liabilities &
Provisions**

ASSETS	RUPEES IN LAKHS						TOTAL
	Current Year	Previous Year	Current Year	Previous Year	Current Year	Previous Year	
1. Investments*							
1.1 Equity & Preference Shares							
1.2 Privately Placed Debentures/ Bonds							
1.3 Debentures & Bonds Listed/Awaiting Listing on Recognised Stock Exchange							
1.4 Term Loans							
1.5 Government Securities							
1.6 Others							
2. Deposits							

- 2.1 With Scheduled Banks
- 2.2 With Others
- 3. Other Current Assets
 - 3.1 Cash & Bank Balance
 - 3.2 Others
- 4. Fixed Assets
 - (At Depreciated Value)
- 5. Deferred Revenue Expenditure
 - (to the extent not written off)

TOTAL

Note * : 1. Accounting Policy of valuation of investments should be disclosed.

**C) OTHER CONTENTS OF ADVERTISEMENT
OF ABRIDGED FINANCIAL RESULTS**

1. Auditors Report
2. Perspective Historical Per Unit Statistics disclosing the following scheme wise per unit information for past eight years :
 - (a) net assets value, per unit ;
 - (b) gross income per-unit broken up into the following components:
 - (i) income other than profit on sale of investment, per unit;
 - (ii) income from profit on inter scheme sales / transfer of investment, per unit;
 - (iii) income from profit on sale of investment to third party, per unit;
 - (iv) transfer to revenue account from past years' reserve, per unit;
 - (c) aggregate of expenses, write off, amortisation and charges, per-unit; indicating separately provision for depreciation in value of investments, per unit;
 - (d) net income, per unit;
 - (e) if the units are traded or repurchased / resold, the highest and the lowest prices per-unit during the year and the price-earning ratio;
3. A note to the effect that, on request, a unit-holder can obtain from the mutual fund a copy of the Annual Report of the scheme in which he has invested.